॥ श्रीः ॥

भक्तवर सूरदास कृत—

सूर रामायण

सत्यजीवन वर्म्मा एम० ए०

द्वारा सम्पादित

दुर्गाप्रसाद खत्री

प्रोप्राइटर लहरी बुकडिपो, द्वारा

[प्रकाशित:

[इस ग्रन्थ का कुल अधिकार प्रकाशक को है]

प्रथम बार] १९२५ [मूल्य ।≠)

दुर्गा प्रसाद खत्री द्वारा—लहरी प्रेस, काशी में मुद्रित।

समर्पण

प्रातः स्मरणीय पूजनीय स्वर्गीय पिता—

श्री बाबू जगन्मोहन बर्म्मा

के

चरण कमलों में

समर्पित

'सत्य'

वक्तव्य

गत वर्ष जब मैं हिन्दू विश्वविद्यालय के एम० ए० की हिन्दी परीक्षा के लिये तय्यारी कर रहा था उस समय मुझे सूरदास कृत सूरसागर देखने की आवश्यकता पड़ी। सूरसागर का पर्यावलोकन करते समय मेरा ध्यान सूर के उन पदों पर गया, जो रामचरित्र से सम्बन्ध रखते थे। मैंने अपने पिता स्वर्गीय श्रध्येय बाबू जगन्मोहन बर्म्मा से यह बात कही। उन्होंने मुझे राय दी कि यदि "तुम इन्हें एकत्र कर लो तो वे बड़े काम के होंगे, और यदि उनका टिप्पणी सहित एक संग्रह 'सूररामायण' के नाम से प्रकाशित हो तो इन्ट्रेंस और एफ०ए० के छात्रों के विशेष काम का हो।" मैंने उन्हीं के आदेशानुसार इनका संग्रह किया और उन पर यथोचित नोट भी दे डाले। उनकी असामयिक मृत्यु के पश्चात मैंने निश्चय किया कि यह संग्रह किसी प्रकार प्रकाशित हो जाय। मेरे मित्र तथा सहपाठी बाबू परमानन्द खत्री एम. ए. ने इसे छपवानेकी इच्छा प्रगट की। मैंने इसमें अपनी योग्यतानुसार नोट इत्यादि देकर उन्हें प्रकाशित करने को दे दिया। आशा है कि मेरा यह प्रथम प्रयास पाठकों के काम का होगा।

काशी
५-मई-१६२५

विनीतः—
सत्यजीवन वर्मा।

विषय सूची

(१)	भूमिका	
(२)	प्रस्तावना	१
(३)	बालकाण्ड	२
(४)	अयोध्याकाण्ड	६
(५)	आरण्यकाण्ड	२१
(६)	किष्किन्धाकाण्ड	२७
(७)	सुन्दरकाण्ड	३०
(८)	लंकाकाण्ड	५८
(९)	उत्तरकाण्ड	८१
(१०)	बंदना	८४

भूमिका

'सूर-रामायण' महात्मा सूरदास के रामचरित्र विषयक पदों का संग्रह है। महात्मा सूरदास का नाम 'सूरसागर' से अमर है। आप का जन्म सं १५४० (सन् १४८३) में माना जाता है। आप लगभग ८० वर्ष की आयु को प्राप्त हुए, अतः आप का मरण काल संवत १६२० (सन् १५६३) में माना जाता है। सूरदास जी महात्मा महाप्रभु वल्लभाचार्य्य के शिष्य थे। आप की गणना 'अष्टछाप' या ब्रज के आठ महाकवियों में थी। अष्टछाप में कुंभनदास, परमानंददास, कृष्णदास, छीत स्वामी, चतुर्भुजदास, नंदनदास, गोविंद स्वामी और सूरदास ये आठ महाकवि थे। आप किस वंश के थे इसका ठीक पता नहीं है। कुछ लोग आप को 'जगातवंशी' मानते हैं और कहते हैं कि आप महाकवि चन्दबरदाई के वंश में हुए थे। चन्दबरदाई 'भाट' थे। अतः सूरदास भी 'भाट' हुए।

गोस्वामी गोकुल नाथ कृत 'चौरासी वैष्णवों की वार्ता' में सूरदास को भाट नहीं लिखा है। गोस्वामी गोकुलनाथ सूरदास के समकालीन थे, ऐसा सिद्ध होता है। कहते हैं कि सूरदास सारस्वत ब्राह्मण थे। आप के पिता का नाम रामदास था। आगरा के समीप 'रूनकता-ग्राम' आप की जन्मभूमि थी। 'भक्तमाल' से पता चलता है कि आप का जन्म दिल्ली के समीप सीही ग्राम में हुआ था और आप के माता पिता बड़े दरिद्र थे, सूरदास जी अन्धे थे अवश्य

पर जन्म से ही ऐसे थे या पीछे से ऐसे हुए इस पर बड़ा मत-भेद है। इस विषय में अनेक किम्बदंतियां प्रचलित है। कुछ लोग कहते हैं कि अन्धे होने के पूर्व आप किसी पर-स्त्री के रूप पर मोहित होगए थे। अन्त में जब उन्हें ज्ञान हुआ तब उन्हों ने नेत्रों का दोष मानकर सूई से अपनी आखें फोड़ लीं। कवि मियासिंह ने अपने 'भक्त विनोद' में उन्हे जन्मान्ध लिखा है। आप लिखते हैं कि, "सूरदास ब्राह्मण कुल में उत्पन्न थे। इनके माता पिता दरिद्र थे। ८ वर्ष की अवस्था में इनका यज्ञोपवीत हुआ था। एक बार सूरदास अपने माता पिता के साथ व्रज भूमि गए। लौटते समय इनका मन वहीं रहने का हुआ। माता पिता के लाख समझाने पर भी ये वहीं रह गये और साधुओं के संगति में रहने लगे। एक दिन आप किसी कूंए में गिर पड़े। लोगों ने देखा नहीं। अन्त में सातवें दिन गोप-वेषधारी श्री यदुनाथ ने उन्हें बाहर निकाला। उस समय सूरदास ने यह दोहा कहा।

बाँह छोड़ाए जात हौ, निबल जानि कै मोहिं।
हिरदै सों जब जाइहौ, मरद बखानों तोहिं॥"

'चौरासी वैष्णवों की वार्ता' के अनुसार आप गऊघाट में रहते थे। गऊघाट मथुरा और आगरा के बीच में है। यहीं सूरदासजी महाप्रभु बल्लभाचार्य्य के शिष्य हुए थे। तत्पश्चात आप उनके साथ गोकुल के श्रीनाथ जी के मंदिर में बहुत काल तक रहे। सूरदास का काम था कृष्ण भक्ति में सदा मग्न रहना और अपने आराध्य देव का यश कीर्तन करना। मरण काल निकट जान आप पारसोली नामक स्थान में चले गए। यह सुन कर गोस्वामी विट्ठलनाथ जी वहीं पहुँचे और उन की मृत्यु पर्यन्त वहीं रहे मरते समय सूरदास जी से एक

वैष्णव ने पूछा कि आपने बहुत से पद रचे पर गुरुदेव पर एक भी नहीं रचा। आप ने उत्तर दिया "ये सब पद गुरुदेव ही का यश कीर्तन करते हैं। क्या गुरुदेव और गोविन्द में कुछ अन्तर है।" फिर भी आपने मरने के पूर्व गुरु के विषय में यह पद कहा—

भरोसो दृढ़ इन चरनन केरो।
श्री बल्लभ नखचन्द छटा बिनु, सब जग माँझ अन्धेरो॥
साधन और नहीं या जग में जासों होत निवेरो।
सूर कहा कहि दुविधि आँधरो, बिना मोल को चेरो॥

\+ + + + + +

इस पद के कहने के बाद आप की आँखों से प्रेमाश्रु बहने लगा। गोस्वामी जी ने पूछा "सूरदास तुम्हारे नेत्रों की बृत्ति कहां है"। भक्तशिरोमणि सूरदास ने यह पद कहते हुए स्वर्ग की यात्रा की।

खंजन नैन रूप रस माते।
अतिसै चारु चपल अनियारे, पल पिंजरा न समाते॥
चलि चलि जात निकट स्रवनन के, उलटि उलटि ताटंक फँदाते।
'सूरदास' अंजन गुन अटके, नातरु अब उड़ि जाते।

❀ ❀ ❀ ❀

इसी प्रसंग पर की भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने बड़ा अच्छा कहा है—

मन समुद्र भयो सूर को, सीप भये चख लाल।
हरि मुक्ताहल परत ही मूँदि गये तत् काल॥

कविता काल

महात्मा सूरदास जी हिन्दी साहित्य के प्रौढ माध्यमिक काल में हुए। यह काल हिन्दी साहित्य के लिये बहुत ही श्रेय-

स्कर था। आरंभिक काल में जो कविता केवल वीर-गाथाओं से तृप्त होती थी वह अब भगवत् भजन में मग्न होगई। इस काल में साहित्य अपनी पराकाष्ठा पर पहुँचा। इसके कई कारण थे। एक तो यवन राज्य के स्थापन के कारण फैलती हुई सुख और शान्ति, जिसने लोगों को साहित्य की ओर आकृष्ट होने का अवसर दिया। दूसरे धार्मिक उत्थान के कारण 'भाषा' में हरि कीर्तन का गाया जाना। हिन्दू धर्म का पुनरुत्थान तो पहले ही हो चुका था पर उस धर्म में आचार को अधिक प्रधानता दी गई थी। मुसलमानी शासन काल में यद्यपि अन्य प्रकार की स्वतन्त्रता थी पर धार्मिक स्वतन्त्रता न थी। आचार विचार ही को धर्म माननेवाले कितने हिन्दू धर्मच्युत हो गये। केवल चोटी या जनेऊ कटजाने से कितने हिन्दू बलात् मुसलमान हो गये। इसका मुख्य कारण था जनता की धार्मिक अज्ञानता। लोग धर्म के तत्वों से अबोध थे। धार्मिक ग्रन्थों से उनका परिचय न था। कुछ पंडित लोग अपने इच्छानुसार धर्म की परिभाषा करते और उसी के अनुसार धार्मिक अनुशासन स्थापित करते थे।

इस अन्धकारमय धार्मिक अवस्था में स्वामी रामानन्द जी ने वैष्णव मत की संस्थापना की। आप ने लोगों को यह दिखा दिया कि आचार विचार के अतिरिक्त धर्म में सबसे अधिक आवश्यकता भक्ति की होती है और इसी 'भक्ति' द्वारा मनुष्य 'मोक्ष' प्राप्त कर सकता है। 'भक्ति' मार्ग के संस्थापक रामानन्द जी के अनेक शिष्य थे जिनमें कुछ तो इनके मार्ग के अनुयायी हुए कुछ इनसे भी बढ़ कर आचार विचार तथा सांप्रदायिक बंधनों का उलंघन कर के केवल निर्गुण ईश्वर की 'भक्ति' की ओर आकृष्ट हुए। इनमें प्रधान महात्मा

कबीर थे। आप के अनुसार सांप्रदायिक मत मतान्तर, आचार-विचार-भेद व्यर्थ के प्रपंच थे। आपके अनुसार ईश्वर की 'भक्ति' मुख्य वस्तु और उसे (ईश्वर को) हम अपनी आत्मा में पा सकते हैं। उसे ढूढने के लिये न तो मसजिद की जरूरत है न मन्दिर की आवश्यकता, न नमाज़ से काम है न पूजा से मतलब। कबीर ने बहुत कुछ प्रयत्न किया कि हिन्दू मुसलमान जो उस समय व्यर्थ धार्मिक झगड़ों में पड़े थे आपस में मिल कर रहें पर वे अपने इस प्रयत्न में सफल मनोरथ न हुए। कुछ झगड़ा तो अवश्य कम हुआ पर वह थोड़े ही काल के लिये था।

स्वामी रामानन्द के 'भक्ति' के आधार थे मर्य्यादा पुरोषत्तम श्री रामचन्द्र। पर आगे चल कर भक्ति मार्ग के अनुयायी श्री महा प्रभुबल्लभाचार्य्य ने श्रीकृष्ण को अपना आराध्यदेव बनाया और अपनी भक्ति का आधार बाल-श्रीकृष्ण को रक्खा। अब 'भक्ति' मार्ग की तीन शाखाएं हुईं। रामावतसमंप्रदाय, कृष्णावतसंप्रदाय और निर्गुणसंप्रदाय। इन ' भक्ति मार्ग ' के अनुयायियों को अपने मत तथा उद्गारों को प्रकट करने का एक मात्र साधन प्रचलित भाषा रखना पड़ा। कारण यह था कि इसी भाषा में जनता इन्हें समझ सकती थी।

इन भक्ति-मार्ग के अनुयायियों ने बोलचाल की भाषामें अपने भावों को ऐसी सुन्दरता से प्रकट किया है कि भाषा भी भगवत भक्ति की सरसता से मधुर और आनंद-दायिनी हो गई है। इन लोगों ने हिन्दी साहित्य को सजीव और सरस बनाया यह निश्चयपूर्वक कहा जा सकता है। यदि ध्यानपूर्वक देखा जाय तो हमारी भाषा का सबसे सुन्दर अंग इन्हीं महात्माओं की कृपा का फल है। माध्यमिक

कालका साहित्य तो एक प्रकार से 'भक्ति' मार्ग के कवियों की ही सुन्दर कृति का भांडार है।

महात्मा सूरदासजी ने भी इसी समय में अपनी पीयूष वाणी से हमारे साहित्य की सेवा की। आप ने अपने आराध्य देव का यश गान करने के लिये उनकी जन्म भूमि ब्रज की भाषा का साधन बनाया। आपकी सारी रचनायें ब्रजभाषा में हैं। एक प्रकार से यह कहना अनुचित न होगा कि आप ही ने अपनी काव्य कला से ब्रज भाषा को साहित्यिक भाषा का स्थान दिलाया। आपके पश्चात तो हिन्दी कविता के लिये मानो ब्रजभाषा एक अनिवार्य्य भाषा बन गई। कवि चाहे जहां का हो पर यदि वह हिन्दी में कुछ लिखना चाहे तो उसे ब्रजभाषा के सिवाय और कोई साधन ही नहीं था। इसमें तनिक सन्देह नहीं कि भक्त शिरो मणि सूरदास जी ही की कृपा से ब्रजभाषा को सरसता और माधुर्य्य प्राप्त हुआ। पर सूरदास जी की भाषा को हम शुद्ध पवित्र ब्रज भाषा नहीं कह सकते। ऐसी भाषा के प्रयोग का यश उनके पीछे के कवियों को प्राप्त हुआ।

सूरदास जी ने कई ग्रंथो का निर्माण किया है उनमें मुख्य ये हैं—

(१) सूरसारावली	प्राप्य
(२) सूरसागर	
(३) साहित्य लहरी	
(४) ब्याहलो	अप्राप्य
(५) नल दमयन्ती कथा	

इन सब में प्रसिद्ध 'सूरसागर' है। 'सूर सागर' वास्तव

में सूरदास जी के पदों का 'सागर' ही है। यह ग्रंथ बारह स्कंधों में विभक्त है। इसमें कथा श्रीमद्भागवत के आधार पर कही गई है। 'सूरसागर' 'रामायण' की भांति एक प्रबंध काव्य नहीं है। सूरदास जी ने एक प्रसंग पर एक वा अनेक पद कहे हैं जिन का पीछे से कथाक्रम से संग्रह हुआ है। एक एक पद स्वतंत्र कहे जा सकते हैं। अँग्रेजी में ऐसे काव्य को Lyric poem कहते है। कहते हैं कि सूरदास ने सवा लाख पद बनाए हैं पर अभी तक इतने पदों का पता नहीं लगा है। बाबू राधाकृष्ण दास द्वारा सम्पादित और वेंकटेश्वर प्रेस द्वारा प्रकाशित सूरसागर में कुल ४०१८ पद हैं। संभवतः यह सवा लाख संख्या अनुष्टुप छन्दों के अनुसार है।

'सूरदास की कविता'

सूरदास जी ने जो कुछ लिखा प्रायः 'भक्ति' से प्रेरित हो कर लिखा। आप की कविता में 'भक्ति' रस का स्रोत बहता है। तुलसी और सूर की 'भक्ति' में अन्तर है। तुलसी दास अपने को अपने आराध्य देव 'रामचन्द्र' का दास मानते थे। पर सूरदास थे उपासक बालरूप श्रीकृष्ण के। अतः आप अपने को बाल कृष्ण का सखा मानते थे। तुलसी की भांति आप केवल राम की खुशामद ही नहीं करते थे, समय पड़ने पर आप ने कृष्ण को भला बुरा भी कह डाला है।

आप की भाषा शुद्ध ब्रज भाषा नहीं है। कुछ शब्द या प्रयोग अन्य प्रान्तीय भी मिलते हैं। पर इसे दोष नहीं मानना चाहिये। क्योंकि साहित्य की भाषा संकुचित नहीं होती। उसमें अच्छे प्रयोग चाहे वे अन्य प्रान्तीय ही क्यों न हों आ सकते

हैं और आने चाहियें। फिर अभी आरम्भिक अवस्था थी। इसमें इतनी सूक्ष्मता को स्थान ही कहां हा सकता है।

विशद सविस्तर वर्णन, गम्भीर विचार, अलंकारिक प्रचुरता, माधुर्य और पद-लालित्य सूरदास की कविता के मुख्य गुणों में से हैं। ये कभी अन्य के भावों को उधार नहीं लेते थे। इन की कविता पर प्राचीन समालोचक तो इतने मुग्ध थे कि कितनों ने तो यहां तक कह डाला कि—

"सूर सूर तुलसी ससी, उड़गन केशव दास।
अब के कबि खद्योत सम, जहँ तहँ करत प्रकास॥"

परन्तु यह ठीक नहीं है। तुलसी तुलसी ही थे सूर सूर ही थे। दोनों महा कवियों का क्षेत्र भिन्न था। एक प्रबंध काव्य का महा कवि था, दूसरा पद रचने में अद्वितीय था। एक था श्री राम का अनन्य दास, दूसरा श्री कृष्ण का अनन्य उपासक। एक ब्रजभाषा का पंडित, दूसरा अवधी का आचार्य्य। दोनों एक दूसरे से बढ़कर थे। एक को 'सूर' दूसरे को 'ससी' कहना अपनी अलपज्ञता का प्रमाण देना है।

सूरदास की कविता की यहां तारतम्यात्मक समालोचना करना असंभव है। सूर के पदों के विषय में प्रायः सभी को 'तानसेन' के मत से सहमत होना पड़ेगा। तानसेन कहते हैं

किधौं सूर को सर लग्यो, किधौं सूर की पीर।
किधौं 'सूर' को पद लग्यो, तन मन धुनत सरीर॥

इस में तनिक सन्देह नहीं कि सूरदास के पद बड़े ही मर्मस्पर्शी हैं।

सूररामायण की समालोचना

जहां अन्य स्कंधों में सूरदास ने कृष्ण चरित्र संबंधी पद लिखे हैं वहां नवम स्कंध में आप ने रामचन्द्र चरित्र संबंधी पद लिखे हैं। तुलसी और सूर भिन्न २ वैष्णव सम्प्रदाय के थे और उनकी भक्ति के भिन्न २ व्यक्ति आधार थे पर उपास्य की अनन्यता का भावरक्षण करने के लिये एक ने दूसरे के आराध्यदेव का यश गान किया है। तुलसी ने कृष्णगीतावली में कृष्ण के चरित पर लिखा, सूरदास ने सूर रामायण में राम के चरित पर लिखा। पर यहां एक बात स्पष्ट दिखाई पड़ती है। यद्यपि सूर और तुलसी ने रामकृष्ण में भेदबुद्धि न रख कर सूररामायण और कृष्णगीतावली लिखी पर उन की रचनाओं में उपासना-भेद का अच्छा पता चलता है। सूरदास ने यद्यपि राम-चरित गान करने में कम भक्ति नहीं दिखाई है पर उसमें वह माधुर्य्य नहीं ला सके जो वे कृष्ण लीला गाने में ला सके हैं। यही हाल तुलसी दास का भी है। उनकी कृष्ण गीतावली उतनी भावपूर्ण नहीं हो सकी है जितनी उनकी रामगीतावली हुई है। कारण इसका यह था कि एक बाल कृष्ण की लीलाओं से भली भांति परिचित था, दूसरा पुरुषोत्तम रामचन्द्र के वीर कृत्यों से। इसी से न सूरदास राम के वीर कृत्यों के विषय में उतना अच्छा लिख सके और न तुलसी कृष्ण की बाल लीलाओं के विषय में। पर इससे यह न समझना चाहिये कि सूर का 'रामायण' और तुलसी की गीतावली किसी काम की ही नहीं हैं। संक्षेप में दोनों कवियों ने एक दूसरे के उपास्य देवों पर अच्छा लिखा है। तारतम्यात्मक दृष्टि से अध्यन करने के लिये दोनों ग्रंथों को पढ़ना उचित है।

रामचरित को जिसके लिये तुलसीदास ने सम्पूर्ण 'मानस' की रचना करडाली है सूरदास ने केवल १४६ पदों में कहा है। पर संक्षेप में होने पर भी कथा सुचारु रूप से कही गई है। पात्रों के शीलगुण का निर्वाह भी हुआ है। उत्तमोत्तम रसों का संचार भी हुआ है। अलंकारों की छटा भी यत्र तत्र दिखाई पड़ती है। भाषा का माधुर्य्य तो मानों पद पद पर टपका पड़ता है। 'सूररामायण' का एक बार दिग्दर्शन करलेना उचित होगा।

बाल-लीला लिखने में सिद्धहस्त महात्मा सूरदास जी रामचन्द्र की बाल लीला कैसी सुन्दता से लिखते हैं। महाराज दशरथ के चारों पुत्र छोटी २ 'धनुहियां' हाथ में लिये हुए शरक्रीड़ा करते समय कैसे शोभित होते हैं। इस पर सूरदास जी लिखते हैं।

करतल सोहत बान धनुहियां।
खेलत फिरत कनक-मय आँगन पहिरे लाल पनहियां॥
दशरथ कौसल्या के आगे लसत सुमन की छहियां।
मानो चारि हंस सरवर से बैठे आइ सुठहियां॥

\+ + + +

इसी प्रसंग पर 'तुलसीदास' जी गीतावली में लिखते हैं-

ललित ललित लघु लघु धनु सर कर,
तैसी तरकसी कटि कसे पट पियरे।
ललित पनही पांय पैजनी-किंकिन-धुनि,
सुनि सुख लहै मनु रहै नित नियरे॥

राम लक्ष्मण विश्वामित्र के यहां हो कर जनकपुर जाते हैं। उनकी अनुपम सुन्दरता देखने के लिये वहां की स्त्रियां कैसी उत्सुकता और प्रेम दिखाती हैं। 'सूर' का यह पद उन की दशा का पूर्ण परिचय देता है।

देखन मन्दिर आन चढ़ी।
रघुपति पूरन चन्द विलोकत मानो उदधि तरंग बढ़ी।
पिय दरसन प्यासी अति आतुर निसिवासर गुनगान रढ़ी॥
तजि कुलकानि पीय मुख निरखत, सीस नाइ, असीस पढ़ी।
भई देह जो खेह करम बस, ज्यों तट गंगा अनल दढ़ी।
सूरदास प्रभु दृष्टि सुधानिधि, मानो फेरि बनाय गढ़ी॥

सीस का नवाना, आशीर्वाद का पढ़ना कितना स्वाभाविक है। जो देह ईश्वर को पाकर अपने कर्मों के कारण निरर्थक थी वह पुनः 'प्रभु दृष्टि सुधानिधि' के कारण सार्थक हो गई। यहां पर एक बात ध्यान देने की यह है कि सूरदास ने रामचन्द्र को 'पीय' कहा है और उनके दरशन के निमित्त स्त्रियां 'प्यासी' हैं। ईश्वर के अवतार रामचन्द्र के प्रति 'प्रिय' का भाव रखना सूफी मत के 'ईश्वरोन्मुख प्रेम' की भांति जान पड़ता है। सूरदास के समय में 'भारतवर्ष' में सूफ़ी मत का भी प्रचार था। इस मत के माननेवालों में से कुछ ने तो सुन्दर काव्य लिखे हैं। सूफ़ी मत में ईश्वर की भावना प्रियतम के रूप में की जाती है। सूरदास के रामचन्द्र के लिये 'पीय' शब्द प्रयोग करने में यही भाव लक्षित होता है। क्या उसे सूफ़ी मत के प्रभाव के कारण कह सकते हैं?

कैकेयि ने १४ वर्ष के लिये राम के बनवास का वर मांग लिया। राम बन-गमन के निमित्त तय्यार हुए। जानकी भी

साथ जाना चाहती हैं। उस पर रामचन्द्र उन्हें समझाते हैं कि हे जानकी तुम अपने पिता के घर चली जाओ। इस पर सूरदास का यह पद कितना सुन्दर और स्वाभाविक है।

तुम जानकी जनकपुर जाहु।
कहां जाइ हम संग भरमिहौ, बन दुख सिंधु अथाहु॥
तजि वह जनकराज भूषण सुख कत तृण तलय विपिन फल खैहौ
ग्रीषम कमल बदन कुम्हिलैहैं, तजि सर निपट दूर कित न्हैहौ।
जिन कुछु वृथा सोच मन करिहो मातुपिता सुख दैहौ।
तुम फिरि रहो संग जो मेरे तो बन बसि पछितैहौ॥

\+ \+ \+ \+

यहां कवि अपनी कुशलता से सीता की भावी विपद की व्यंजना पहले ही कर देता है। सीता राम की बात मान कर जनकपुर नहीं जाती। अन्त में रावण के कारण उसे दुःख सहना पड़ता है। इस पर सीता के सिर पति की आज्ञा उल्लंघन करने का दोष मढ़ना ठीक नहीं। एक सती स्त्री का पति को छोड़ कर अन्यत्र कहां आश्रय है?। राम के उक्त बचन पर सीता का उत्तर सुनने योग्य है—

ऐसी जिय जिनि धरो रघुराई।
तुम सों तजि प्रभु मोसों दासी, अनत न कहूं समाई॥
तुमरो रूप अनूप भानु ज्यों जब नैननि भरि देखों।
ता दिन हृदय कमल परिफुल्लित, जनम सफल करि लेखों।
तुमरे चरन कमल सुखसागर यह व्रत हौं प्रतिपलिहौं।
'सूर' सकल सुख छाँड़ि आपुनो बन विपदा संग चलिहौं॥

पति के सुख दुःख में स्त्री का सहगामिनी होना स्त्रियों का परम कर्तव्य होना ही चाहिये।

दशरथ की आज्ञा सिरोधार्य्य कर राम, सीता और लक्ष्मण सहित बन जाने को उद्यत होते हैं। पिता दशरथ के मानो प्राण पखेरू उड़ना चाहते हैं। पर वचनवद्ध होने के कारण बेचारे दशरथ उन्हें रोकने में असमर्थ हैं। केवल उन से एक दिन और ठहर जाने की प्रार्थना करते हैं। दीनता से वे कहते हैं।

रघुनाथ पियारे आजु रहो हो।
चारि याम विसराय हमारे छिन छिन मीठे बचन कहो हो॥
बृथा होइ बरु बचन हमारो बरु कैकयी जिय क्लेस सहो हो।
आतुर ह्वै अब छाँड़ि कोसलपुर प्राणजिवन कित चलन चहो हो॥
बिछुरत प्रान पयान करैंगे, रहो आजु पुनि पन्थ गहो हो।
अब सूरज दिन दरसन दुर्लभ झपटि कमल कर कंठ गहो हो॥

कैसी करुणाजनक स्थिति है। प्रेम के वश हो कर सत्यवादी दशरथ अपना वचन भी त्यागने को तत्पर हो जाते हैं। उन्हें पूरा विश्वास है कि राम के जाते ही उनके प्राण रहने वाले नहीं। ऐसा ही हुआ भी।

वन मार्ग में राम लक्ष्मण के साथ सीता जी चली जाती हैं पुरवासी स्त्रियां उनसे पूछती हैं "इनमें को पति त्रिया तुम्हारो"। हिन्दू महिलाएं अपने पति का नाम तो ले नहीं सकतीं। स्पष्ट रूप से उनकी ओर संकेत करने में भी लजाती हैं। स्त्रिरत्न जानकी अपने प्राणपति की ओर आँखों से इशारा करती है।

राजिव नैन मैन की मूरत सैनन माँहि बताई।

इस प्रसंग पर तुलसी दास जी ने बड़ी सुन्दरता से गीतावली में कहा है।

पूछति ग्राम बधू सिय सों 'कहो साँवरे से, सखि ! रावरे को हैं?"

+ + + +

सुनि सुन्दर बैन सुधारस साने, सयानी ह्वै जानकी जानी भली।
तिरछे करि नैन द्वै सैन तिन्हैं समुझाइ कछू मुसुकाइ चली।

+ + + +

एक कुलवधू के कोमल आचरण का कैसा सुन्दर चित्र है। रामचरित्र मानस में तो यह भी चित्र-चित्रण और भी कुशलता से किया गया है। देखिए—

कोटि मनोज नसावनि हारे। सुमुखि कहहु को आहिं तुम्हारे॥
सुनि सनेहमय मंजुल बानी। सकुचि सिय मन महुँ मुसुकानी॥
तिनहिं बिलोकि विलोकत धरनी। दुहुं सकोच सकुचि बरबरनी॥
सकुचि सप्रेम बाल मृगनैनी। बोली मधुर वचन पिक बयनी॥
सहज सुभाय सुभग तनु गोरे। नाम लषन लघु देवर मोरे॥
बहुरि वदन बिधु अंचल ढांकी। पियतनु चितै भौंह करि बांकी॥
खंजन मंजु तिरेछे नैननि। निज पति कहेउ तिनहि निज सैननि॥
भई मुदित सब ग्राम बधूटी। रंकन राय रास जनु लूटी॥

अलौकिक सुन्दरता में एक अपूर्व आर्कषण शक्ति होती है। उससे आकृष्ट हो कर मनुष्य अपने को भूल जाता है। सुन्दर रूप को बार बार देखने पर भी मन को तृप्ति नहीं होती। राम लक्ष्मण और सीता की अनुपम सुन्दरता देख कर पुरवासी स्त्री पुरुष मुग्ध हो जाते हैं। उनकी सुन्दरता बार बार देख कर भी वे नहीं अघाते, यहां तक कि उनके साथ लगे हुए दूर तक चले जाते हैं। सूरदास इसी पर कहते हैं—

गये सकल मिलि संग दूरि लों मन न फिरत पुरबासी।
सूरदास स्वामी के बिछुरत भरि भरि लेत उसासी॥

\+ + + +

राम को लौटा लाने के लिये भरत उनके पास जाते हैं पर पिता का बचन सत्य करने के लिये राम अयोध्या लौटना उचित नहीं समझते और भरत को समुझा बुझा कर अयोध्या लौटा देते हैं। चलते समय वे भरत को कैसा सुन्दर उपदेश देते हैं।

बंधू करियो राज सँभारे।
राजनीति ओर गुरु की सेवा गऊ विप्र प्रतिपारे॥
कौसल्या कैकई सुमित्रा दरसन साँझ सकारे।
गुरु वसिष्ट अरु मिलि सुमंत सों परजा हितू विचारे॥

\+ + + +

सीताहरण के पश्चात् राम की दशा बहुत ही करुणा जनक है। उन्हें चेतन और अचेतन का कुछ भी ज्ञान ही नहीं रह जाता। विरह से संतप्त वे उन्मत्त की भांति बन में पशु पच्छियों से अपनी प्रियतमा के विषय में पूछते फिरते हैं। इस प्रेम-पराकाष्ठा की व्यंजना कवि ने कैसी सुन्दरता से की है। देखिये

फिरत प्रभु पूछत बन द्रुम बेली।
अहो बन्धु काहू अवलोकी इह मग बधू अकेली॥
अहो विहंग! अहो पन्नग, मृग, या कन्दर के राई।
अब की बार मम विपति मिटाओ जानकि देहु बताई॥

\+ + + +

प्रायः सभी भारतीय कवि वियोग दशा में विरही द्वारा ऐसी ही बातें कराते हैं। तुलसी के राम भी सीता-हरण के पश्चात् बन में पशु-पक्षियों से ऐसे ही पूछते फिरते हैं।

हे खग, मृग, हे मधुकर स्रेनी।
तुम देखी सीता मृगनैनी?॥

सीता के लुप्त हो जाने का कारण राम को अभी ज्ञात नहीं है। वे समझते हैं कि इस बन की ही वस्तुओं ने सीता को चुरा लिया है। वे लक्ष्मण से कहते हैं—

सुनो अनुज यहि वन इतननि मिलि जानकी प्रिया हरी।
कछु इक अंगनि की सहिदानी मेरी दृष्टि परी॥
कटि केहरि, कोकिल वाणी, अरु शशि मुख प्रभा खरी।
मृग मस्ती नैननि की शोभा जाय न गुप्त करी॥
चंपक वरन वरन कमलनि, दाड़िम दसन लरी।
गति मराल अरु बिंब अधर छबि अहि अनूप कवरी॥

प्रेम के आधिक्य के कारण विरहावस्था में राम को सर्वत्र सीता ही का रूप दिखाई पड़ता है। तुलसी दास ने इस प्रसंग पर और भी विषद रूप से लिखा है।

खंजन सुक कपोत मृग मीना। मधुप निकर कोकिला प्रवीना॥
कुन्द कली दाड़िम दामिनी। सरद कमल ससि अहि भामिनी॥
बरुन पास मनोज धनु हंसा। गज केहरी निज सुनत प्रसंसा॥
श्रीफल कनक कदलि हर्षाहीं। नेकु न संकु सकुच मन माहीं॥
सुन जानकी, तोहि बिन आजू। हरखे सकल पाइ जनु राजू॥

सीता के विरह में राम कितने अधीर थे यह हम ऊपर देख ही चुके हैं पर इस विपत्ति की अवस्था में भी 'दीनन

'दुख हरन' श्रीरामचन्द्र अपने स्वभाव को भूलनेवाले नहीं। सीता की रक्षा करने में जटायु रावण की तलवार से घायल हुआ और अपने अन्तिम समय की प्रतीक्षा करता हुआ वह एक कुंज में पड़ा हुआ है। राम का विलाप सुन कर वह 'राम !' 'राम !' पुकारता है। एक आर्त प्राणी का आर्तनाद सुन कर राम अपना दुख भूल जाते हैं और अपने पुरुषत्व से प्रेरित हो कर वे उसकी रक्षा करने पर तत्पर हो जाते हैं। रघुकुल-शिरोमणि दीनों की रक्षा करनेवाले राम, के चरित्र का कितना सुन्दर और स्वाभाविक चित्र है।

तुम लछिमन या कुंज कुटी में देखो नैकु निहारी।
कोउ एक जीव नाम मम लै लै उठत पुकार पुकारी॥
इतनी कहत कंठ ते कर गहि लीनो धनुष सँभारी।
कृपानिधान नाम हित धाये अपनी विपति बिसारी॥

\+ + + +

सीता को रावण ले गया। राम उसको बन बन ढूँढ़ते फिरते हैं। जामवंत अंगद इत्यादि सभी पता लगा रहे हैं। इसी बीच में 'संपाति' सीता की अवस्था वर्णन करता है। सती सीता की राम से अलग हो कर कैसी करुणाजनक अवस्था है। संपाति की आँखों-देखी सुनिये।

बिछुरी मनो संग ते हरिनी।
चितवति रहति चकित चारों दिसि उपजी विरह तनु जरनी॥
तरुवर-मूल अकेली ठाँढ़ी दुखित राम की घरनी।
बसन कुचील चिहुर लपटाने देह पितांबर बरनी॥
लेत उसास नयन जल भरि भरि झुकि जु परी धरि धरनी।
'सूर' सोच जिय पोच निसाचर, राम नाम की सरनी॥

\+ + + +

कैसा साक्षात् वर्णन है। अंधे सूरदास की कल्पना शक्ति सराहनीय है।

राम की आज्ञा से हनुमान सीता का पता लेने लंका जाते हैं। इधर उधर ढूँढ़ने पर सीता को वे अशोक बन में देखते हैं। अकेली पाकर सीता के सामने उपस्थित होते हैं। निशाचर-त्रस्ता सीता उन्हें भी अविश्वसनीय समझती है। वह कहती है

"अरे निशाचर चोर!
काहे को छल करि करि आवत धर्म नसावन मोर।
पावक परौं सिंधु मंह बूड़ों नहिं मुख देखों तोर॥"

\+ + + +

इसी प्रसंग पर सूरदास का यह पद कितना ललित है—

तुमहि पहिचानति नाहीं बीर!
यहि नैना कबहुं नहिं देख्यौ रामचन्द्र के तीर॥
लंका बसत दैत्य अरु दानव उनके अगम सरीर।
तोहि देखि मेरो जिय डरपत नैनन आवत नीर॥
जब कर काढ़ि अगूंठी दीनी तब जिय उपजी धीर।
'सूरदास' प्रभु लंका कारन आये सागर तीर॥

\+ + + +

सीता को क्या पता था कि राम और हनुमान से मैत्री हुई है। एक अज्ञात कुल शील वानर पर उसका सहसा अविश्वास करना उचित ही था।

हनुमान द्वारा जगत जननी जानकी अपना संदेश भेजती हैं। यह संदेश सुनने योग्य है—

देखे यह गति जात मंदेसो कैसे कै जु कहौं।
सुनि कपि इन प्राणन को पहरो कब लों देति रहौं॥

ये अति चपल चल्यो चाहत हैं, करत न कछू विचार।
कहि धौं प्राण कहां लौं राखौं, रोकि रोकि मुख द्वार ॥

\+ + + +

कितना सारगर्भित संदेश है।

रावण से अनादृत हो कर विभीषण राम की शरण में आता है। राम उसे देखते ही लंकापति कह कर संबोधन करते हैं। इस पर सूरदास जी कहते हैं—

देखत ही रघुबीर धीर कहि लंकपती तिहि नाम बुलायो।
कह्यो सुबहुरि कह्यो नहिं रघुबर यहै विरद चलि आयो॥

\+ + + +

राम ने जो एक बार कह दिया बस कह दिया। कवि केशव दास जी राम की महिमा इस प्रकार वर्णन करते हैं।

बोलि न बोल्यो; बोल दयो फिर ताहि न दीन्हों।
मारि न मारयो शत्रु, क्रोध मन वृथा न कीन्हों॥

रावण के दूत राम की सेना में वेश बदल कर भेद लेने आए हैं। विभीषण ने उनको पकड़वा दिया। फिर क्या था, लगी उन पर मार पड़ने। बानर शैतान तो होते ही हैं। मार पीट कर उन्हें राम के सामने ले जाते हैं। दीनदयालु राम को उनकी दशा पर दया आ गई, उन्होंने अपने हाथ से उनका बंधन छोड़ उन्हें मुक्त कर दिया। सुनिये—

शुक सारन द्वै दूत पठाये।
बानर वेश फिरत सेना में सुनत विभीषण तुरत बँधाये॥
बीचही मार परी अति भारी राम लषण जब दर्शन पाये।
दीनदयाल विहाल देखि कै, छोरी भुजा "कहां ते आये"॥
हम्रु ताहू लंकेश प्रतिहारी समुद तीर को जात अन्हाये

सूर कृपालु भये करुणामय आपुन हाथ सों दूत रिहाये ॥

\+ + + +

इन्द्रजित की शक्ति से लक्ष्मण आहत हुए। राम के दुख का अब अन्त नहीं है। पिता मरे, सीता हरी गई, अकेले लक्ष्मण बिपद के साथी थे वे भी चलते बने। इस पर सूरदास कहते हैं

दशरथ मरन, हरन सीता को, रन बीरन की भीर।
दूजो सूर सुमित्रा-सुत बिनु कौन धरावे धीर ॥

\+ + + +

इसी पर तुलसी दास जी गीतावली में राम के मुख से कहलाते हैं—

मो पै तौ न कछू ह्वै आई।
तात मरन, तिय हरन, गीध बध, भुज दाहिनी गवाँई।
'तुलसी' मैं सब भांति आपने कुलहि कालिमा लाई ॥

\+ + + +

राम के शिर पर विपत्ति का पहाड़ आ गिरा है। तो भी शरण में आये हुए जनों की रक्षा करनेवाले राम को सब से अधिक चिंता विभीषण की है, अपने लिये तो वे निश्चिंत हैं। सुनिये राम क्या कहते हैं—

"मैं निज प्राण तजौंगो, सुन कपि, तजिहै जानकि सुनिकै।
ह्वै है कहा बिभीषन की गति यहै सोच जिय गुनिकै ॥"

इसी प्रसंग पर तुलसी के राम का भी कथन सुनने योग्य है—

गिरि कानन जैहैं शाखा मृग, हौं पुनि अनुज सँघाती।
ह्वै है कहा बिभीषण की गति, रही सोच भरि छाती ॥"

लक्ष्मण की माता सुमित्रा एक वीर माता है। लक्ष्मण के आहत होने का समाचार जब उसे सजीवन बूटी लेकर लौटते

हुए हनुमान से मिलता है तब वह दुखी नहीं होती "राम के हित के लिये मेरा पुत्र काम आया" इस पर उसे प्रसन्नता होती है। वह दुःखी कौशल्या को यह कह कर समझाती है—

"लक्ष्मण जनि, हौं भई सपूती, राम काज जो आवै।
जिये तो सुख विलसै या जग में कीरति लोगन गावै॥
मरैं तु मंडल भेदि भाव को सुरपुर जाइ बसावै।

एक वीर-प्रसवनी क्षत्राणी के मुख से ऐसी ही बातें निकलनी चाहियें?

कौशल्या को लक्ष्मण के लिये बड़ा दुःख है, वह राम से कहने के लिये हनुमान से कहती हैं—

"या पुर जिनि आवहु बिनु लक्ष्मण जननी लाज न लागे"

पर कौशल्या की बात काट कर सुमित्रा देवी कहती हैं—

मारुत सुत! संदेस हमारो," सुमित्रा कहि समझावै।
"सेवक जूझि परै रन विग्रह ठाकुर तौ घर आवै।"

सकुल रावण मारा गया। लंका नष्ट की गई। युद्ध समाप्त हुआ। लक्ष्मण सीता को देखने जाते हैं। वहां जा कर सीता को बड़ी शोचनीय दशा में देखते हैं।

अति कृष दीन छीन तन प्रभु बिन नैननि नीर बहाई॥

सीता को लेकर लक्ष्मण राम के पास आते हैं। लोक मर्य्यादा की रक्षा करनेवाले राम सीता को देख कर मुख मोड़ लेते हैं। यद्यपि सीता के प्रति उनका अगाध प्रेम और विश्वास है, पर राम विवश हैं, उनकी विवशता पर 'सूर' कहते हैं—

सूरदास स्वामी तिहुं पुर के जग उपहास डराई॥

सीता, लक्ष्मण, हनुमान, विभीषण, सुग्रीव इत्यादि को लेकर पुष्पक विमान पर चढ़ राम अयोध्या के निकट पहुँचते

हैं। सुग्रीव विभीषण आदि से राम अपनी जन्मभूमि की प्रशंसा करते हैं।

हमारो जन्म भूमि यह गाऊँ।
सुनहु सखा सुग्रीव विभीषण अवनि अयोध्या नाऊं॥
देखत बन उपबन सरिता सर परम मनोहर ठाऊं।
अपनी प्रकृति लिये बोलत हौं सुरपुर में न रहाऊं॥
ह्यां के बासी अवलोकत हौं आनन्द उर न समाऊं।
सूरदास जो विधि न सकोचे तो बैकुंठ न जाऊं।

धन्य है वह भूमि (अयोध्या) जिसे छोड़ कर स्वयं श्री राम स्वर्ग भी नहीं जाना चाहते और धन्य हैं वे राम जिन्हें इस भूमि ने जन्म दिया और अपनी गोद में खेलाया और जिसके प्रति उनका इतना प्रेम है। ठीक ही है—

"जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी"

"कुछ आवश्यक बातें"

क. सूर रामायण की कथा और तुलसी रामायण की कथा में अन्तर है। तुलसी ने कथा में कुछ परिवर्तन किये हैं पर 'सूर' ने नहीं। तुलसी रामायण के विरुद्ध सूर रामायण में निम्न लिखित अन्तर है।

(१) राम और परशुराम की भेंट विवाहोपरान्त अयोध्या लौटते समय मार्ग में होती है।

(२) बनवास की आज्ञा के पश्चात् गंगा तट पर पहुँचने पर राम अहिल्या का उद्धार करते हैं।

(३) जब सजीवन बूटी लेने हनुमान गये तब लौटते समय उनसे भरत ही से केवल भेंट नहीं हुई वरन कौशल्या और सुमित्रा से भी हुई।

ख. सूर दास ने प्रबंध काव्य तो रचा नहीं वरन उन्होंने एक एक प्रसंग पर एक वा अनेक पद कहे हैं जिन के एकत्र कर देने पर रामचरित्र की कथा पूरी हो जाता है। यही कारण है कि हम एक ही प्रसंग पर एक या अनेक पद पाते हैं जिनकी शैली कभी कभी भिन्न भी होती है। इसे दोष न समझना चाहिये।

ग. (१) मात्रा पूर्ति के लिये कहीं २ 'सूर' को शब्दों को ह्रस्व वा दीर्घ करना पड़ा है जैसे पृ० ५ अन्तिम पंक्ति में 'अधीर का 'आधीर'।

(२) कहीं कहीं अन्त्यानुप्रास के लिये शब्दों को विकृत भी करना पड़ा है। जैसे 'रटी' का रठी (पृ० ४ अन्तिम पंक्ति) पाठक इन बातों को ध्यान में रखते हुए ग्रंथ का अध्ययन करें।

'सूररामायण' पर संक्षेप रूप से जो कथनीय था लिखा गया। आशा है इससे पाठकगण लाभ उठावेंगे। इस भूमिका के लिखने में मेरे गुरुवर पूजनीय बा० श्यामसुन्दरदास जी ने मुझे अमूल्य परामर्श दिया है जिसके लिये मैं उनका सादर कृतज्ञ हूँ।

काशी — सत्यजीवन वर्म्मा

२२-५-२५

सूर रामायण

प्रस्तावना

राग विलावल

हरि हरि हरि हरि सुमिरन करो । हरि-चरनारविंद उर धरो ॥
जय अरु विजय पारखद दोई । बिप्र सराप असुर भे सोई ॥
एक बराह रूप धरि मारयो । एक नृसिंह रूप संहारयो ॥
रावण कुंभकरन सोइ भये । राम जनम तिनके हित लये ॥
दशरथ नृपति अजोध्या राव । ताके गृह कियो आविर्भाव[1] ॥
नृप सों ज्यों सुखदेव सुनायो । सूरदास त्यों ही कहि गायो ॥१॥

---

1. जन्म ।

बालकांड ।

[जन्म वर्णन]

राग कान्हड़ा

आजु दसरथ के आँगन भीर ।
आए, भुव-भार-उतारन-कारन, प्रगटे श्याम शरीर ।
फूले फिरत अजोध्यावासी, गनत न त्यागत चीर ।
परिरंभन [1] हँसि देत परस्पर आनँद नैनन नीर ॥
त्रिदस नृपति [2] ऋषि व्योम [3] विमाननि देखत रहे न धीर ।
त्रिभुवननाथ दयालु दरस दै हरी सबन की पीर ॥
देत दान राख्यो न भूप कछु, मोह बड़े नग हीर ।
भये निहाल सूर सब जाचक जे जाँचे रघुबीर [4] ॥ १ ॥

अजोध्या बाजत आजु बधाई ।
गर्भ मुच्यो [5] कौसल्या माता रामचंद्र निधि [6] आई ॥
गावै सखी परस्पर मंगल ऋषि अभिषेक कराई ।
भीर भई दसरथ के आँगन साम वेद धुनि गाई ॥
पूँछत रिषिहिं अजोध्या को पति कहि हो जनम गुसाईं ।
बुद्ध वार नवमी तिथि नीकी चौदह भुवन बड़ाई ॥
चारि पुत्र दसरथ के उपजे तिहूँ लोक ठकुराई ।
सदा सर्वदा राज राम को सूरदास तहँ पाई ॥ २ ॥

---

१ आलिंगन । २ इन्द्र । ३ आकाश । ४ दशरथ । ५ मुक्त किया, खोला । ६ कोष ।

रघुकुल प्रगटे हैं रघुबीर ।
देश देश ते टीका[1] आयो रतन कनक मनि हीर ॥
घर घर मंगल होत बधाई अति पुरवासिन भीर ।
आनंद मगन भये सब डोलत कछू न सोध[2] सरीर ॥
मागध बंदी सूत लुटाए गो गयंद हय चीर ।
देत असीस सूर "चिरजीवो रामचन्द्र रघुबीर" ॥ ३ ॥

[शर क्रीड़ा]

राग बिलावल

करतल सोहत बान धनुहियाँ ।
खेलत फिरत कनकमय आँगन पहिरे लाल पनहियाँ[3]
दशरथ कौसल्या के आगे लसत सुमन की छहियाँ ।
मानो चारि हंस सरवर ते बैठे आइ सुठहियाँ* ॥
रघुकुल-कुमुद-चंद-चिंतामनि प्रगटे भूतल महियाँ ।
यहै देन आए रघुकुल को आनंद निधि सब कहियाँ ॥
ये सुख तीनि लोक में नाहीं जो पाये प्रभु पहियाँ ।
सूरदास हरि बोलि भगत को निरबाहत गहि बहियाँ ॥४॥
धनुही बान लिये कर डोलत ।
चारो बीर संग एक सोहत बचन मनोहर बोलत ॥
लछिमन भरत सत्रुहन सुंदर राजिव-लोचन[4] राम ।
अति सुकुमार परम पुरुषारथ मुक्ति धर्म धन[5] काम ॥

---

१ उपहार, बलि जो उत्सव के समय आता है । २ सुधि । ३ जूता ।
४ कमल नयन ५ अर्थ ।
* (पाठान्तर)—सदहियां ।

कटि पट पीत पिछौरी बांधे काकपच्छ[1] शिखिसीस[2]
शर क्रीड़ा[3] दिव[4] देखन आवत नारद सुर तैंतीस ॥
सिव मन सोच[5] इन्द्र मन आनंद[6] सुखदुख ब्रह्मसमान
दिति[7] दुर्बल अति अदिति[8] हृष्ट[9] चित देखि सूर संधान[10]॥

[विश्वामित्र का आ कर मांगना, दशरथ का रामलक्ष्मण को साथ कर देना, ताड़ुका बध, यज्ञरक्षा, मिथिला गमन ।]

राग सारंग

दसरथ सों ऋषि आनि कह्यो ।
असुरन सो जग होन न पावत रामलछन तव संग दयो।
मारि ताड़ुका जज्ञ करायो विश्वामित्र अनंद भयो ।
सीय स्वयंवर जानि सूर प्रभु को ऋषि ल ता ठौर गयो॥६॥

[राम को देखने के लिये स्त्रियों की उत्सुकता सीता का राम को देखना]

राग विलावल

देखन मन्दिर आनि चढ़ीं ।
रघुपति पूरन चन्द विलोकत मानों उदधि तरंग बढ़ी ॥
पिय दरसन प्यासी अति आतुर निसिवासर गुन गान रढ़ी[11] ।

---

१ जुलफी । २ मोर पक्ष । ३ तीर चलाने का खेल । ४ स्वर्ग । ५ धनु भंग के निमित्त । ६ रावण बधहेतु । ७ दैत्यों की माता । ८ देवताओं की माता । ९ हर्षित । १० बाण को धनुष की ज्या पर चढ़ाना । ११ रटा ।

तजिकुल कानि पीय मुख निरखत सीस नाइ आसीस पढ़ी ॥
भई देह जो खेह [1] करम बस ज्यों तट गंगा अनल दढ़ी [2] ।
सूरदास प्रभु दृष्टि सुधा निधि मानो फेरि बनाइ गढ़ी ॥ ७ ॥

[सीता का जनक के प्रण पर सोच करना]

राग सारंग

चितै रघुनाथ वदन की ओर ।
रघुपति सौं अब नेम हमारो विधि सों करति निहोर ॥
यह अति दुसह पिनाक पिता प्रण राघव बयस किसोर ।
इन ते दीरघ धनुष चढ़ै क्यों यह सखि संसय मोर ॥
सिय अंदेस [3] जानि सूरज प्रभु लियो करज [4] की कोर ।
टूटत धनु नृप लुके जहाँ तहँ ज्यों तारागण भोर [5] ॥ ८ ॥

[धनुष का टूटना]

राग नट

ललित गति राजत श्री रघुबीर ।
नरपति सभा मध्य भे ढाढ़े जुगल हँसत मतिधीर ॥
अलख अनंत अमित महिमा बल कटि कसि रख्यो तुनीर ।
लघु धनु काक पच्छ सिर सोहत इक इक द्वै द्वै तीर ॥
भूषन बिबिध विसद अंबरयुत [6] सुन्दर श्याम सरीर ।
देखत मुदित चरन परसैं सुर व्योम विमानन भीर ॥
प्रमुदित जनक निरखि अम्बुज मुख विगत नयन [7] मन पीर ।
तात कठिन प्रण भानि जानि जिय जनक सुता आधीर ॥ ९ ॥

---

१ मिट्टी । २ जली । ३ चिन्ता । ४ नख । ५ प्रातःकाल । ६ वस्त्र सहित । ७ पलक न भाँजते हुये ।

करुणामय जब चाप लियो कर बाँधि सुदृढ़ कटि चीर।
भुवभृत [1] सीस नमित जो गर्व गत पावक संच्यो [2] नीर॥
डुलत महीधर [3] भौ फनपति [4] चल कूरम अति अकुलान।
दिग्गज चलित खलित [5] मुनि [6] आसन इंद्रादिक भयमान॥
रवि मग तज्यो फरकि ताके इत उत पथ गए कि आन।
सिव विरंचि [7] व्याकुल भये धुनि सुनि जब तोरयो भगवान।
भनन [8] शब्द प्रगटित अति अद्भुत अष्ट दिशा नभपूर [9]।
श्रवण-हीन [10] सुनि भये अष्टकुल नाग बगरि [11] भय चूर॥
अष्ट श्रवण पूरित ब्रह्मा सुनि, सदा सुभट भय पूर।
मोहित सकल सयान [12] जानि जिय महा प्रलय को पूर॥
पाणि ग्रहण रघुवर बर कीनो जनक सुता सुख दीन।
जय जय धुनि सुनि करत अमरगन [13] नर नारी लव लीन॥
दुष्टन दुष्ट, संत संतन को नृप [14] ब्रत पूरन कीन।
मिथिला पति दसरथहि बुलावा सूर बधावा दीन॥ १०॥

[दशरथ का आना और विवाह होना]

राग सारंग

महाराज दसरथ तहँ आये।
ठाढे जाय जनक मन्दिर में मोतिन चौक पुराये॥
विप्र लगे धुनि वेद उचारन जुवतिन मंगल गाये।
सुर गँधरवगन कोटिन आये गगन [15] विमानन छाये॥

---

१ राजा। २ निकाल डाला। ३ पर्वत। ४ शेषनाग। ५ स्खलित। ६ सप्तर्षि। ७ ब्रह्मा। ८ धनुभंग। ९ आकाश। १० सर्प, चक्षुःश्रवा। ११ इतस्ततः भाग के। १२ बुद्धिमान, पण्डित। १३ देवगण। १४ जनक। १५ आकाश।

राम लच्छिमन भरत सत्रुहन व्याह निरखि सुखपाये ।
सूर भयो आनंद नृपति सुन दिवि दुंदुभी बजाये ॥ ११ ॥

[कंकण मोचन]

राग असावरी

कर कंपै कंकण नहिं छूटै ।

राम सुपरस मगनमय कौतुक निरखि सखी सुख लूटैं ॥
गावत नारि गारि सब दै दै तात भ्रात की कौन चलावै ।
तब कर डोर छुटै रघुपति जू जो कौसल्या माय बुलावै ॥
पूंगी फलयुत जल निरमल धरि आनी भरि कुंडी[1] जो कनक की।
खेलत जुआ जुगल जुवतिन में हारे रघुपति जीति जनक की ॥
घुरे[2] निसान[3] अजिर[4] गृह मंगल, विप्रवेद अभिषेक करायो ।
सूर अमित आनँद मिथिलापुर सोइ सुखदेव पुरानन गायो ॥१२॥

[मिथिला से बिदा होना]

राग सारंग

दसरथ चले अवध आनंदत ।

जनक राइ बहु दाइज[5] दै कर बारबार पद बंदत ॥
तनया जामातनि को सुमुदित नैन नीर भरि आये ।
सूरदास दसरथ आनंदित चले निसान बजाये ॥ १३ ॥

---

१ बड़ा जलपात्र । २ बजे । ३ डंका । ४ आँगन । ५ दहेज ।

[मार्ग में परशुराम का मिलना]

परसुराम तेहि अवसर आयो।
कठिन पिनाक कह्यो किन तोर्यो क्रोधवन्त अस बचन सुनायो॥
विप्र जानि रघुबीर धीर दोउ हाथ जोरि सिर नायो।
बहुत दिनन को हुतो पुरातन हाथ छुवत टूटि आयो॥
तुम तौ द्विज कुल पूज्य हमारे हम तुम कौन लराई।
क्रोधवन्त कछु सुन्यो नहीं, लयो सायक[1] धनुष चढ़ाई॥
तबहू रघुपति क्रोध न कीनो धनुष बान संभारयो।
सूरदास प्रभुरूप समुझि पुनि परसुराम पगु धारयो[2]॥ १४॥

[अयोध्यापुरी आगमन]

अवध पुर आये दसरथ राई।
राम लक्षिमन भरत सत्रुहन सोभित चारों भाई॥
घुरत निसान मृदंग संख धुनि भेरि झांझ सहनाई।
उमगे लोग नगर के निरखत अति सुख सबहिन पाई॥
कौसल्या आदिक महतारी आरति[3] करति बनाई।
यह सुख निरखि मुदित सुर नर मुनि सूरदास बलि जाई॥ १५॥

✱ इति बालकांडम् ✱

---

१ बाण २ पैर पड़े। ३ आरती।

अयोध्याकांड

[दशरथ का रामचन्द्र को राज देने का विचार करना और कैकयी का बनवास के लिये कहना]

राग सारंग

महाराज दसरथ मनधारी ।

अवध पुरी को राज राम दै लीजै व्रत बनचारी[1] ॥
यह सुनि बोली नारि कैकयी अपनो बचन संभारो[2] ।
चौदह बरस रहैं बन राघव छत्र भरत सिर धारो ॥
यह सुनि नृपति भयो ब्याकुल अति कहत कछू नहिं आई ।
सूर रहे समुझाइ बहुत पै कैकयि हठ नहिं जाई ॥ १ ॥

[दशरथ का रामलक्ष्मण को बुलाना]

राग कान्हड़ा ।

महाराज दसरथ पुनि सोवत ।

हा ! रघुपति लछिमन बैदेही सुमिरि सुमिरि गुण रोवत ॥
त्रिय चरित्र मय मत्त[3] न समुझत उठि पखाल[4] मुख धोवत ।
यह विपरीति रीति कछु औरै बार बार मुख जोवत ॥
परम कुबुद्धि कह्यो नहि समुझत रामलषन हँकराये[5] ।
कौशल्या अति परम दीन ह्वै नैन नीर भरि आये ॥
विह्वल तन मन चकित भई सुनि, सुप्रतच्छ सुपिनाये[6] ।
गद गद कंठ सूर कोसलपुर सोर सुनत दुख पाये ॥२॥

---

१ वानप्रस्थ । २ स्मरण करो । ३ मदमत्त । ४ प्रक्षाल, मुख धोने का पात्र । ५ बुलाये । ६ स्वप्न में ।

[राम का दशरथ के पास जाना और कैकयी का कहना कि राजा ने तुमको बनवास दिया है]

राग सारग

सकुचन कहत नहीं महाराज।
चौदह बरष तुम्हें बन दीन्हों, मम सुत को निजराज।
तब आयसु सिर धरि रघुनायक कौसल्या ढिग आये।
सीस नाइ बन आज्ञा मांग्यो सूर सुनत दुख पाये॥ ३॥

[रामचन्द्र का जानकी को समझाना]

राग गूजरी

तुम जानकी जनक पुर जाहु।
कहाँ जाइ हम संग भरमिहौ, बन दुख सिंधु अथाहु॥
तजि वह जनकराज भूषण सुख कत तृण तलप[1] विपिनि फल खैहौ।
ग्रीषम कमल बदन कुम्हिलैहै, तजि सर निकट दूर कित न्हैहौ॥
जिन कछु वृथा सोच मन करि हौ मातु पिता सुख दैहौ।
तुम फिरि रहो संग जो मेरे, तो बन बसि पछितैहौ॥
होनी होइ कर्म क्षत रेखा करिहौं तासु बचन निरबाहू।
सूर सत्य जो पति व्रत राखो तौ हठ तजौ, संग जनि जाहू॥४॥

---

१ तल्प, बिस्तर।

[जानकी का उत्तर]

राग केदारा

ऐसी जिय जिनि धरो रघुराई ।
तुमसों तजि प्रभु मोसों दासी अनत[1] न कहूं समाई ॥
तुमरो रूप अनूप भानु ज्यों जब नैननि भरि देखों ।
ता छिन हृदय कमल परिफुल्लित[2] जनम सफल करि लेखों ॥
तुमरे चरन कमल सुखसागर यह व्रत हौं प्रतिपलिहैं ।
सूर सकल सुख छाड़ि आपुनो वन विपदा संग चलिहैं ॥६॥

[राम का लक्ष्मण को समुझाना]

राग-गूजरी

तुम लछिमन निज पुरहि सिधारो ।
बिछुरन-भेंट[3] देहु लघुबंधू जियत न जैहै सूल तुम्हारो ॥
यह भावी कछु और काज[4] है, को सु जो याको मेटन हारो ।
तुम मति करो अवज्ञा[5] नृप को यह दूषण तो आगे भारो ॥
याको कहा परेखो हरषो मधु छीलर[6] सरिता पति खारो ।
सूर सुमित्रा अंक दीजियो कोसल्या परनाम हमारो ॥७॥

[लक्ष्मण बिनय]

राग सारंग

लछिमन नैन नीर भरि आयो ।
उत्तर कहत कछू नहिं आयो, रह्यो चरन लपटायो ॥

---

१ अन्यत्र। २ प्रफुल्लित । ३ वह मिलन जो विदा के समय होता है । ४ और काज से यहाँ देवताओं के काज अर्थात् असुरों का मारा जाना सूचित किया है । ५ बात न मानना क्योंकि बनवास राम ही को मिला था। ६ झील ।

अन्तर्य्यामी प्रीति जानि कै लछिमन लीनो साथ।
सूर दास रघुनाथ चले वन पिता वचन धरि माथ ॥८॥

[दशरथ वचन राम प्रति]

रघुनाथ पियारे आजु रहो हो।
चारि याम विसराम हमारे छिन छिन मीठे वचन कहो हो ॥
वृथा होइ बरु वचन हमारो बरु केकयी जिव क्लेस सहो हो।
आतुर है अब छाड़ि कोसलपुर प्राणजिवन कित चलन चहो हो ॥
बिछुरत प्रान पयान करैंगे, रहो आजु पुनि पन्थ गहो हो।
अब सूरज दिन दरसन दुर्लभ झपटि कमल कर कंठ गहो हो ॥९॥

[सुमन्त प्रत्यागमन]

राग कान्हरा

फिरि फिरि नृपति चलावत बात।
कहो सुमंत कहाँ ते पलटे प्रान जिवन कैसे बनजात ॥
हा! हा! राम लखन अरु सीता फल भोजन जु डसावे [1]पात।
है वियोग सिर जटा धरैं द्रुमचर्म [2] बसन [3] सब गात ॥
बिनरथ रूढ़[3] दुसह दुख मारग, बिनु पदत्रान [5] चलैं दुउ भ्रात।
एहि विधि सोच करत अति ही नृप जन[6] की ओर निरखि बिलखात।
इतना सुनत सिथिलि सब आये प्रेमहि ढारे अश्रु पात।
ता दिन सूर सहर सब सकित सब रस नेह तज्यो पितुमात ॥

१ बिछावें। २ वृक्ष की छाल। ३ वस्त्र। ४ सवारी। ५ जूता। ६ सुमन्त।

[गङ्गातट गमन और अहल्या तरन]

राग सारंग

गंगा तट आये श्री राम।
तहाँ पषान रूप पग परसे गोतम ऋषि की बाम [1]।
गई अकास देव तनु धरि के अति सुंदर अभिराम॥
सूरदास प्रभुपतित उधारन विरद किंतिक यह काम ॥१०॥

[लक्ष्मण का केवट को नाव लाने के लिये बुलाना]

राग मारू

रे भैया केवट ले उतराइ।
रघुपति महाराज इत ठाढ़े तैं कित नाव दुराई [2]॥
अबहिं शिलाते भई देव गति जब पगु रेणु छुआई।
हौं कुटुम्ब काहे प्रतिपारौं [3] वैसी यह ह्वै जाई॥
जाके चरन रेणु की महिमा सुनियतु अधिक बड़ाई।
सूरदास प्रभु अगनित महिमा वेद पुराननि गाई॥ ११॥

[केवट बचन]

राग कान्हरा

नौका नाहीं हौ लै आऔं।
प्रगट प्रताप चरण को देखूं ताहि कहाँ लै जाऊं॥
कृपासिंधु पै केवट आयौ कंपत करत जु बात।
चरण परसि पाषान उड़त है मति बेरी [4] उड़ि जात॥
जो यह बधू होय काहू की दारु स्वरूप धरे।

१ स्त्री। २ दूर ले गया। ३ प्रतिपालूं। ४ नौका, काष्ठ।

छूटे देह जाई सरिता तजि पग सों परस करे॥
मेरी सकल जीविका यामें रघुपति मुक्ति न कीजै।
सूरजदास चढो प्रभु पाछे रेणु पखारन दीजै॥ १२॥

रामकली

मेरी नौका जनि चढ़ो, त्रिभुवन पतिराई।
मों देखत पाहन उड़े मेरी काठ की नाई॥
मैं खेवी ही[1] पार को तुम उलटि मंगाई।
मेरो जिय योंही डरे मति होइ शिलाई[2]॥
मैं निर्बल मेरे बल नहीं जो और गढ़ाऊं।
मेरो कुटुंब माहीं लग्यों ऐसी कहँ पाऊं॥
मैं निरधन मेरे धन नहीं, परिवार घनेरो।
सेमर ढाक पलास काटि बांधों तुम बेरो[3]॥
बार बार श्रीपति कहें, केवट नहीं मानै।
मन परतीत न आवै उड़ती ही जानै॥
नियरे हीं जल थाह है, चलो तुम्हैं बताऊं।
सूरदास की बिनती नाके[4] पहुंचाऊं॥ १३॥

[मार्ग में पुरवासी स्त्रियों का राम को ओर संकेत कर के सीता से पूछना कि यह कौन हैं]

राग काली

इहि में को पति त्रिया तुम्हारो पुरजन पूछें धाई।
रात्रिय नयन मयन की मूरति सयनन मांहि बताई॥

१ खे ले गया था। २ शिलाकी बात अर्थात् शिला के [illegible] स्त्री होना। ३ बेड़ा। ४ नाके पर जहां उतार है।

सखी री कौन तिहारो जात ।
राजिव नैन धनुष कर लीन्हें वदन मनोहर गात ।
लज्जित रही पुर वधू पूँछे, अंग अंग मुसकात ॥
अति मृदु वचन पंथ वन विहरत सुनियत अद्भुत बात ॥
सुंदर नैन कुंवर सुंदर दोउ सूर-किरन कुम्हलात ।
देखि मनोहर तीनो मूरति त्रिविधि[१] ताप तनु जात ॥ १४ ॥

[पुरवासी स्त्रियों का कथन]

घनाश्री

कहि धौं सखी बटोही[२] को हैं ।
अदभुत वधू लिये संग डोलत देखत त्रिभुवन मोहैं ।
परम सुशील सुलच्छन जोड़ी विधि की रची न होई ।
काकी अब उपमा यह दीजै देह धरे धौं कोई ॥
गए सकल मिलि संग दूरि लौं मन न फिरत पुरवासी ।
सूरदास स्वामी के बिछुरत भरि भरि लेत उसासी ॥ १४ ॥

घनाश्री

तात वचन रघुनाथ जबै वन गौन कियो ।
मंत्री गयो फिरावन रथ लै रघुवर फेरि दियो ॥
भुजा छुड़ाइ तोरि तृन[३] ज्योंही कर प्रभु निठुर हियो ।
सुरति[४] साल ज्वाला उर अंतर ज्यों पावकहि पियो ॥
यह सुनि तात तुरत तनु त्यागो बिछुरत तात बियो[५] ।
इह विधि विकल सकल पुरवासी नाहीं चहत जियो ॥

१ दैहिक, दैविक और भौतिक । २ राही । ३ संबंध तोड़ कर ४ स्मृति । ५ दोनों ।

चंदन अगर सुगंध और सब विधि करि चिता बनायो।
चले विमान[1] संग गुरु पुरजन तापर राज पौढ़ायो[2]॥
दिन दस लौं जल कुंभ[3] साजि सुचि दीप दान करवायो।
दीनों दान बहुत नाना विधि यहि विधि करम करायो[5]॥
सब करतूति कैकयी के सिर जिन अभिलाष उपायो।
यहि विधि सूर अयोध्या वासी दिन दिन काल गँवायो॥२०॥

[भरत का राम के पास उन्हें फेरने जाना]

राग सारग।

राम पै भरत चले अकुलाई।
मनही मन सोचत मारग में दई[6] फिरैं क्यों रघुराई॥
देखि दास चरणन लपटानो गदगद कंठ न कछु कहि आई।
लीनो हृदय लगाय सूर प्रभु पूँछत भद्र[7] भये क्यों भाई॥२१॥

[भरत का सिर मुड़ाये देख राम का विलाप]

राग केदारा।

भरत मुख निरखि राम बिलखाने।
मुंडित केश शीश विह्वल दोउ उमगि कंठ लपटाने॥
तात मरन सुनि श्रवन कृपा निधि धरनि परे मुरझाई।
मोह मगन लोचन जलधारा विपति हृदय न समाई॥
लोटत धरनि परी सुनि सीता समुझति नहिं समुझाये।

---

१ अरथी। २ लेटाया। ३ वह जल पूर्ण घड़ा जो प्रेत कर्म में पीपल के वृक्ष में लटकाया जाता है। ४ आकाश दीप जो प्रेत के लिये सायंकाल जलाया जाता है। ५ उत्पन्न किया। ६ दैव। ७ मुंडित।

दारुन दुःख दवा[1] ज्यों तृन वन नाहीं बुझत बुझाये ॥
दुर्लभ भयो दरस दसरथ को भयो अपराध हमारे ।
सूरदास स्वामी करुणा-मय नैन न जात उघारे ॥२२॥

[भरत का राम से पलटने की प्रार्थना करना और राम का कहना कि मैं पिता की आज्ञा नहीं टाल सकता, भरत का पादुका लेकर लौटना]

केदारा ।

तुम विमुख रघुनाथ कौन विधि जीवन कहा बनै ।
चरण सरोज बिना अवलोके को सुख धरनि गनै ॥
हठ करि रह्यो चरग नहि छोड़ौं नाथ तजौ निठुराई ।
परम दुखी कौसल्या जननी चलो सदन रघुराई ॥
चौदह बरस तात की आज्ञा मो पै मेटि न जाई ।
सूर स्वामि पावँरी[2] सीस धरि भरत चले बिलखाई ॥२३॥

[राम का चलते समय भरत को उपदेश देना ।]

मारू

बंधू करियो राज सँभारे ।
राज नीति अरु गुरु की सेवा गय विप्र प्रति पारे ॥
कौसल्या कैकई सुमित्रा दरसन साँझ सकारे ।
गुरु वसिष्ठ अरु मिलि सुमंत सों परजा हितु विचारे ॥
भरत गात सीतल ह्वै आयो नैन उमगि जल धारे ।
सूरदास प्रभु दई पावँरी अवध पुरी पग धारे ॥ २४ ॥

---

१ आग । २ खड़ाऊँ ।

[रामचन्द्र का कौशल्यादि से मिलकर बिदा करना और चित्रकूट से दंडक वन का चलना।]

सारंग।

राम यों भरत समुझायो।
कौसल्या कैकई सुमित्रा को पुनि पुनि सिर नायो॥
गुरु वशिष्ठ अरु मिलि सुमंत सों अति ही प्रेम बढ़ायो॥
बालक प्रति पालक तुम दोऊ दसरथ लाड़ लड़ायो।
भरत सत्रुहन करि प्रणाम रघुवर हित कंठ लगायो॥
गद गद गिरा सजल अति लोचन हिय सनेह जल छायो।
कीजे यहै विचार परस्पर राज नीति समुझायो॥
सेवा मातु प्रजा प्रति पालन यह युग युग चलि आयो।
चित्रकूट ते चले ताकि वन मन विश्राम न पायो॥
सूरदास वलि गयो राम के निगम नेति जेहि आयो॥२५॥

इति

आरण्यकांड

[दंडक बन में पहुंचना और सूपनखा का कान नाक काटा जाना]

रागमारू

दण्डक बन आये रघुराई ।
काम विवस व्याकुल उर अन्तर राछसि एक तहँ आई ॥
हँसि करि राम कह्यो सीता सों यहि लछिमन के निकट पठाई ।
भृकुटी कुटिल अरुण अति लोचन अग्नि सिखा मुख कह्यो फिराई ॥
ए बौरी ! भई मदन विवस, धरे ध्यान चरण रघुराई ।
विरह व्यथा तनु गई लाज छुटि बार बार अकुलाई ॥
रघुपति कह्यी निलज्ज निपट तू नारि राक्षसी ह्यां ते जाई ।
सूर प्रभु वेधी श्रुति वाके छेद्यो नाक गई खिसियाई ॥१॥

[खर दूषण का आना और मारा जाना सूपनखा का लंका जाकर रावण से सब वृतान्त कहना और रावण का वहां आना]

राग सारंग ।

खरदूषन यह सुनि उठे धाये ।
तिनके संग अनेक निशाचर रघुपति आश्रम आये ॥
श्रीरघुनाथ [1]लक्ष तें मारे कोउ एक गये पराये ।
सूपनखा ये समाचार सब लंका जाई सुनाये ॥

दस कंधर मारीच निसाचर यह सुनिकै अकुलाये।
दंडक वन आये छल के हित सूर ठग्यो रघुराये ॥२॥

[मारीच का मृगा बन कर आना, राम का उसके पीछे जाना, रावण का सीता को हरना]

राग केदारा।

सीता पुहुप वाटिका लाई।
नाना विधि पांति पांति सुन्दर मनु कंचन की है लता लगाई ॥
बार बार शोकादिक के तरु प्रेम प्रीति सींचे रघुराई।
अंकुर मूल भये सो पोषे करम भोग फल लागे आई ॥
मृग स्वरूप मारीच धस्यो तब फेरि चल्यो मारग जो देखाई।
श्री रघुनाथ धनुष कर लीनो लागत बान देव गति पाई ॥
टेर [१] "लखन" सुनि विकल जानकी अति आतुर उठि धाई।
रेखा खैंची बार बंधन की हा रघुबीर! कहा हो भाई ॥
रावन तुरत विभूति लगाये कहत हस्त भिक्षा दै माई।
दीन जानि सुधि आनि भजन की प्रेम प्रीति भिक्षा लै जाई ॥
हरि सीता लै चल्यो डरत जिय मानों रंक महा निधि पाई।
सूर सोग [२] पछताति यहै कहि करम दसा मेटी नहिं जाई ॥३॥

[मृग के पीछे दौड़ना]

सारंग

राम धनुष अरु सायक सांधे [१]।
सिय हित मृग पाछे उठि धाये बसन बहुत ढिग बाँधे ॥

---

१ आवाज "हा लक्ष्मण" २ शोक से। १ संधान किया।

नव घन नील सरोज बरन वपु विपुल बाहु क्षत्री गुन[1] काँधे ।
इन्दु वदन राजिव नैन वर शीश जटा शिव सम शिर बाँधे ॥
पालत सिर्जत संतत अण्ड अनेक अवधि पल आधे ।
सूर भजन महिमा दिखरावत इमि अति सुगम चरन अवराधे ॥४॥

[सीता हरण—रावण गिद्ध युद्ध]

राग मारू

इहि विधि वन वसे रघुराइ ।
डासि कै तृण भूमि सोवत द्रुमन के फल खाइ ॥
जगत जननी करी वारी[2] मृगा चरि चरि जाइ ।
कोपि कै प्रभु वान लीनो तबहि धनुष चढ़ाई ॥
जनक-तनया धरि अगिन में छाया रूप बनाई ।
इह कोऊ नहिं भेद जानै विना श्री रघुराई ॥
कह्यो अनुज सों रहो यहाँ तुम छाड़ि जिनि कहुं जाइ ।
कनक मृग मारीच मार्यो गिरयो 'लषण" सुनाइ ॥
खोदि दई सुरेख सीता कह्यो सो कह्यो न जाइ[3] ।
तबहिं निशिचर कियो यह छल लियो सीय चुराई ॥
गिद्ध ताको देखि धायो लख्यो सूर बनाइ[4] ।
कटे पंख गिरयो, असुर तब गयो लंका धाइ ॥५॥

---

१ क्षत्रिय का यज्ञपवीत जो सन का होता था । २ वाटिका ।
३ सीता के उस कटु वचन से संकेत है जो उसने लक्ष्मण से उस समय कहा था जब मारीच के पुकारने का शब्द सुन पड़ा था ।
४ भली भाँति ।

[रावन का सीता को लंका ले जाकर अशोक वाटिका में रखना]

राग सारंग

जनक सुता को रावन राख्यो जाइ ।
भूखरु प्यास नींद नहिं आवै गई बहुत मुरझाइ ॥
रखवारी को बहुत निशिचरी दीनी तुरत पठाइ ।
सूरदास सीता तेहिं निरखत मनही मन सकुचाइ ॥६॥

[रामचन्द्र का विलाप]

राग केदारा

रघुपति कहि प्रिय नाम पुकारत ।
हाथ धनुष लै मुक्त मृगहि किये चकृत भये दिशा विदिश निहारत॥
निरखत सून भवन जड़ ह्वै रहे खन लोटत धर वपु [1] न सँभारत ।
हा सीता! सीता!कहि श्रीपति उमगि नयन जल भरि भरि ढारत॥
लागि शेष उर [2] बिलखि जगत गुरु अद्भुत गति नहिं विचारत ।
चेतत चेतत सूर सीता हित मोह मेरु दुख टरत न टारत ॥

सुनो अनुज यहि वन इतननि मिलि जानकी प्रिया हरी ।
कछु इक अङ्गनि की सहिदानी [3] मेरी दृष्टि परी ॥
करि केहरि [4] कोकिल वाणी अरु शशि मुख प्रभा खरी ।
मृग मू [5] सी नैननि की शोभा जाय न गुप्त करी ॥
चंपक वरन चरन कर कमलनि दाडिम दशन लरी ।
गति मराल अरु विंब अधर छवि अहि अनुप कबरी [6] ॥

---

१ शरीर । २ लक्ष्मण । ३ चिन्ह । पता । प्रमाण । ४ सिंह । ५ चुराया । ६ चोटी ।

अति करुणा रघुनाथ गुसाईं युग भर जात घरी।
सूरदास प्रभु प्रिया प्रेमवश निज महिमा बिसरी ॥७॥

फिरत प्रभु पूछत बन द्रुम बेली।
अहो बन्धु! काहू अवलोकी इह मग बधू अकेली॥
अहो बिहंग! अहो पन्नग[1] मृग या कंदर के राई[2]।
अबकी बार मम बिपति मिटाओ जानकि देहु बताई॥
चपंक पुहुप बरन तन सुन्दर मनो चित्र अवरेखी[3]।
हो! रघुनाथ निशाचर के संग चली जाति हौ देखी॥
यह सुन धावत धरनि चरन की प्रतिमा[4] खगी पंथ में पाई।
नैन नीर रघुनाथ सानिकै शिव ज्यों गात चढ़ाई॥
कहुं हिय हार कहूं कर कंकन कहुं अचंर कहुँ चीरा।
सूरदास बन बन अवलोकत बिलख बदन रघुवीरा ॥८॥

[जटायु से भेट होना और उसका समाचार कहना।]

राग केदारा।

तुम लछिमन या कुंज कुटी में देखो नैन निहारी।
कोउ एक जीव नाम मम लै लै उठत पुकारि पुकारि॥
इतनी कहत कंठ ते कर गहि लीनो धनुष संभारि।
कृपा निधान नाम हित धाये अपनी बिपति बिसारि॥
अहो विहंग कहो आपनो दुख पूछत तब जो मुरारि।
केहि मति-मूढ़ बिध्यो तनु तेरे किधौं बिछोही नारि॥
श्री रघुनाथ रमनि[5] जग जननी जनक नरेश कुमारि।
ताको हरण कियो दशकंधर हौं जो लग्यो गुहारि[6]॥

१ सर्प २ कन्दर के राई—सिंह। ३ लिखी हुई। ४ धूल में चरण का चिन्ह। ५ वधू। ६ वह आर्त शब्द जो सहायतार्थ विपत्ति में किया जाता है। सहायता।

इतनी सुनि कृपालु कोमल प्रभु दियो धनुष महि डारि।
मानो सूर प्रान लै रावण गयो देह को भारि ॥९॥

[जटायु का शरीर त्यागना और रामचन्द्र का उसे दग्ध करना।]

राग केदारा

रघुपति निरखि गीध सिर नायो।
कहि कै बात सकल सीता की तनु तजि चरन कमल चितलायो॥
श्री रघुनाथ जानि जन आपनो अपने कर करि ताहि जरायो।
सूरदास प्रभु दरस परस करि हरि के लोक सिधायो ॥१०॥

[शबरी के आश्रम पर जाना।]

शबरी आश्रम रघुपति आये।
अर्घासन [1] दै प्रभु बैठाये॥
खाटे तजि फल मीठे लाई।
जूठे भये सु सहज सुनाई॥
अंतर्य्यामी अति हित जाने।
भोजन कीने स्वाद बखाने॥
जाति न काहू की प्रभु जानत।
भक्त भाव हरि युग युग मानत॥
करि दंडवत भई बलिहारी।
पुनि तनु तजि हरि-लोक [2] सिधारी॥
सूर प्रभू करुणा-मय भये।
निज कर करि तिल-अंजलि दये ॥११॥

इति

---

१ हाथ धोने का जल २ वैकुंठ।

किष्किंधा काण्ड।

[हनुमान मिलन]

राग सारंग

ऋष्य मूक पर्वत विख्याता।
इक दिन अनुज सहित तहँ आये सीता-पति रघुनाथा॥
कपि सुग्रीव बालि के भय ते रह्यो हुतो तहँ आई।
त्रास मानि तब पवन पुत्र को दीनो तुरत पठाई।
को यह बीर फिरै बन भीतर किहि कारण इहँ आये।
सूर प्रभू के आय निकट कपि हाथ जोरि शिर नाये॥१॥

[हनुमान राम प्रश्नोत्तर, सुग्रीव परिचय]

राग मारू।

मिले हनू पूछी अस प्रभू बात।
महा मधुर प्रिय वाणी बोलत "शाखामृग! कौने तै तात?"॥
"अंजनि को सुत, केसरि के कुल पवन गवन उपजायो गात"।
"तुम को बीर! नीर भरि लोचन, मीन हीन जल ज्यों मुरझात?"॥
"दशरथ कुल, कौसल पुरवासी, त्रिया हरी तातें अकुलात"।
"ये गिर पति कपि पति सुनियत हैं बालि त्रास कैसे दिन जात"॥
महा दीन बल हीन विकल अति पवन पूत देखत बिलखात।
सूर सुनत सुग्रीव चले उठि चरन गहे पूछी कुशलात॥२॥

[बालि को मारना, सीता के आभूषण देखना, सप्त-ताल वेधन]

राग मारू

भाग्य बड़े इहि मारग आये
गद्‌गद कंठ शोक सों रोवत वारि विलोचन छाये॥
महाधीर गंभीर बचन कहि जामवंत समुझाई।
बढ़ी परस्पर प्रीत रीति तब भूषण[1] सिया दिखाई॥
सप्त ताल शर[2] साधि बालि हति मन अभिलाष बढाये।
सूरदास प्रभु भुजनि के बल, अमल, विमल यश गाये॥३॥

[सुग्रीव का अभिषेक]

राग सारंग।

राज दियो सुग्रीव को तिन हरि यश गायो।
पुनि अंगद को बोलि ढिग,[3] या विधि समुझायो॥
होनि हार सोइ होत है नहिं जात मिटायो।
सूरदास प्रभु चतुरमास[4] ता ठौर बितायो॥४।

[मुद्रिका सहित सुग्रीव आदि को सीता के खोज में भेजना और उनका संपाति से मिलना]

राग सारंग।

श्री रघुपति सुग्रीव को निज निकट बुलायो।
लीजे सुधि अब सीय की यह कहि समुझायो॥

---

१ सीता के आभूषण २ संधान कर के—बेधकरके
३ पास। ४ पावस ऋतु।

जामवंत अंगद हनू उठि माथो नायो।
हाथ मुद्रिका दई [1] प्रभु संदेश सुनायो॥
आयो तीर समुद्र के कछु शोध [2] नहिं पायो।
संपाती तंह मिल्यो सूर यह वचन सुनायो।।५॥

[संपाती का सीता की अवस्था कहना]

राग सारंग।

बिछुरी मनो संग ते हिरनी।
चितवति रहति चकित चारों दिशि उपजी विरह तनु जरनी॥
तरवर मूल अकेली ठाढ़ी दुखित राम की घरनी।
बसन कुचील [3] चिहुर [4] लपटाने देह पितांवर बरनी [5]॥
लेत उसास नयन जल भरि भरि धुजु [6] पकरी धरि धरनी।
सूर सोच जिय पोच [7] निसाचर, राम नाम की शरनी।।६॥

॥ इति॥

१ दे कर। २ पता। ३ मैले। ४ चिकुर-बाल। ५ वर्ण कायर, नीचा। ६ धुजु-जिद्द पकड़ी है पकड़ करके पृथ्वी को या धरनीं अर्थात् वृक्ष का तना (धरन)। ७ कायर, नीच।

सुंदर कांड।

[बानर मंत्रणा, हनुमत्—सिंधुतरन]

राग केदारा।

तब अंगद इक बचन कह्यो।
को तरि सिंधु सिया सुधि लावै केहि बल इतो लह्यो॥
इतनो बचन श्रवण सुनि हरष्यो हँसि बोल्यो जमुवंत।
या दल मध्य प्रगट केशरिसुत जाहि नामु हनुमंत॥
वहै लाइहै सिय सुधि छिन में अरु आइहै तुरंत।
उन प्रभाव त्रिभुवन को पायो वाके बलहि न अंत॥
जो मन करै एक बानर में छिन आवै छिन जाइ।
स्वर्ग पताल मही गम ताको कहिये कहां बनाय॥
केतिक लंक उपारि बाम कर लै आवै उचकाय[1]।
पवन पुत्र बलवंत बज्रतन को वाके समुहाइ[2]॥
लियो बुलाइ मुदित चित ह्वै कै बच्छ! तंबोलहिं[3] लेहु।
ल्यावहु जाइ जनक तनया सुधि रघुपति को सुख देहु॥
पौरि पौरि प्रति फिरहु विलोकत गिरि कंदर बन गेह।
समय विचारि मुद्रिका दीजयो सुनो मंत्र[4] सुत येह॥
लियो तंबोल माथ धरि हनुमत कियो चतुर्गुन गात।
चढ़ि गिरि शिखर शब्द इक उचर्यो गगन उठ्यो आघात[5]॥
कंपत कमठ, शेष, बसुधा,[6] नभ रवि रथ भयो उतपात[7]।

---

१ उछालता हुआ २ सुकाबला हो सकता है। ३ पान। बीड़ा।
४ सलाह। ५ प्रतिध्वनि। ६ भूमि। ७ उपद्रव।

मनौं पच्छ समेतहि लागे उड्यो अकाशहि जात ॥
चकृत सकल परस्पर; बानर बीच करी किलकारि ।
तहां इक अद्भुत देखि निसचरी सुरसा मुख विस्तारि ॥
पवन पुत्र मुख पैठि पधारे तहां लगी कछु बार ।
सूरदास स्वामी प्रताप बल उतर्‌यो जलनिधि पार ॥ १ ॥

[हनुमत-लंका दर्शन अशोक बन प्रवेश]

राग धनाश्री ।

लखि लोचन सोचे हनुमान ।
चहुँ दिसि लंक दुर्ग दानवदल कैसे पाऊं जान ॥
सौ जोजन विस्तार कनकपुरि चकरी[1] जोजन बीस ।
मनो विश्वकर्मा कर अपुने रचि राखो गिरि सीस ॥२॥

राग मारू ।

गयो कूद हनुमंत जब सिन्धु पारा ।
शेष के सीस लागे कमठ पीठ सों धँस्यो गिरिवर सबै तासु भारा ॥
शोच लाग्यो करन यहै ध्यौं जानकीकै कोऊ और मोहिं नहिं चिन्हारा ।
लंक गढ़ माहिं अकास मारग गयो चहूंदिश बज्र[2] लागे किंवारा ॥
पौरि सब देखि आशोक बन में गयो निरखि सीता छप्यो डारा ।
सूर अकाश बाणी भई तब तहां "है यहै" "है यहै" करि जुहारा ॥२॥

[निशिचरी का सीता को समझाना और सीता का उत्तर]

समुझि अब निरखि जानकी मोहिं ।
बड़ो भाग्य गुण अगम दशानन शिव बर दीनो तोहिं ॥

---

१ चौड़ी । २ दुर्भेध

केतक राम कृपणता कीनी पितुमातु घटाई कानि[१]।
तेरे पिता जनक की सीता! कीरति कहौं बखानि॥
विधि-संयोग[२] टरत नहिं टारो बन दुख देख्यो आनि।
अब रावण घर विलसि सहज सुख कह्यो हमारो मानि॥
इतनो बचन सुनत शिर धुनि कै बोली सिया रिसाई।
"अहो ढीठ! मति मुग्ध निशचरी! सन्मुख बैठी आई॥
तब रावण को बदन देखिहैं दश शिर शोणित न्हाई।
कै तन देऊँ मध्य पावक के कै बिलसैं रघुराई।"
"जो ये पतिव्रता व्रत तेरे जीवन बिछुरी काइ?।
तब कि न मुई, कहौ तुम मोसे भुजा गही जब राई?॥
अब झूठो अभिमान करति सिय झखति[३] हमारे ताई।
सुख ही रहसि मिलो रावण को अपने सहज सुभाइ॥"
"जो तू रामहिं दोष लगावै करौं प्राण के घात।
तुमरो कुल को बेर[४] न लागै होत भस्म संघात॥
उनके क्रोध जरै लंकापति तेरे हृदय समाइ।
तो पै सूर पतिव्रत साँचो जो देखौं रघुराइ॥"

[निश्चरी का सीता के सत को रावण से प्रगट करना और रावण निज उद्धार का ज्ञान होना]

राग धनाश्री

सुनो क्यों कनकपुरी के राइ।
हौं बुधिबल छल करि पचि हारी लख्यो न शीश उँचाइ॥
डोले गगन सहित सुरपति अरु पुहुमि पलट जग जाइ।

---

१ मर्यादा—इज्जत। २ विधि लिखित योग! ३ कोसना। ४ देर

नशै धर्म मन बचन काय करि शंभु अचंभु कराइ॥
अचला चलै चलत पुनि थाकै चिरंजीव सो मरई।
श्री रघुनाथ प्रताप पतिव्रत सीता सत नहिं टरई॥
ऐसी त्रिया हरति क्यों लाई जाके यह सत माइ।
मन बच कर्म और नहिं दूजो तजि रघुनन्दन राइ॥
इनके क्रोध भस्म ह्वै जैहौ करहु न सीता चाउ[1]।
अब तुम काकी शरण उबरिहौ सो बल मोहिं बताउ॥
जो सीता सत ते बिचलै तौ श्रीपति काहि संभारै।
मोसे मुग्ध महापापी को कौन क्रोध करि तारै॥
यह जननी वे प्रभु रघुनन्दन हम सेवक प्रतिहार।
सीता राम सूर संगम बिनु कौन उतारै पार॥५॥

[रावण का सीता को फुसलाना और सीता का उत्तर।]

राग मारू।

जनक सुता तू समुझि चित्त में निरखि मोहि तन हेरी।
चौदह सहस किन्नरी जेती सब दासी हैं तेरी॥
कहौ तो जनक गेह दै पठवौं अर्ध लङ्क को राज।
तोहि देखि चतुरानन मोहैं तू सुन्दरि शिर-ताज॥
छाड़ि राम तपसी के मोहै उठि आभूषण साज।
चौदह सहस्र तिया में तोको पटा-बधाऊं[2] आज॥
कठिन बचन सुनि श्रवन जानकी सकी न बचन सम्हार।
तृण अन्तर दै दृष्टि तिरौंछी दई नैन जल धार॥
"पापी जाइ जीभ गलि तेरी अजुगत[3] बात बिचारी।"
"सिंह को भक्ष शृगाल न पावै, हौं समरथ की नारी॥"

---

१ इच्छा। २ पटरानी बनाऊं। ३ अयुक्त।

"चौदह सहस्र दुष्ट खर दूषण, रघुपति एकहिं बाण ।"
"लक्ष्मण राम धनुष सन्मुख करि काके रहिहैं प्राण ॥"
"तेरी अवधि[१] कहत सब कोऊ ताते कहियत बात ।"
"यह विश्वास मारिहैं तोको आजु रैनि कै प्रात" ॥
"मेरो हरन मरन है तेरो स्यों कुटुंब से मान" ।
"जरिहैं लंक कनकपुर तेरो ऊदित रघूकुल भान ॥"
यह राक्षस की जाति हमारी मोह[२] न उपजै गात ।
परत्रिय रमै धर्म यह जानै डोलत मानुष खात ॥
मन में डरी कानि जिन तोरे मोहि अबला जिय जान ।
नख शिख बसन संभारि सकुचि तनु कुच कपोल गहि पान ॥
रे दशकन्ध ! अन्ध मति तेरी आयु तुलानी[३] आनि ।
सूर राम की करी अवज्ञा डारै सब भुज भानि ॥६॥

[त्रिजटा का सीता को समझाना ।]

राग मारू

त्रिजटा सीता पै चलि आई ।
मन में सोच न कर तू माता यह कहि के समुझाई ॥
नल कूबर को शाप रावनहिं तो पर बल न बसाई ।
सूरदास मनु जरी[४] सजीवन श्री रघुनाथ पठाई ॥७॥

[सीता वचन त्रिजटा से]

राग कान्हरा

सो दिन त्रिजटा कहि कब ह्वै है ।
जा दिन चरन कमल रघुपति के हरषि जानकी हृदय लगैहै ॥

१ मृत्यु । २ भ्रम । ३ पूरी हो गई । ४ जड़ी ।

कबहुंक लक्ष्मण पाय सुमित्रा माई २ कहि मोहिं सुनैहै।
कबहुंक कृपावंत कौशल्या वधू २ कहि मोहि बुलैहै॥
जा दिन राम रावणहि मारैं ईशहिं दै दशशीश चढ़ैहै।
ता दिन जन्म सफल करि जानो मेरे हृदय की कालिम[1] जैहै॥
जा दिन कंचनपुर[2] प्रभु ऐहैं विमल ध्वजा रथ पर फहरैहै।
ता दिन सूर राम पर सीता सरबसु वारि बधाई दैहै॥८॥

राग सारंग

मैं राम के चरणन चित दीनो।
मनसा वाचा और कर्मना बहुरि मिलन को आगम कीनो॥
डुलै सुमेरु शेष शिर कंपै पश्चिम उदै करै वासर[3]—पति।
सुनि त्रिजटी तौहूं नहिं छोड़ौं मधुर मूर्ति रघुनाथ गात रति॥
सीता करति विचार मनै मन आजु कालिह कौशलपति आवै।
सूरदास स्वामी करुणामय सो कृपालु मोहिं क्यों विसरावै॥६॥

[त्रिजटा का सीता को अपना स्वप्न सुनाना]

राग धनाश्री

सुनि सीता सपने की बात।
रामचन्द्र लछमन मैं देख्यौं ऐसी बिधि प्रमान॥
कुसुम विमान बैठि वैदेही देखी राघव पास।
श्वेत छत्र रघुनाथ शीश पर दिनकर किरण प्रकास॥
भयो पलायमान[4] दानवकुल व्याकुलता इक त्रास।
पंजरत ध्वजा पताक छत्र रथ मनिमय कनक अवास[5]॥
रावन शीश पुहुमि पर लोटत मंदोदरि बिलखाइ।

१ कालिमा। २ लंका ३ सूर्य्य। ४ भागने वाला। ५ गृह।

कुम्भकर्ण तनु खंग [1] लग्गई लंक विभीषण पाइ ॥
प्रगट्यो आइ लंकदल कपि को फिरी रघुबीर दुहाई।
यह सपने को भाव सखीरी! क्योंहूं विफल न जाई ॥१०॥

[हनुमान का मुद्रिका देना और सीता हनुमान की बातें]

त्रिजटी वचन सुनत वैदेही अति दुख लेत उसासु।
हा हा रामचन्द्र! हा लछिमन! हा कौशिल्या सासु! ॥
त्रिभुवन नाथ नाह ज्यों पायौ सुन्यौ रहै वनवास।
हा कैकयी! सुमित्रा रानी! कठिन निशाचर त्रास ॥
कौन पाप मैं पापिन कीनो प्रगट्यो हैं इहि बार।
धिग २ जीवन है अब इहि बिनु क्यों न होइ जरि छार ॥
द्वै अपराध मोहिं ये लागे मृग के हित दीने हथियार।
जान्यो नहीं निशाचर के छल नाखी [2] धनुह अकार ॥
पंछी एक सुहृद जानत हो कस्रो निशाचर भंग [3]।
ताते विरम रह्यो रघुनंदन करि मनसा मन पंग ॥
इतनो कहत नैन उर फरके सगुन जनायो अंग।
आजु लहौं रघुनाथ संदेशो मिटै विरह दुखसंग ॥
तिहि छिन पवनपूत तंह प्रगटेउ सिया अकेली जानि।
श्री दशरथ कुमार दोउ बंधू धरे धनुष दोउ पानि ॥
प्रिया वियोग फिरत मारे मन परे सिंधु तट आनि।
तव संदेश हित मोहिं पठायो सकौं न हौं पहिचानि ॥
वारंवार निरखि तरुवर तन कर मीड़ति [4] पछिताई।
देव जीव पशु पक्षी को तू नाम लेत रघुराई ॥
बोलै नहीं रह्यो दुरि वानर द्रुम में देह छुपाइ।
कै अपराध ओट अब मेरो कै तू देहि दिखाइ ॥

---

१ घाव २ उलंघन किया। ३ घायल। ४ मीजती।

तरुवर त्यागि चपल शाखामृग [1]सन्मुख बैठ्यो आइ।
माता पुत्र जानि दै उत्तर कहु किहि विधि बिलखाइ [2]॥
किन्नर नाग देवि सुर कन्या कासों हित उपजाई।
कै तू जनक कुमार जानकी राम वियोगिन आई॥
राम नाम सुनि उत्तर दीनो पिता-बंधु तू होहि।
मैं सीता रावन हरि लायो त्रास दिखावत मोहि॥
अब मैं मरौं सिंधु में बूड़ौं चित में आवे कोह।
सुना बच्छ जीवन धिग मेरो लच्छिमन राम बिछोह [3]॥
कुशल जानकी जू रघुनंदन कुशल लच्छिमन भाई।
तुम हित नाथ कठिन व्रत कीनो नहिं जल भोजन खाई।
मुरै न अंग कोउ जो काटै निशि वासर सम जाई।
तुम घट प्राण देखियत सीता बिना प्राण रघुराई॥
वानर वीर चहूँ दिशि धाए ढूंढ़ैं गिरि वनचार।
सुभट अनेक सबळ दल साजे परे सिंधु के पार॥
उद्यम मेरो सफल भयो अब मैं देखो तुम आई।
अब रघुनाथ मिलाऊं तुमको सुन्दरि सोग [4] सिराई॥
यह सुनि सिय मन संका उपजी रावन दूत विचारी।
श्रवन मूंदि अंचर मुख ढांप्यो "अरे निशाचर चोर"।
"काहे को छल करि २ आवत धर्म विनासन मार"॥
"पावक परौं सिंधु मह बूड़ों नहि मुख देखों तोर"।
"पाली क्यों न पीठि दै मोको पाहन सरिस कठोर"॥
जिय में डर्‍यो मोहिं मति शापै व्याकुल वचन कहंत।
जो वर दियो सकल देवन मोहिं नाऊं धर्‍यो हनुमंत॥
सुग्रीव को तारका [5] मिलाई बध्यो बाळि भयमंत।

१ बीनर। २ रोदन करै। ३ वियोग। ४ शोक। दुःख। ५ तारा।

अंजन कुंवर राम को पाइक[1] ताके बल गर्जंत॥
लेहु मातु मुद्रिका निशानी दई प्रीति कर नाथ।
सावधान ह्वै सोक निवारो[2] ओढहु[3] दक्षिण हाथ॥
खिन[4] मुंदरी खिनहीं हनुमत सों कहति विसूरि विसूरि।
कहि मुद्रिके कहां तें छोडे मेरे जीवन मूरि[5]॥
कहियो वच्छ संदेशो इतनो जब हम एकत थान।
सोवत काग छुयो तनु मेरो बाहिर कीनो बान॥
फोख्यो नयन काग नहिं छांड्यो सुरपति के विद्यमान।
अब वह कोप कहो रघुनन्दन दशशिर कंठ बिरान॥
निकट बुलाइ बैठाइ निरखि मुख अंचर लेत बलाइ।
चिर जीवो सुकुमार पवनसुत गहति दीन ह्वै पाइ॥
बहुत भुजनि बल होइ तुम्हारे ये अमृत फल खाहु।
अब की बेर सूर प्रभु मिलिवो बहुरि प्राण किन जाहु॥११॥

[हनुमान वचन सीता से।]

राग मारू।

जननी हौं अनुचर रघुपति को।
मति माता करि क्रोध शरापै नहिं दानव धिग मति को॥
आज्ञा होइ देउं कर मुंदरी कहौं संदेशो रति को।
मति हिय विलख[6] करौ सिय रघुवर बधिहैं कुल दैयत को॥
कहौ तु लंक उखारि डारि देउं जहां पिता-सम्पति[7] को।
कहौ तु मारि संहारि निशाचर रावग करौं अगति को॥
सागर तीर भीर बनचर की देखि कटक[8] रघुपति को।
लै मिलइ हौं अबहिं सूर प्रभु राम रोष उर अति को॥१२॥

---

१ दूत, (पदातिक) २ मिटाओ ३ पहनो ४ क्षण ५ मूल—जड़ ६ विलापद् ७ वरुण ८ सेना

अनुचर रघुनाथ तेरे दरस काज आयो।
पवनपूत कपि स्वरूप भक्तन में गायो ॥
तपन[1] जहां तप न करैं सोइ वनमें झांक्यो।
जाकी तुम छांह बैठी सोई द्रुम में राख्यो ॥
आयसु जो होइ जननि सकल असुर मारौं।
लंकेश्वर बांधि राम चरणन तर डारौं ॥
चढि चलु जो पीठ मेरी अबहि लै मिलाऊं।
सूर श्री रघुनाथ जी के लीला गुन गाऊं ॥१३॥

[सीत वचन हनुमान से, मुद्रिका प्रदान]

तुमहिं पहिचानति नाहीं वीर।
यहि नैना कबहूं नहिं देख्यो राम चन्द्र के तीर[2] ॥
लंका बसत दैत्य अरु दानव उनके अगम सरीर।
तोहिं देखि मेरा जिय डरपत नैनन आवत नीर ॥
तब कर काढि अंगूठी दीनो तब जिय उपजी धीर।
सूरदास प्रभु लंका कारन आये सागर तीर[3] ॥१४॥

[राम संदेश कथन ।]

राग सारंग।

जननी हौं रघुनाथ पठायो।
रामचन्द्र आये[4] की तुमको देन बधाई आयो ॥
हौं हनुमन्त कपट जिनि समुझो बात कहत समुझाई।
मुन्दरी काढि धरी लै आगे तब प्रतीत जिय आई ॥
अति सुख पाय उठाय लई तब बार बार उर भेंटति।

१ सूर्य्य २ पास ३ तट किनारे ४ आगमन

ज्यों मलया गिर[1] पाइ आपनी जरनि हृदय की मेटति ॥
लक्ष्मण पालागन करि पठयो हेतु[2] बहुत कर माता ।
दई अशीश तरनि सन्मुख ह्वै चिरजीवो दोउ भ्राता ॥
बिछुरन को संताप हमारो तुम दर्शन सं काट्यो ।
ज्यों रवि तेज पाइ दशहूँ दिशि दोष कुहर[3] को फाट्यो ॥
ठाढे बिनती करत पवनसुत अब जो आज्ञा पाऊं ।
अपने देख चले को यह सुख उन हूं जाइ सुनाऊं ॥
कल्प समान एक छन राघव कलपि २ करि बितवत ।
ताते हैं अकुलात कृपानिध ह्वै हैं पैड़ो[4] चितवत ॥
रावण हति ले चलों साथ ही लंका धरौं अपूठी[5] ।
याते जिय अकुलात कृपानिध करौं प्रतिज्ञा भूंठी ॥
इहवां की सब दशा हमारी सूर सों कहियो जाई ।
बिनती बहुत कहा कहौं रघुपति जेहि बिधि देखहु पाई ॥१५॥

[हनुमान बचन सीता से ।]

राग मलार ।

बनचर कौन देश ते आयो ।

कहं वे राम कहां वे लछिमन क्यों करि मुद्रा पायो ॥
हैं हनुमन्त राम कै सेवक तुव सुधि लेन पठायो ।
रावण मारि तुम्हैं लै जातों राम निदेश[6] न पायो ॥
तुम मति डरियो मेरी मैया । राम जोरि दल ल्यायो ।
सूरदास रावण कुल खोवन [7] सोवत सिंह जगायो ॥१६॥

---

१ चंदन २ प्रेम ३ कुहरा ४ रास्ता ५ पीठपर कमजोर ६ आज्ञा
७ कुल का नाश करने वाला ।

[हनुमान सीता संवाद ।]

राग सारंग ।

कहौं कपि कैसे उतस्यो पार ।
दुस्तर अति गम्भीर वारिनिधि सत योजन विस्तार ॥
इत उत क्रोध दैत्य कपि मारत महा अबुधि अधिकार ।
हाटक पुरी कठिन पथ बानर आये कौन अधार ॥
राम प्रताप सत्य सीता को यहै नाउ कंधार [1] ।
बिन अधार छुन में अवलंघ्यो [2] आवत भई न बार ॥
पृष्टिभाग चढ़ जनकनंदनी पौरुष देख हमार ।
सूरदास लै जाऊं तहां जहं रघुपति कंत तुम्हार ॥१७॥

राग मारु

हनुमत भली करी तुम आये ।
बारबार कहती वैदेही दुख संताप मिटाये ॥
श्री रघुनाथ और लक्ष्मण के समाचार सब पाये ।
अब परतीति भई मन मोरे संग मुद्रिका लाये ॥
क्योंकरि सिंधु पार तुम उतरे क्योंकरि लंका आये ।
सूरदास रघुनाथ जानि जिय तो बल इहाँ पठाये ॥१८॥

[सीता संदेश कथन ।]

राग कान्हरा

सुनि कपि वे रघुनाथ नहीं ।
जिन रघुनाथ पिनाक चितान्यो [3] तोरयो निमिष महीं ॥
जिन रघुनाथ फेरि भृगु पति गति डारी काट तहीं ।
जिहिं रघुनाथ हार खर दूषण हरे प्राण शरहीं ॥

---

१ कर्णधार । २ उतरा । ३ चढ़ाया ।

कै रघुनाथ तज्यो प्रग अपनो योगिन दशा गही।
कै रघुनाथ दुखित कानन, कै नृप भये रघुकुल हीं॥
कै रघुनाथ अतुल राक्षस बल दशकंधर डरहीं।
छोड़ी नारि विचार पवनसुत लंक बाग बसंही॥
कीधौ कुचील कुरूप कुळक्षण तौं कन्तहिं न चहीं।
सूरदास स्वामी सों कहियो अब विरमियो[1] नहीं॥१६॥

राग मारु

देखे यह गति जात संदेशो कैसे कै जु कहौं।
सुनि कपि इन प्राणन को पहरो कबलों देति रहौं॥
ये अति चपल चल्यो चाहत हैं करत न कछू विचार।
कहि धौं प्राण कहां लौ राखौं रोकि रोकि मुख द्वार॥
अपनी बात जनावत तुमसों सकुचति हों हनुमंत।
नाहीं सूर सुन्यो दुख कबहूं प्रभु करुणामय कंत॥२०॥

[सीता दुःख निवेदन।]

राग मारू

कहियो कपि रघुनाथ राज सों यह इक विनती मेरी।
नाहीं सही परति यह मोपै दारुण त्रास[2] निशाचर केरी॥
यह जो अंध बीसहूं लोचन छलबल करत आन मुख हेरी[3]।
आइ सियार सिंह बलि मांगत यह मरजाद जात प्रभु तेरी॥
जेहि भुज परसुराम बल करष्यो[4] ते भुज क्यों न संभारत फेरी।
सूर सनेह जानि करुणामय लेहु छुडाय जानकी चेरी॥२१॥

१ विलंब न करो। २ डर। ३ खुशामद। ४ खींचना।

[सीता का निज अपराध प्रगट करना ।]

मैं परदेसिन नारि अकेली ।
बिनु रघुनाथ और नहि कोऊ मातु पिता न सहेली ॥
रावण भेष धरयो तपसी को कत मैं भिक्षा मेली ।
अति अजान मूढ़मति मेरी रामरेख पाइन मैं पेली ॥
विरहताप तन अधिक जरावत जैसे दौ[1] द्रुम[2] बेली ।
सूरदास प्रभु वेगि मिलाओ प्राण जात है खेली ॥ २२ ॥

[हनुमत वचन ।]

तू जननी जिय दुख जनि मानहि ।
रामचंद्र नहि दूरि कहूं पुनि भूलेहूं चित चिंता मति आनहि ॥
अबहि लिवाइ जाऊं सब रिपु हति डरपत हूं आज्ञा अपमानहिं ।
राख्यो सकल संवारि सान दै कैसे निफल करौं वा बानहिं ॥
हैं केतिक यह तिमिर निशाचर उदित एक रघुपति कुल भानहिं ।
काटन दे दस सीस समर मुख अपनो कृत[5] एऊ जो जानहिं ॥
देहिं दरस शुभ नैन निकटनि रिपु को नाश सहित संतानहिं ।
सुर सपथ मोहिं हनहिं दिननि में लै जो आइहैं कृपा निधानहिं।२३।

[वाटिका ध्वसं इन्द्रजीत का ब्रह्मपाश से बाँधना ।]

हनुमत बल प्रगट भयो सीता जब पाई ।
जनक सुता चरण बंदि फूलो न समाई ॥
अगणित तरु फल सुगंध मधुर मीठ खाये ।
मनसा करि प्रभुहि अरपि भोजन को लाये ॥
द्रुमन माहि उपारि लई दै दै किलकारी ।
दानव बिनु प्राण भये देखि चरित भारी ॥

---

१ दावाग्नि । २ करनी ।

विह्वल मति हीन भए जोरे सब हाथा।
बानर बन बिघन कियो त्रिभुवन के नाथा॥
ह्वै निसंक अतिहि ढीठ बिडरे नहिं भाजै।
मानों बन कदलि[1] मध्य हनुमत गज गाजै॥
भाने[2] मठ कूप बाप सरवर को पानी।
गौरि कन्त पूजत जहं युवतिन दल आनी॥
कांप्यो सुनि असुर सैन शाखामृग जान्यो।
मानो जल जीव सिमिटि जालहिं में समान्यो॥
तरुवर तहँ एक उखारि हनुमत कर लीनो।
किंकर कर पकरि बाण तीन खंड कीनो॥
योजन विस्तार शिला पवनसुत उपाटी[3]।
किंकर करि लक्षमान अंतरिक्ष काटी॥
आगर इक लौह जरित लीनों बलवंडा।
दुहूं करनि असुर हयो भयो मासन पिंडा॥
दुर्धर परहस्त सँग आइ सैन भारी।
पवन पूत दानव बल बाहर चल कारी॥
रोम रोम हनुमत के बल छुज़क समान।
जहां तहां देखत कपि करत राम आन॥
मंत्री सुत पांच सैन अच्छ कुंवर सूरा।
धीर सहित सबे हते झपटि कै लंगूरा॥
चतुरानन बल संभारि[4] मेघनाद आयो।
मानों घन पावस में नाग[5]पति है छायो॥
देख्यो जब दृष्टि बाण निशचर कर तान्यो।
छाड्यो तब सूर हनू ब्रह्म तेज मान्यो॥ २४॥

१ केला। २ रोका, भंग किया। ३ उखाड़ा। ४ स्मरण कर।
५ गजराज।

[हनुमान रावण संवाद]

सीता पति सेवक तोहिं देखन को आयो ।
काके बल बैर तै जु राम सों बढ़ायो ॥
जे जे तवसूर सुभट कीट सम न लेखों ।
तेरे दल कंध अंध प्राणनि बिनु देखों ॥
नख सिख ज्यों मीन जाल जड्यो अंग अंगा ।
अजहुं नाहिं संक धरत बनचर मति भंगा ॥
जोई सोई मुखहि कहत मरण निज न जानै ।
जैसे नर सन्निपात हिये बुधि बखानै ॥
तब तू गयो सून भवन भस्म अङ्ग पोते ।
करितो बिनु प्राण तोहिं लक्ष्मण जो होते ॥
पाछे तैं सीय हरी विधि मर्याद राखी ।
जो पै दशकंध बली रेखा क्यों न नाखी [१] ॥
अजहूं सिय सौंपि नतरु [२] बीस भुजा भानै ।
रघुपति यह पैज [३] करी भूतल धरि पानै ॥
ब्रह्म बाण कानि करी बल करि नहिं बांध्यो ।
कैसे यह ताप मिटै रघुपति आराध्यो ॥
देखत कपि बाहुदंड तनु प्रस्वेद [४] छूटै ।
जै जै रघुनाथ नाथ कहत बंध टूटै ॥
देखत बल दौरि कस्यो मेघनाद गारो [५] ।
आपुन भयो सकुचि सूर बंधन ते न्यारो ॥ २५ ॥

---

१ लंघन किया । । २ नहीं तो । ३ पसीना । ४ गाला

[हनुमान लंका जारन]

राग मारू

मंत्रिन नीको मंत्र विचारयो ।
राजन् कह्यो दूत काहू को कौन नृपति है मारयो ॥
इतनी कहत बिभीषन बोल्यो बँधू पांइ परों ।
यह अनरीति सुनो नहिं श्रवणनि अब पै कहा करों ॥
तेल तुल पावक वपु धरिकै देखत तुसै[1] जरौं ।
अब मेरे जिय यहै बसी है रघुपति काज करौं ॥
हरी विधाता बुद्धि सबनि की आतुर ह्वै धाये ।
सन अरु सूत चीर पहँबर लै लगूर बँधाये ॥
बंधनि तोरि मोरि मुख असुरनि ज्वाला प्रगट करी ।
रघुपति चरण प्रताप सुर प्रभु लंका सकल जरी ॥२६॥

[हनूमान का पश्चाताप आकाश वाणी, सीता कुशल]

राग धनाश्री

सोचि जिय पवन सुत पछिताई ।
अगम अपार सिंधु दुस्तर तरि कहा कियो मैं आई ॥
सेवक को सेवापन इतनो आज्ञा कारी होई ।
या भय भीति देखि लंका में सीय जरी मति होई ॥
बिनु आज्ञा मैं भवन प्रजारे[2] अप यश करि है लोइ[3] ।
वे रघुनाथ चतुर कहियह है अन्तर्यामी सोइ ॥
इतनी कहत गगन वाणी भई "हनू सोच कत करि है ।"
"चिरजीव सीता तरुवर तरु अटल न कबहूं टरिहै ॥"

---

१ आग २ जलाया ३ लोग

फिर अवलोकि सूर सुख लीजै भुव में रोम [1] न परिहै।
जाके हिय अन्तर रघुनन्दन सो क्यों पावक जरि है ॥२७॥

[लंका दहन, सिता दर्शन]

रागमारु

लंका हनूमान सब जारी।

राम काज सीता की सुधि लगि अंगद प्रीति विचारी ॥
जा रावण की शक्ति तिहूं पुर कहुं न आज्ञा टारी।
ता रावण के अछत [2] अक्षय—सुत पालक सृष्टि पछारी ॥
पूंछ बुझाइ गये सागर तट है जहं सीता वारी [3]।
करि दंडवत प्रेम पुलकित ह्वै "सुनि राघव की प्यारी ॥"
"तूमही तेज प्रताप रही है तुमरी यही अटारी।"
सूरदास स्वामी के आगे जाई कहौ सुख भारी ॥ २८ ॥

[रामचन्द्र प्रति सीता संदेस हनुमंत बिदाई]

राग सारंग

मेरी केती विनती करनी।

पहिले करि परणाम पांइ परि मणि रघुनाथ हाथ लै धरनी ॥
मंदाकिनि तट फटिक शिला पर सुख मुख जोरि तिलक की करनी।
कहा कहौं कपि कहत न आवै सुमिरत प्रीति होइ उर अरनी ॥
तुम हनुमंत पवित्र पवन सुत कहियो जाइ जोइ मैं बरनी।
सूरदास प्रभु आनि मिलावहु मूरति दूसह दुःख भय हरनी॥२९॥

---

१ एक रोम भी न गिरेगा—तनिक भी कष्ट न होगा। २ होते हुए
३ बाला—स्त्री

[हनुमान प्रत्यागमन]

रागमारू

हनूमान अंगद के आगे लंक कथा सब भाखी।
अंगद कह्यो "भली तुम कीनी हम सब की पति राखी॥"
हर्षवंत ह्वै चले तहां ते मग में विलम[1] न लाई।
पहुंचे आइ निकट रघुबर के सुग्रीव आयो धाई॥
सबन प्रणाम कियो रघुपति को अंगद बचन सुनायो।
सूरदास प्रभु पद प्रताप करि हनू सिया सुधि लायो॥ ३०॥

[हनुमान सुग्रीव का प्रशंसा करना]

राग मारू

हनू तैं सब को काज सँवारयो।
बार बार अंगद यों भाषै मेरो प्राण उबारयो॥
तुरतहि गमन कियो सागर ते बीचहि बाग उजारयो।
कियो मधुवन को चौर[1] चहूं दिशि माली जाइ पुकारयो॥
धनि हनुमंत सुग्रीव कहत है रावण को दल मारयो।
सूर सुनत रघुनाथ भयो सुख काज आपनो सारयो[2]॥३१॥

[श्रीरामचन्द्र हनुमान गोष्ठी]

राग मारू

कहो कपि जनक सुता कुशलात।
आवागमन सुनावहु अपनो देहु हमें सुख गात॥
सुनो पिता जल अन्तर ह्वै कै रोक्यो मग[3] इक नारि।
धर अम्बर[4] धन रूप निशाचरि गरजी बदन पसारि॥

---

१ विलंब = देरी १ चोरी २ निकाला पूर्ण किया ३ मार्ग में ४ आकाश में

तब मैं डरपि कियो छोटो तनु पैठ्यो उदर मझारि।
खर भर परी देव आनदे[1] जीत्यो पहिली रारि[2]॥
गिरि मैनाक उदधि में अद्भुत आगे योजन सात।
तुव प्रताप पेलि दिशि पहुंच्यो कौन पढ़ावै बात॥
लंका पौरि पौरि[3] मैं ढूंढी अरुबन उपबन जाइ।
तरुबर तर अवलोकि जानकी तब हौं रह्यो लुकाइ॥
रावण कह्यो सु कह्यो न जाई रह्यो क्रोध अति छाई।
तबही अवध[4] जानिकै राख्यो, मंदोदरि समुझाई॥
तब हौं गयो सुफल बारी में देखी दृष्टि पसारी।
असी सहस किंकर[5] दल जिहिके दौरे मोंहि निहारी॥
तुम परताप देव दिन भीतर जुरत[6] भई नहि बार।
तिन को मारि तुरन्तहि कीनो मेघनाद सों रार[7]॥
ब्रह्म फांस जब लई हाथ करि मैं चेत्यो कर जोरि।
तज्यो कोप मर्यादा राखी बध्यो आप ही मोर॥
रावण पै लै गयो सकल मिलि ज्यों लुब्धक पशु जाल।
करुवो[8] बचन श्रवण सुनि मेरो तव रिस गही भुवाल[9]॥
आपुन ही मुग्दर लै धायो करि लोचन बिकराल।
चहुंदिशि सूर सोर करि धावै ज्यों केहरिहि[10] सियाल॥३२॥

[राम बचन]

राग मारू।

कैसे पुरी जरी कपिराई।
बड़े दैत्य कैसे करि मारे ईश्वर तुम्हें बचाई॥
प्रकट कपाट बड़े दीने हैं बहु जोधा रखवारे।

१ आनन्दित हुए २ लड़ाई ३ दरवाजे दरवाजे, घर घर ४ अबध्य ५ चाकर ६ लड़ते हुए ७ लड़ाई ८ कड़वा ९ राजा रावण १० सिंह पर।

तैंतीस कोटि देव वश कीने ते तुम से क्यों हारे ॥
तीनि लोक डर जाके कंपै तुम हनुमान न झंखे[1]।
तुमरे क्रोध शाप सीता के दूरि जरत हम देखे ॥
हो जगदीश ! कहा कहौं तुम सो तुव वर[2] तेज मुरारी।
सूरदास सुनौ सब संतो अवगति की गति न्यारी॥३३॥

[सेना सहित पयान]

राग मारू

सीय सुधि सुनत रघुबीर धाये।
चल्यो तब लक्ष्मण सुग्रीव अंगद हनू
जमवंत नील नल सबै आये ॥
भूमि अति डगमगी जोगनी सुनि जगी
सहस फन शेश सो शीश कांप्यो।
कटक अगणित जुरयो लंक खर भर पर्यो
सूर को तेज धर[3] धूर ढाप्यो ॥
जलधि तट आय रघुराइ ढाढे भये ऋच्छ
कपि गरजि है ध्वनि सुनायो।
सूर रघुराइ चितये हनूमान दिशि
आइ तिन तुरत ही शीश नायो ॥३४॥

[हनुमान निज बल कथन]

राग केदारा

राघव जू कितिक बात तजो चिंत।
केतक रावण कुम्भकर्ण दल सुनिहो देव अनंत ॥

१ डरे २ बल ३ धरा के धूलि से।

कहो तो लंक लकुट ज्यों फेरों फेरि कहूं लै डारों।
कहो तो पर्वत चापि चरन तर नीर खार में गारों ॥
कहो तो असुर लंगूर[1] लपेटौं कहौ तु नखन बिदारौं।
कहो तो शैल उपारि पेड़ ते दै सुमेर सौं मारौं॥
जेतक शैल सुमेरु धरणि में भुज भरि आनि मिलाऊं।
सप्त समुद्र देऊं छाती तर इतनक देह बढ़ाऊं॥
चली जाइ सेना सब मो पर धरो धरग रघुबीर।
मोहिं अशीश जगत जननी की "तुव तन वज्र शरीर॥"
जितक बोल बोले तुम आगे राम प्रताप तुमारे।
सूरदास प्रभु की सब सांची जन की पैज पुकारे॥३५॥

[हनूमान का निज पराक्रम कथन]

राग मारू

रावण से गहि केतिक मारों।
जो तुम आज्ञा देहु कृपानिधि तो परसंसा यह पारों॥
कहो तु जननि जानकी ल्याऊं कहो तु लंक उपारों।
कहो तु अबहि पैठि सुभट हति अनल सकल परजारों॥
कहो तु सचिव सबंधु सकल अरि[2] रामहि एक पछारौं।
कहो तु तुम प्रताप श्री रघुबर उदधि पखाननि[3] तारों॥
कहो तु दशो शीश बीसो भुज काटि छिनक में डारौं।
कहो तु ताको तृण गहाइ के जीवत पांइन डारौं॥
कहो तु सेना चारि रचों कपि धरनी व्योम पतारों[4]।
शैल शिला द्रुम बरषि[5] व्योम चढ़ि शत्रु समूह संहारों॥
बार बार पद परसि कहत हौं, हौं कबहूं नहिं हारों।
सूरदास प्रभु तुमरे बचन लगि शिव बचनन को टारों॥३६॥

१ पूछ में २ शत्रु ३ पाषाण ४ पाताल ५ वर्षा कर के।

राग मारू

हौं हरि जू को आयसु पाऊं ।
अबहीं जाइ उपारि लंकगढ़ उदधि पार लै आऊं ॥
अबहीं जम्बूद्वीप इहां ते लै लंका पहुँचाऊं ।
सोखि समुद्र उतारौं कपि दल तनिक विलंब न लाऊं ॥
जब आवै रघुबीर जीति दल तौ हनुमंत कहाऊं ।
सूरदास शुभ पुरी अयोध्या राघव सुयश बखाऊं ॥३७॥

[हनुमान विनय राम से]

राग सारंग ।

रघुपति वेगि जतन अब कीजै ।
बांधैं सिंधु सकल सैना मिलि आपुन आयुस दीजै ॥
तब लगि तुरत एक तौ बाधौं द्रुम पाषाननि छाई ।
द्वितीय सिंधु सिय नैन नीर ह्वै जब लौं मिलै न आई ॥
यह बिनती हौं करौं कृपानिधि बार बार अकुलाई ।
सूरज दास अकाल प्रलय प्रभु मेरो दरश दिखाई ॥३८॥

[बिभीषण वचन-रावण प्रति]

राग मारू

लंका पति को अनुज शीश नायो ।
परम गंभीर रणधीर दशरथ तनय
कोपि करि सिंधु के तीर अयो ॥
सीय को लै मिलो यह म[१] तो है भलौ
कृपा करि मम वचन मानि लीजै ।

१ मत, राय, अनुमति ।

ईश को ईश करतार करुणामयी
तासुपद कमल परशीश दीजै ॥
कह्यो लंकेश दै शीश पग तिसी के
जाहि मत मूढ कायर डरोना।
जानि अशरण शरण सूर के प्रभु को
तुरंतहि जाइ द्वारे बुझानो ॥ ३९ ॥

राग सारंग

आइ बिभीषण शीश नवायो।
देखत ही रघुवीर धीर कहि लंकपती तिहि नाम बुलायो ॥
कह्यो सुबहुरि कह्यो नर्हि रघुवर यहै विरद[1] चलि आयो।
भक्त बछल[2] करुणामय प्रभु को सूरदास यश गायो ॥४०॥

[राम वचन सभा में]

राग मारू

तब हौं नगर अयोध्या जैहों।
एक बात सुन निश्चय मेरी रावण राज्य बिभीषण द्वैहों ॥
कवि दल जोरि और सब सेना सागर सेतु बंधैहों।
काटि दशो सिर बीस भुजा तब दशरथ सुत जु कहैहों ॥
छन इक मांह लंक गढ तोरों कंचन कोट ढहैहों[3]।
सूरदास प्रभु कहत बिभीषण रिपु हति सीता लैहों ॥४१॥

[मन्दोदरी वचन रावण प्रति।]

राग मारू

वे देख आये राम राजा।
जल के निकट आइ भये ठाढे दीसत[4] विमल ध्वजा।

१ नियम, मर्य्यादा २ बत्सल ३ गिराऊँगा ४ दिखाई पड़ता है।

सोवत कहा चेत हो रावण, मैं जु कहति कत खात दगा [1] ॥
कहति मंदोदरि सुन पिय रावण मेरी बात अगा [2] ॥
तृण दशनन [3] लै मिल दशकंधर कंठहि मेलि पगा [4] ।
सूरदास प्रभु रघुपति आये दहपट [5] होइ लंका । ४२ ॥

शरण परि मन वच कर्म विचारि ।
ऐसो कौन और त्रिभुवन में जो अब लेइ उबारि ॥
सुनि शिष कंत दंत तृण धरिकै स्यो परिवार सिधारो ।
परम पुनीत जानकी संग लै कुल कलंक किन [6] टारो ॥
ये दशशीश चरण तर राखो मेटो सब अपराध ।
महप्रभु कृपा करन रघुनंदन रिस न गहैं पल आध ॥
तोरि धनुष मुख मोरि नृपनि को सीय स्वयंबर कीनो ।
दिन इक में भृगुपति प्रताप बल पकरि हृदय धरि लीनो ।
लीला करत कनकमृग मार्‍यो बध्यो [7] बालि अभिमानी ।
सोइ दशरथ कुलचन्द अमित बल आए सारंगपानी ॥
जाके दल सुग्रीव सुमंत्री प्रबल यूथपति भारी ।
महा सुभट रणजीत पवनसुत बड़ो वज्र वपुधारी ॥
करिहैं लंक पंक दिन भीतर वज्र शिला लै धावै ।
कुल कुटुंब परिवार सहित तुहिं बांधत बिलंम न लावै ॥
भजहु जिन बल करि शंकर को मान बचन हित मेरो ।
जाइ मिलो कौशल नरेश को भ्रात विभीषण तेरो ॥
कटक सोर अति दूरि दशो दिशि देखत बनचर भीर ।
सूर समुझि रघुवंश तिलक दोउ उतरे सागर तीर ॥ ४३ ॥

---

१ धोखा २ आगे ३ दातों में तृण दाब कर ४ पगड़ी ५ चौपट ।
६ क्यों न ७ मारा ।

काहे पर तिरिया हरि आनी [१] ।
यह सीता जु जनक की कन्या रमा [२] अपुन रघुनंदन रानी ॥
रावण मुग्ध कर्म को हीनो जनक सुता तैं तिय करि मानी ।
जाके क्रोध भूमि जल प्रकटे कहा करेगो सिंधुज पानी ॥
मूरख सुखहि नींद नहिं आवै, ते हैं लंक बीस भुज जानी ।
सूर न मिटत भाग की रेखा अल्प मृत्यु आइ तुलानी [३] ॥ ४४ ॥

राग मारू

तोहि कौन मति रावण आई ।
आजु कालि दिन चारि पांच में लंका होति पराई ॥
लंका कोट देख जिन गर्वहि अरु समुद्र सी खाई ।
जाकी नारि सदा नव यौवन सो क्यों हरै पराई ॥
जाके हित सीतापति आये राम लषन दोउ भाई ।
सूरदास प्रभु लंका तोरैं फेरैं राम दोहाई ॥ ४५ ॥

[मन्दोदरी रावण प्रश्नोत्तर]

राग मारू

आयो रघुनाथ बली सीख सुनो मेरी ।
सीता लै जाइ मिलो पति [४] जु रहै तेरी ॥
तैं जु बुरे कर्म किये सीता हरि ल्यायो ।
घर बैठे वैर कियो कोपि राम आयो ॥
चेतत क्यों नाहिं मूढ़ एक बात मेरी ।
अजहूँ सिंधु नहिं बंध्यो लंका है तेरी ॥”
सागर को पाजि [५] बांधि पार उतरि आवैं ।

१ हर लाया २ लक्ष्मी ३ आ पहुंची ४ इज्जत ५ पदातिक, पैदल सेना ।

देख त्रिया ! करि कै बल करणी दिखरावै ॥
रीछ कीश वध करौं रामहि गहि ल्याऊं ।
जानति हौं बल बालि सों न छूटि पाई ॥
तुम्हें कहा दोष दीजै काल अवधि आई ।
बालि सों बहुं यज्ञ करे इन्द्र सुनि सुखायो ॥
छल करि लई छीनि मही वामन ह्वै धायो ।
हिरण कशिपु अति प्रचंड ब्रह्मा वर पायो ॥
नरसिंह रूप धरे छिन न विलंम लायो ।
पाहन सो बांधि सिंधु लंका गढ़ तोरै ॥
सूरदास मिलि विभीषण राम देहि फोरै ॥ ४६ ॥

[सागर से राम का विनय और उनका क्रोध

राग धनाश्री

रघुपति चन्द्र विचार कस्यो ।
नातो मान सगर[1] सागर सों कुश साथरी[2] पस्यो ॥
तीनि याम अरु बासर बीते सिंधु गुमान भस्यो ।
कीन्यो कोप कुवंर कमलापति[3] तब कर धनुष धस्यो ॥
ब्राह्मण भेष सिंधु तब आयो देखो बान डस्यो ।
द्रुम पषान प्रभु बेगि मंगायो रचना सेतु कस्यो ॥
नल अरु नील विश्वकर्मा सुत छुवत पषान तस्यो ।
सूर दास स्वामा प्रताप ते सब संताप हस्यो ॥ ४७ ॥

१ सगर–रामचन्द्र के पूर्वज २ चटाई ३ विष्णु ।

[राम सागर संवाद]

राग धनाश्री

रघुपति जबै सिंधुतट आये ।
कुश साथरी बैठि इक आसन बासर तीनि गवाये ॥
सागर गर्व धस्यो उर भीतर रघुपति नर कर जान्यौं ।
तब रघुबीर तीर अपने कर अग्निवरण गहि तान्यो ॥
तब जलधर खरभरो [1] त्रास गहि जन्तु उठे अकुलाई ।
कह्यो न नाथ बाण मोहिं जास्यो शरण परस्यो हौं आई ॥
"आज्ञा होइ एक दिन भीतर जल दश दिश करि डारौं।
अन्तर मारग होइ सबनि को इहि विधि पार उतारौं॥
और मन्त्र [2] जो करै, देवमणि बाधौं सेतु बिचार ।
दीन जानि धर चाप बिहंस कै दियो कंठ ते हार॥४८॥

[सेतु बंधन]

रागमारू

आपुन तरि तरि औरन तारत ।
असम अचेत पषान प्रगट पानी में बनचर डारत ॥
इहि विधि उपलें [3] सुतरु पात ज्यों यधपि सैन अति भारत ।
बुडि न सके सेतु रचना रचि राम प्रताप विचारत ॥
जिहि जल तृण पशु वार अनेकन बुडि [4] संग औरन बोरत ।
तिहि जल गाजत महाबीर सब तरत अंग नहि मोरत ॥
रघुपति चरण प्रताप सुर व्योम विमाननि गावत ।
सूर दास क्यों बूड़त कलयू नाउ [5] न बूडन पावत ॥४६॥

॥ इति सुन्दरकाण्ड ॥

---

१ डरा, घबड़ाया २ आज्ञा ३ उतराना ४ डूब कर ५ नाम ।

लंका कारण्ड

[राम की सेना में रावण के दूतों का पकड़ा जाना]

राग सारंग

शुक सारन [1] द्वै दूत पठाये।
बानर वेश फिरत सेना में सुनत विभीषन तुरत बँधाये॥
बीचहि मार परी अति भारी राम लक्षण जब दर्शन पाये।
दीन दयाल बिहाल देखि कै छोरी भुजा "कहां ते आये"॥
हम लंकेश दूत प्रतिहारी समुद्र तीर को जात अन्हाये।
सूर कृपालु भये करुणा मय आपुन हाथ सो दूत रिहाये [2]॥१॥

[दूत का लंका में पहुंचना और कुम्भकरण का युद्ध मंत्र]

यहै मंत्र सबहिन मन भायो सेतु बंध प्रभु कीजे।
सब दल उतरि होइ पारंगत ज्यों न कोऊ इक छीजै [3]॥
यह सुनि दूत गये लंका मंह सुनत नगर अकुलानो।
राम चन्द्र प्रताप दशो दिशि जल पर तरत पखानो [4]॥
दशशिर बोलि निकट बैठायो, कहि धावन [5]! सत भाऊ।
"उद्यम कहा होत लंका को कौने कियो उपाऊ"॥
"जामवंत अंगद बन्धु मिलि कैसे इह पुर ऐहैं।"
"मो देखत जानकी नयन भरि कैसे देखन पैहैं॥"
"हौं सत भाऊ कहत लंकपति जो जिय उत्तम मानो।"
"सकल कहौं व्योहार कटक को कपि उमहे सो मानो॥"

---

१ शुक, सारन नाम के २ रिहा किया, छोड़ाया । ३ क्षय हो, मरे ४ पाषाण, पत्थर ५ दूत ।

"बार बार यों कहत सकत नहिं तो हति लैहैं प्राण।"
"मेरे जान कनक पुर फिरिहैं राम चन्द्र की आन॥"
कुंभकरग हंसि कहो सभा में "सुनौ आदि उत्पात।"
"एक दिवस हम ब्रह्म सभा में चलत सुनी यह बात॥"
"काम अंध ह्वै सब कुटुम्ब धन खोवै एकहि बार।"
"सो अब सत्य होत एहि अवसर कौनजु मेटन हार॥"
"और मंत्र कछु उर जिनि आनो आजु सुकपि रण मांडहि।"
"गहै बांह रघु पति के सन्मुख ह्वै करि यह तनु छांडहि॥"
"यह यशजीति परमपद पावहु उर संशय सब खोई।"
सूर "सकुचि जो सरन संभारो क्षत्री धर्म न होई॥"२॥

[रघुपति सेतु लंघन]

राग धनास्री

सिन्धु तट उतरत राम उदार।
रोष विषम कीनो रघुनंदन सब विपरीति विचार॥
सागर पर गिरि गिरि पर अंबर [1] कपि घनके आकार।
गरज किलक आघात उठत मनु दामिनि पावक झार [2]॥
परत फिराइ पयोनिधि भीतर सरिता उलटि बहाई।
मनु रघुपति भय भीत सिंधु पत्नी प्योसार पठाई॥
बाला बिरह दुसह सबहुन को जान्यो राज कुमार।
बाण वृष्टि शोणित [3] करि सरिता व्याहत लगी नवार॥
श्रवणन कनक कलस आभूषन मनि मुक्ता गन हार।
सेतुबंध करि तिलक कृपानिधि रघुपति उतरे पार॥३॥

१ आकाश २ ज्वाला ३ लाल।

[मंदोदरी वचन रावण प्रति]

राग धनाश्री

देखि रे वह सारंगधर [१] आयो ।
सायर [२] तीर भीर बानर की शिर पर छत्र बनायो ॥
शंख कुलाहल सुनियत लागे लीला [३] सिंधु बंधायो ।
सोयो कहा लंक गढ़ भीतर अधिको कोप दिखायो ॥
पद्म कोटि जाकी सेना सुनि जंतु जु एक पठायो ।
सूरदास जे भये विमुख हरि तिहि केतक सुख पायो ॥४॥

राग मारू

मेरे जान अजहुं जानकी दीजै ।
लंकापति तिय कहत पिया सों "यामे कछू न छीजै ॥"
"पाहन तारे सागर बांध्यो तापर चरन न भीजै ।"
"बनचर एक लंक तिहि जारी ताकी सरि क्यों कीजै ॥"
"चरन टेकि दोउ हाथ जोरि कै बिनती काहे न कीजै ।"
"वे त्रिभुवनपति करैं कृपाअति कुटुम्बसहित सुखजीजै ।"
"आवत देखि बाण रघुपति के तेरो मन न पतीजै [४] "
"सूरदास प्रभु लंक जारि कै राज्य विभीषण दीजै ॥"५॥

[रावण बचन]

"कहा तू कहति तिया बार बारी ।"
"कोटि तैतिस सुर सेव अहर्निसि करत
राम अरु लक्षमण है कहारी ॥"

---

१ विष्णु २ सागर ३ खेल में ४ विश्वास नहीं होता है ।

"मृत्यु को बांधि मैं राखियो कूप में,
देन आवत कहा डरातु[1] नारी ॥"
कहत मन्दोदरी"मेटि को सकै तेहि
जो रची सूर प्रभु होन हारी ॥" ६ ॥

[अंगद रावण संबाद]

लंक पति पास अङ्गद पठायो ।
"सुन अरे! अन्ध दशकन्ध लै सिया मिल
सेतु करि बंध रघुवीर आयो ॥"
वह सुनत परिजरयो[2] बचन नहिं मन धरयो
कहा " तै राम ते मोहि डरायो ॥"
"सुर असुर जीति मैं सब कियो आप बस
सूर मम सुयश तिहुं लोक गायो ॥"७ ॥

[अंगद बचन रावण प्रति]

"रावण तब लो है रण गाजत ।"
"जब लौं कर सारंगपानि के नाहीं बाण विराजत ॥"
"यम कुबेर इन्द्र हैं जानत रचिपचि के रथ साजत ।"
" रघुपति रबि प्रकाश सो देखो उड़गण ज्यों तोहिं भाजत ॥
ज्यों सह गवन सुंदरी के संग बहु बाजन है बाजत ।"
तैसे सूर असुर आदिक सब संग,तेरे हैं लाजत[3] ॥"८ ॥

[श्री राम संदेश रावण प्रति]

जानि हौं बल तेरो रावण ।
पठवौं कुटुम्ब सहित यम आगे नेकि देहि धौं मोको आवन ॥

---

१ डराने आती है । २ प्रज्वलित हुआ, क्रुद्ध हुआ । ३ राजते हैं ।

दारुण कीश सुभट वर सम्मुख लैहों संग त्रिदिशि !बल पावन ॥
करिहौं नाम अचल पशुपति [1] को पूजा विधि कौतुक देख रावन॥
अगिनि पुंजशित बाण धनुषधरि तोहि असुर कुल सहित जरावन।
असुर मुख छेदि सुपक नव फल ज्यों अरु शंकर दशशीर चढ़ावन॥
देहौं राज्य विभीषण जन [2] को लंकापुर रघु आन [3] चलावन।
सूरदास निस्तरिहै इहि यश कृपन दीन जन नव यश गावन ॥६॥

[रावण प्रति अंगद उत्तर]

मोको राम रजायसु नाहीं।
नातर [4] सुन दशकन्ध निशाचर शमन करों छिन माहीं ॥
पलट धरौं नवखण्ड पुहुमि [5] पर को बल भुजा सभारौं।
राखौं मेलि भंडार सूर शशि नभ कागद ज्यों फारौं॥
जारौं लंक छेदि दश मस्तक सूर संकोच निवारौं।
श्री रघुनाथ प्रताप चरण ते उरते भुजा उपारौं ॥

[रावण बचन]

रे! रे! चपल सरूप ढीठ तू बोलत बचन अनेरो।
चितवै कहा पान पल्लव पुट प्राण प्रहारौं तेरो ॥
गये ससंक युगल बंधूबन जान्यो असुर अहेरो।)
तीनि लोक विख्यात विषद यश प्रलय नाम है मेरो।

[अंगद बचन]

रे! रे! अन्ध बीसहूँ लोचन परत्रिय हरन विकारी।
सूने भवन गवन तै कीनों शेष रेष नहीं टारी ॥
अजहू सुनै कह्यो जो मेरो आये निकट मुरारी [6]।
जनक सुता लै चली पाइनि पर श्री रघुनाथ पियारी॥

---

१ शिव २ दास ३ धन, मर्यादा, धाक ४ नहीं तो ५ पृथ्वी, ६ रामचन्द्र, भगवान, विष्णु के भवन ।

[रावण बचन]

संकट परे जु सरण पुकारों तो क्षत्री न कहाऊं ।
जन्महि ते तापस आराध्यो कैसे हित उपजाऊं ॥
अबतो सूर यहै बनी आई हरि को निज पद पाऊं ।
ये दशशीश ईश निर्मायल [1] कैसे चरण छुआऊं ॥१०॥

[अङ्गद बचन]

राग मारू

मूरख रघुपति शत्रु कहावत ।
जाके नाम ध्यान सुमिरन ते कोटि यज्ञ फल पावत ॥
नारदादि सनकादि महामुनि सुमिरत मनशुचि ध्यावत [2] ।
अंबरीष प्रहलाद भक्त बलि निगम नीति जिहि गावत ॥
जाकी घरनि [3] हरी छल करि, ताते बिलम न लावत ।
दश अरु आठ शंख बन चरलै लीला सिंधु बंधावत ॥
जाइ मिलौ कौशल नरेश को मन अभिलाष बढ़ावत ।
दै सीता लंकेश पाइ परि तब लंकेश कहावत ॥
तू भूल्यो दश शीश बीस भुज ! मोहिं गुमान दिखावत ।
कंध उपारि डारि भूतल में सूर सकल सुख पावत ॥११॥

[अङ्गद रावण संबाद–रावण का भेद उपजाना]

राग मारू

"रे कपि क्यों पितु बैर बिसारयो ।"
"तोसे [4] तु भल कन्या किन उपजी जो कुल शत्रु न मारयो ।"

---

१ चढ़ाये हुए २ ध्यान करते हैं ३ स्त्री, घरनी ४ तुमसे तो अच्छा होता कि कन्या उपजती ।

"ऐसो सुभट नहीं इहि मंडल देख्यो बालि समान ।"
"तासों कियो बैर मैं हारयो कीनी पैज [1] प्रमान ॥"
"ताको वध न कियो इहि रघुपति तो देखत विद्मान [2] ।"
"ताकी शरण रह्यो क्यों भावै सबद [3] सुनो दै कान ॥"

[अंगद बचन]

"रे दशकंध अंध मति मूरख ! क्यों भूल्यो इहिरूप ।"
"सूझत नहीं बीसहू लोचन पस्यो तिमिर के कूप ॥"
"धन्य पिता जापर परिफुल्लित राघव भुजा अनूप ।"
"वा प्रताप की मधुर बिलोकनि गहि वारौ सत रूप ॥"

[रावण बचन]

"जो तुहि नाहिं बाँह बल पौरुष अर्ध राज देउ लंक ।"
"मो समेत ये सकल निशाचर लरत न माने शंक ॥"
"जब रथ साजि चढ़ों रण सन्मुख जीवन आनो दंग ॥"
"राघव सैन समेत संहारौं करौं रुधिर मय अंग ॥"

[अंगद बचन]

"श्रीरघुनाथ चरणव्रत उर धरि क्यों नहिं लागत पाई ।"
"सबके ईश परम करुणा मय सबही के सुख दाई ॥"
"हौं जु कहत लै चलो जानकी छांड़ि सबै दंभान [4] ।"
"सन्मुख होइ सूर स्वामीके भक्तन कृपा निधान ॥१२॥

[इन्द्रजीत को युद्ध की आज्ञा, अङ्गद पांव रोपना]

राग मारू

लंक पती इन्द्रजीत को बुलायो ।
"कह्यो तिहि जाहु रण भूमि दल साजि कै

---

१ प्रतिज्ञा २ होते हुए. विद्यमान ३ बातें ४ अहंकार ।

कहा भयो राम दल जोरि ल्यायो ।"
कोपि अंगद कह्यो "धरो धर चरण में
ताहि जो सकै कोऊ उठाई ।"
तौ बिना युद्ध किये जाहिं रघुबीर फिरि
यह सुनत उठे जोधा [1] रिसाई ॥
रहे पचि हारि नहिं पार कोऊ सक्यो
उठ्यो तबआप रावण खिसाई ।
कह्यो अंगद "कहा मम चरण को गहत
चरण रघुबीर गहु क्यों न जाई ॥"
सुनत यह सकुच कियो गवन निज भवन को
बालि सुत हूं वहां ते सिधायो ।
सूर के प्रभु को पांइ परि यों कह्यो
अंध दशकंध को काल आयो ॥ १३ ॥

[अङ्गद का रामचन्द्र के पास वापस आना]

बालि नंदन आइ शीश नायो ।
"अंध दशकन्ध को काल सूझत प्रभू
मैं कई भेद विधि कहि जनायो ॥"
इन्द्रजित चढयो निज सैन सब साजि कै
रावरी सैन हू साज कीजै ।"
"सूर प्रभु मारि दशकन्ध थापि [2] बंधु तिहि
जानकी छोरि यश गात लीजै" ॥ १४ ॥

१ योद्धा, वीर २ स्थापित करके (विभीषण को)

[श्री रघुनाथ प्रति लक्ष्मण प्रतिज्ञा, युद्ध निमित्त]

रघुपति जो न इन्द्रजित मारौं ।
तो न होउं चरणन को चेरो जो न प्रतिज्ञा पारौं [1]
जो दृढ़ बात जानिये प्रभु जू धर्म गये कहि दान निवारौं।
शपथ राम परताप तिहारे खंड खंड करि डारौं॥
कुम्भकर्ण दश शीश बीस भुज दानव दलहिं बिडारौं [2]।
तबै सूर संधान सफल है रिपु को शीश उपारौं [3] ॥१५॥

[लक्ष्मण का सेना सहित युद्ध गमन]

लछन दल संग लये लंक घेरी ।
बसुमति षट अरु अष्ट आकास भये ।
दिश विदिश कोउ नहिं जात हेरी ॥
ऋच्छ पलवंग [4] किलकार लागे करन।
आन [5] रघुनाथ की जाई फेरी ॥
पट [6] गये टूटि परी लूट सब नगर में।
सूर दरबान कह्यो जाइ टेरी ॥१६॥

[मंदोदरी वचन रावण प्रति]

रावण उठि निरखि देखि आजु लंक घेरी ।
कोटि जतन करि रही नहिं सीख सुनी मेरी ॥
गहगहात किलकात अंधकार आयो ।
रवि को रथ सूझत नहिं धरनि गगन छायो ॥
तोरि पाट लूट परी भागे दरबाना ।

---

१ पालन करूं २ नाश करूं ३ उखाड़ूं ४ बन्दर, प्लवंग ५ दोहाई
६ कपाट, केवाड़े ।

लंका में सोर पस्लो अजहूं तैं न जाना ॥
"फोरि फारि" "तोरी तारि" गगन होत गाजै ।
सूरदास लंका पर काल चक्र बाजै ॥ १७ ॥

[मन्दोदरी रावण प्रश्नोत्तर]

लंका फिरि गई राम दुहाई ।
कहति मंदोदरी सुन पिया रावण तैं कहा कुमति कमाई ॥
दश मस्तक मेरे बोस भुजा हैं सौ योजन की खाई ।
मेघनाद से पुत्र महाबल कुम्भकर्ण से भाई ॥
रहु रहु अबला बोल न बोलो उनकी करत बड़ाई ।
तीनि लोक ते पकरि मंगाऊं वे तपसी दोउ भाई ॥
तुम्हैं मारि महारावण मारै देय विभीषण राई ।
पवन को पूत महाबल जोधा पल में लंक जराई ॥
जनक सुता पति हैं रघुवर से संग लषण से भाई ।
सूरदास प्रभु को यश प्रगट्यो देवनि वंदि छुड़ाई ॥१८॥

[मेघनाद युद्ध, नारद शिक्षा]

राग मारू ।

मेघनाद ब्रह्मा वर पायो ।
आहुति अगिनि जिवाइ संतोषी निकस्यो रथ बहु रतन बनायो ॥
आयुध धरे समेत कवच सजि गर्जि चढ्यो रण भूमहिं आयो ।
मनो मेघनायक[1] ऋतु पावस बाण वृष्टि करि सैन खपायो ॥
कीनो कोप कुंवर कोशलपति पंथ अकाश सायकनि[2] छायो ॥
हंसि हंसि नाग फांस शर साधत बंधन बंधु समेत बंधायो ।

---

१ इन्द्र २ बाणों से ।

नारद स्वामी कह्यो निकट ह्वै "गरुडासन काहे बिसरायो।"
"भयो तोष दशरथ के सुत को मुनि को ज्ञान लखायो॥"
"सुमिरन ध्यान जानि कै अपनो नाग फास ते सैन छुड़ायो।"
सूर विमान चढ़े सुरपुर लौं आनंद अभय निसान बजायो॥१९॥

[कुम्भकर्ण रावण संवाद]

राग मारू।

लंकापति अनुज सोवत जगायो।
"लंकपुर आइ रघुराइ डेरो दियो जाकी तिया मैं ले आयो॥"
"तैं बुरी बहुत कीनी कहा तोहिं छांड़ि यश जगत अपयश बढ़ायो।"
सूर अब डर न करि युद्ध को साज करि होइहै सोइ जो
दई भायो [1] ॥२०॥

[लक्ष्मण वचन, खंग धारण]

राग मारू।

लछुन कह्यो तरवार सँभारों,
कुम्भकर्ण अरु इन्द्रजीत को टूक टूक करि डारों॥
महाबली रावण जिहि बोलत पल में शीश संहारों।
सब राक्षस रघुबीर कृपाते एकहि बाण निवारों॥
हंसि हंसि कहत विभीषण सों प्रभु महाबली रण मारों।
सूर सुनत रावण उठि धायो क्रोध अनल तन धारों॥२१॥

---

१ देवताओं को भावेगा।

[रावण लक्ष्मण युद्ध, लक्ष्मण मूर्छा]

राग मारू ।

रावण चल्यो गुमान भरयो ।
श्री रघुनाथ अनाथ बंधु सों सन्मुख कहत खरयो ॥
कोप धरो रघुवीर धीर तब लक्ष्मण पांइ परयो ।
तेरे तेज प्रताप नाथ जू मैं कर धनुष धरयो ॥
सारथि सहित असुर बहु मारे रावण क्रोध धरयो ।
इन्द्रजीत लीनी जब सेंथी देवन हहा करयो ॥
छूटी बिज्जु राशि वह मानो भूतल बंधु परयो ।
करुणा करत कुंवर कौशल-पति नैनन नीर झरयो ॥
सूरदास हनुमान दीन ह्वै अंजलि जोरि कह्यो ।
"आज्ञा देहु सजीवनि लाऊं गिरि उठाइ सिगरयो ॥२२॥

[श्री राम का दुखित होना]

राग मारू ।

निरखि मुख राघव धरत न धीर ।
भये अरुण विकराल कमल दल लोचन मोचत नीर ॥
"बारह बरस नींद है साधी ताते विकल शरीर ।"
"बोलत नहीं मौन कहा साधी विपति बटावन वीर[1] ॥
दशरथ मरन हरन सीता को रन बीरन की भीर ।
दूजो सूर सुमित्रा सुत बिनु कौन धरावै धीर ॥२३॥

[राम विलाप]

"अब हौं कोन को मुख हेरों ।
"दुख समुद्र जिहि वार पार नहिं तामें नाव चलाई ।

1 भाई

"केवट थक्यो रह्यो अध वीचक [1] कौन आपदा आई ॥"
नाहिन भरत सत्रुघ्न सुन्दर जासों चित्त लगायो ।
"वीचहि भई और की औरै भयो शत्रु को भायो ॥"
"मैं निज प्राण तजौंगो सुन कपि तजिहै जानकी सुनिकै ।"
"ह्वै है कहा बिभीषन की गति यहै सोच जिय गुनि कै ॥"
बार बार शिर लै लक्ष्मण को निरखि गोद पर राखैं ।
सूरदास प्रभु दीन वचन यों हनूमान सो भाखैं ॥२४॥

[राम वचन हनूमान प्रति]

कहां गयो मारुत-पुत्र, कुमार ।
ह्वै अनाथ रघुनाथ पुकारैं संकट मित्र हमार ॥
इतनी विपति भरत सुनि पावै आवै दलहि सजूथ ।
कर गहि धनुष जगत को जीतै कितक निशाचर जूथ ॥
नाहिन और वियो [2] कोइ समरथ जाहि पठाऊं दूत ।
वह अबहीं पौरुष दिखरावै होइ पवन के पूत ॥
इतनो वचन श्रवण सुनि हरष्यो फूल्यो अंग न मात [3] ।
लै लै चरन रेनु निज प्रभु की रिपु के शोणित न्हात ॥
हो परबल [4] पुनीत केशरि सुत तुम हित बंधु हमारो ।"
"जिह्वा रोम रोम प्रति नाहीं पौरुष नागतुम्हारो ॥"
"जहां जहां जेहि काल संभारे तहँ तहँ त्रास निवारे ।'
"सूर सहाय कियो वन वसि कै वन विपदा दुख टारे ॥२५॥

[राघव प्रति हनुमान वचन, लक्ष्मण मूर्छा उपाय]

रघुपति मन संदेह न कीजै ।
मो देखत लक्ष्मण क्यों मरिहौ मोको आज्ञा दीजै ॥

---

१ बीच में २ दूसरा ३ समाता है ४ प्रबल ।

कहो तु सूरज उगन न देहुं नहिं दिशि दिशि बाढ़ै ताम [1] ।
कहो तु गन समेत ग्रसि खाऊं यम पुर जाइ न राम ॥
कहौ तु कालहि खंड खंड करि टूक टूक करि डारों ।
कहौ तु मृत्युहि मारि डारि कै खोजत पालहिं पारों ॥
कहो तु चन्द्रहि ले अकास ते लक्ष्मण मुखहिं निचोरों ।
कहो तु पैठि सुधा के सागर जल समेत मैं घोरों ॥
श्री रघुवर मोसों जन जाके ताहि कहा सकराई [2] ।
सूरदास मिथ्या नहिं भाषत मोंहि रघुनाथ दुहाई ॥२६॥

[सजीवन निमित्त हनुमान गमन]

कह्यो तब हनुमत सों रघुराई ।
द्रोणागिरि पर आहि सजीवनि वैद सुषेन बताई ॥
तुरत जाइ लै आवौ ह्यां ते बिलंब न करि अब भाई ।
सूरदास प्रभु बचन सुनत हनुवंत चल्यो अतुराई ॥२७॥

[हनूमान का पर्वत लाना, भरत मिलाप]

रागमारू

द्रौना [3] गिरि हनुमान सिधायो ।
संजीवनि को भेद न पायो तब सब शैल उठायो ॥
चितै रह्यो तब भरत देखि कै अवध पुरी जब आयो ।
मन में जानि उपद्रव भारी बाण अकास चलायो ॥
राम राम यह कहत पवनसुत भरत निकट तब आयो ।
पूछ्यो सूर कौन है कहि तू हनुमत नाम सुनायो ॥२८॥

---

१ तम, अंधेरा २ दुःख, आपदा । ३ द्रौणगिर

[भरत का कुशल समाचार पूछना]

कहो कपि रघुपति को संदेश ।
कुशल बंधु लक्ष्मण वैदेही श्रीपति सकल नरेश ॥
जिन पूछो तुम कुशल नाथ की सुनो भरत बलबीर ।
बिलख वदन दुख धरे सिया को हैं जलनिधि के तीर ॥
बन में बसत निशाचर छल करि हरी सिया मम मात।
ता कारन लक्ष्मण शर लाग्यो भये राम बिनु भ्रात ॥
इतनो बचन श्रवन सुनि सुनि कै सबनि पुहुमि तन जोयो ।
"त्राहि त्राहि" कहि "पुत्र पुत्र" कहि लोटि सुमित्रा रोयो
"धन्य सुपुत्र पिता प्रन राख्यो धन्य सुकुल जिहि लाज ।"
सेवक धन्य अंत के अवसर आवै प्रभु के काज ॥
कह रघुनाथ मूर [1] के कारण मोको लैन पठाये ।
थक्यो सुमध्य अर्ध निशि बीती को लक्ष्मणहि जियावै ॥
पुनि धरि धीर कह्यो धनि लक्ष्मण राम काज जो आवै ।
सूर जियै तौ जग यश पावे मरि सुरलोक सिधावै ॥२९॥

[धैर्य सहित सुमित्रा बचन]

रागमारू

धनि जननी जो सुभटहि जावै [2] ।
भीर परे रिपु को दल दलि मलि कौतुक करि दिखरावैं ॥
कौशल्या सों कहति सुमित्रा जिनि स्वामिनि दुख पावै ॥
लक्ष्मण जनि, हौं भई सपूती राम काज जो आवै ॥
जियें तो सुख बिलसै या जग में कीरति लोगन गावै ।

१ मूल, औषध २ पैदा करे, जने ।

मरै तु मंडल भेदि भाव को सुरपुर जाइ बसावै ॥
लोह गहे लालच करि जिय को औरो सुभट लजावै।
सूरदास प्रभु जीति शत्रु को कुशल क्षेम घर आवै ॥३०॥

[हनुमत भरत प्रति उत्तर]

रागमारू

पवन पुत्र बोल्यौ सत भाय।
जाति सिराति [1] राति बातनिहीं सुनो भरत चितलाय ॥
श्री रघुनाथ सजीवन कारण मोको इहां पठायो॥
भयो अकाज अर्ध निशि बीती लक्ष्मण काज नशायो ॥
स्यौं [2] पर्वत शर बैठि पवन सुत हौं प्रभु पै पहुंचाऊँ।
सूरदास पांवरि मम शिर है इहि बल भरत कहाऊं ॥३१॥

[कौशल्या संदेश राम प्रति]

रागमारू

विनती जाइ कहियो पवनसुत तुम रघुपति के आगे।
या पुर जिनि आवहु बिनु लक्ष्मण जननी लाज न लागे ॥
मारुतसुत संदेश हमारो सुमित्रा कहि समुझावै।
सेवक जूझि परै रन विग्रह ठाकुर तौ घर आवै ॥
जब ते तुम गौने कानन को भरत भोग सब छांड़े।
सूरदास प्रभु तुमरे दरश विनु दुःख समूह उर गाड़े ॥

१ व्यतीत होना २ सहित।

[हनूमान का सजीवन लाना, लक्ष्मण को चेत होना]

राग सारंग

हनुमान सजीवन ल्यायो ।
महाराज रघुबीर धीर को हाथ जोरि शिर नायो ॥
पर्वत आनि धस्यो सागर तट भरत संदेश सुनायो ।
सूर सजीवन दै लक्ष्मण को मुर्छित फिरै जगायो ॥ ३२ ॥

[श्रीराम की जय प्रतिज्ञा]

राग कान्हरा

दुसरे कर बाग न लेहों ।
सुन सुग्रीव प्रतिज्ञा मेरी एकहि बान असुर सब हैहों [1] ॥
शिव पूजा जिहि भांति करी है सोइ पद्धति परतक्ष दिखैहों ।
दैत अपराध पाप फल पीड़ित शिर माला कुल सहित चढ़ैहों ॥
मनो तूल गन परत अगिनि मुख जानि जड़नि यम पंथ पठैहों ।
करिहों नहीं बिलंब कछू अब उठि रावण सन्मुख ह्वै धैहों ॥
दमि दमि दुष्ट देव द्विज मोचन लंक विभीषन तुमको दैहों ।
लक्ष्मण सिया समेत सूर कपि सब सुख सहित अयोध्या जैहों ॥३३॥

[रावण कुल बध]

राग मारू

आजु अति कोपे हैं रन राम ।
ब्रह्मादिक आरूढ़ विमानन देखैं सुर संग्राम ॥
धन तन दिव्य कवच सजि करि अरु कर धारयो सारंग ।

1 मारूंगा ।

शुचि करि सकल बान सूधे करि कटितट कस्यो निषंग[1] ॥
सुरपुर ते आयो रथ सजि कै रघुपति भयो सवार ।
कांपी भूमि कहा अब ह्वैहै सुमिरत नाम मुरारि ॥
क्षोभित सिंधु शेष शिर कंपित पवन गती भइ पंग[2] ।
इन्द्र हँस्यो, हर हँसि बिलखान्यो, जानि वचन भयो भंग ॥
धरअंबर दिशि विदिशि बढ़े अति सायक किरन समान ।
मानो महा प्रलय के कारन उदित उभय षट भान[3] ॥
टूटत ध्वजा पताक छत्र रथ चाप चक्र शिर त्राना[4] ।
जूझत सुभट जरत ज्यों दौ[5] द्रुम बिनु शाखा बिनु पान ॥
शोणित छिछ[6] उछरि आकासहि गज बाजिन सर लागी ।
मनो नगरन धरनि तननि[7] ते उपजी है अति आगी ॥
उठि कबंध भहरात भीत ह्वै निकसत है जरि जागि ।
फिरत शृगाल सच्यो[8] सो काटत बिचलत सिर लै भागि ॥
रघुपति रिस पावक प्रचण्ड अति सीता श्वास समीर ।
रावण कुल अरु कुम्भ कर्ण बन सकल सुभट रणधीर ॥
भये भस्म कछु वार न लागी ज्यों ज्वाला पटचीर ॥
सूरदास प्रभु अपुने बाहुबल कियो निमिष मय कीर[9] ॥३४॥

रघुपति अपुनो प्रग प्रतिपाल्यो[10] ।
तोर्‍यो कोपि प्रबल गढ़ रावण टूक टूक करि डार्‍यो ॥
कहुं भुज कहुं धर कहुं शिर लोटत मनो मत्त मतवारो[11] ।
डरपत वरुण कुवेर इन्द्र यम महा सुभट तन भारो ॥

---

१ तरकस (तूणीर) २ पंगु, बंद ३ सूर्य ४ शिरत्राण ५ दवाग्नि में ६ छीटा ७ धड़, पेड़ों का तना ८ लाश, मृतशरीर ९ केलि, खेल, क्रीड़ा १० प्रतिपालन किया ११ मतवाला ।

रह्यो मांस को पिंड प्राण लै गयो बाण अनियारो ।
जाके नव ग्रह परे पाटि तर कूपै काल डसारयो [१] ॥
सो रावण रघुनाथ छिनक में कियो गिद्ध को चारो [२] ।
शिर संभारि लै गयो उमापति रह्यो रुधिर को गारो ॥
छोरे और सकल सुख सागर बांधि उदधि जल खारो ।
सुर नर मुनि सब सुयश बखानत दुष्ट दशानन मारयो ॥
दियो विभीषण राज्य सूर प्रभु कियो सुरनि निस्तारयो ।
बंधु सहित जानकी संग लै अवधपुरी पग धारयो ॥३५॥

[रावण मरण समय मंदोदरी आदि का विलाप]

करुणा करति मंदोदरी रानी ।
चौदह सहस सुंदरी ऊभी [३] उठै न कंत महा अभिमानी ॥
बार बार बरज्यो नहिं मानत जनक सुता त कत घर आनी ।
ये जगदीश ईश कमला-पति सीता तिया तैं जु करि जानी ॥
लीन्हें गोद विभीषण रोवत कुल कलंक ऐसी मति ठानी ।
चोरी करी राजहू खोयो अल्प मृत्यु तेरि आइ तुलानी ॥
कुंभकर्ण समुझाइ रहे पचि दे सीता मिलि सारंगपानी [४] ।
सूर सबनि को कह्यो न मान्यो त्यों खोई अपनी रजधानी ॥३६॥

[अंगद बसीठी, रावण वध आदि पर्य्यन्त लीला]

राग मारू ।

बालि नंदन बली विकट बनचर
महा द्वार रघुवीर को बार [५] आयो ।
और ते दौर दरबान दश शीश सों

१ बंद किया २ भोजन ३ खड़ी हुईं ४ राम ५ दूत ।

जाय शिरनाय यों कह सुनायो॥
सुनि श्रवण दश वदन दशन
अभिमान कर नैन की सैन अंगद बुलायो।
देखि लंकेश कपि भेश दर दर हंस्यो
सुन्यो भट कटक को पार पायो॥
विविध आयुध धरे सुभट सेवत खरे
छत्र की छांह निर्भय जनायो।
देव दानव महाराज रावण सभा
कहन को मंत्र तहां कपि पठायो॥
रंक रावण कहा टेक तेरो इतो
दोउ करजोरि विनती बिचारो।
परम अभिराम रघुनाथ के रोम पर
बीस भुज शीश दश वारि डारो॥
झटकि हाटक[1] मुकुट पटकि भट
भूमि सों झारि तरवारि तेरो शिर संहारों।
जानकीनाथ के हाथ तेरो मरण
कहा मतिमंद तोहिं मध्य मारों॥
"पाक पावक करै, वारि सुरगति भरै
पवन पावन करे द्वार मेरे।"
"गान नारद करैं ज्ञान सुरगुरु कहै
वेद ब्रह्मा पढ़ै पौरि टेरे॥"
"शेष वासुकि प्रभृति नाग गंधर्वगण
सकल वसु जीति मैं करे चेरे।"
"सुनि अरे शठदशकंध को कौन भय

१ सोना।

राम तपसी दये आनि डेरे ॥"
"तप बली सत्य, तापस बली तप विना
वारि पर कौन पाषाण तारै ।"
"कौन ऐसो बली सुभट जननी जन्यो
एकही वाण तकि वालि मारै ॥"
"परम गंभीर रणधीर दशरथ तनय
शरण गये कोटि अवगुण बिसारै [1] ।"
"जाइ मिल अंध दशकंध गहि दंत तृण
तौ भले मृत्यु मुख ते उबारै ॥"
"कोपि करिवार गाहि काल लंकाधिपति
मूढ़ कहा राम को शीश नाऊं ।"
"शंभु की सपथ सुनि कुकपि कायर
कृपण श्वास आकाश वनचर उड़ाऊं ॥"
"होइ सन्मुख भिरों शंक नहिं मन धरों
मारि सब कटक सागर बहाऊं ।"
"कोटि तेंतीस [2] मम सेव निशिदिन करत
कहा अब राम नर सों डराऊं ॥"
"परो भहराय भभकत रिपु घाय सों
करि कदन रुधिर भैरों अघाऊं ।"
"सूर साजै सबै देव दुंदुभि अबै
एक ते एक रण करि बिताऊं ॥३७॥"

[रावण मृत्यु]

बधो रावण सुन्यो शीश तव शिव
धुन्यो उमड़ि रण रंग रघुबीर आये ।

---

१ भुला दें २ देवता गण ।

रुंड भक रुंड धुकि धकत धरणी दरै
रुधिर सरिता नहीं पार पाये ॥
राम शर लागि मनो आगि गिरि परजरी
उछलि छिन छिन शरनि भानु छाये ॥
मारि दशकंध थप[1] बंधु को सूर प्रभु
राजिव नैन घर सिया ल्याये ॥३८॥

[आकाश से अमृत वर्षा]

सुरपतिहि[2] बोलि रघुबीर बोले ।
अमृत की वृष्टि रण खेत ऊपर करो
सुनत तिन अमिय भंडार खोले ॥
उठे कपि भालु तत्काल जय जय
करत असुर भये मुक्त रघुबर निहारे ।
सूर प्रभु अगम महिमा न कछु कहि परत
सिद्ध गन्धर्व जय जय पुकारे ॥३९॥

[सीता मिलाप, राम का मिलने से संकोच करना]

लक्ष्मण सीता देखी जाई ।
अति कृष दीन क्षीन तन प्रभु बिनु नैननि नीर बढ़ाई ॥
जाम्बवंत सुग्रीव विभीषण करी दंडवत आई ।
आभूषण बहु मोल पटंबर पहिरो मात बनाई ॥
बिनु रघुनाथ मोहिं सब फीके आज्ञा मेटि न जाई ।
पुहुप विमान बैठि बैदेही त्रिजटा तब गुहराई[3] ॥

१ स्थापित कर के २ इन्द्र ३ पुकार ।

देखत दरश राम मुख मोरयो, सिया परी मुरछाई ॥
सूरदास स्वामी तिहुंपुर के जग उपहास डराई ।४०॥

[परीक्षा हेतु सीता का अग्नि प्रवेश]

॥ राग सोरठ ॥

लक्ष्मण रचो हुताशन भाई ।

यह सुनि हनूमान दुःख पाये मोपै लख्यो न जाई ॥
आसन एक हुताशन बैठी मानो कुंदन [1] की अरुणाई ।
जैसे रवि इक पल घन भीतर बिनु मारुत दुरि जाई ॥
लै उछंग [2] उत्संग हुताशन निष्कलंक रघुराई ।
लै विमान बैठारि जानकी कोटि वदन छबि छाई ॥
दशरथ कही देवहू भाषी व्योम विमान निकाई ।
सिया राम लै चले अवध को सूरदास बलि जाई ॥४१॥

॥ इति लंका काण्ड ॥

---

१ सोना २ गोद ।

उत्तरकाण्ड ।

[कौशिल्या शकुन बिचार काग प्रति बचन]

॥ राग सारंग ॥

बैठी जननि करति शगुनौती ।

लक्ष्मण राम मिलैं अब मोको दोउ अमोलक मोती ॥
इतनी कहत सु काग उहां ते हरी डार उड़ि बैठ्यो ।
अंचल गांठ दई दुख भाज्यो सुख जो आनि उर पैठ्यो ॥
जो लो हौं जीवन भर जीवौं सदा नाम तुव जपिहौं ।
दधि ओदन दोना करि देहौं अरु [1]माइन मों थपिहौं ॥
अब के जो परचो [2]करि पाऊँ अरु देखौं भरि आंखैं ।
सूरदास सोने के पानी मढिहौं चोंच अरु [3]पाखैं ॥१॥

(राम द्वारा अयोध्या प्रशंसा)

राग मारू ।

हमारो जन्म भूमि यह गाऊँ ।

सुनहु सखा सुग्रीव बिभीषण अवनि [4] अयोध्या नाऊँ ॥
देखत बन उपवन सरिता सर परम मनोहर ठाऊं [5] ।
अपनी [6] प्रकृति लिये बोलत हौं सुरपुर में न रहाऊं ॥
ह्यां के बासी अविलोकत हैं आनंद उर न समाऊं ।
सूरदास जो विधि न सकोचे तो बैकुंठ न जाऊं ॥ २ ॥

---

१ गृहदेवताओं में स्थापित करूँगी २ परीक्षा ३ पंख ४ देश । ५ स्थान ६ स्वभाव ।

[हनुमान द्वारा राम आगमन सुन भरत का उत्सव करना]

॥ राग बसंत ॥

राघव आवति हैं अवधि आजु। रिपु जीते साधे[1] देव काजु॥
प्रभु कुशल बधू सीता समेत। जस सकल देश आनंद देत॥
कपि सोभित सकल अनेक संग। ज्यों पूरण शशि सागर तरंग॥
सुग्रीव विभीषण जाम्बवंत। अंगद, केहर, सुखेन, संत॥
नल, नील, द्विबिद, केसरी, गवच्छ। कपि कहे मुख्य और अनेक लच्छ[2]॥
जब कही पवनसुत विविध बात। तब उठी सभा सब हर्ष गात॥
ज्यों पावस ऋतु घन प्रथम घोर। जल जीवक दादुर[3] रटत मोर॥
जब सुने भरत पुर निकट भूप। तब रच्यो नगर रचना अनूप॥
प्रति गृह तोरण ध्वजा धूप। सजे सकल कलस अरु कदली[4] जूप॥
दधि हरद[5] दूब फल फूल पान। कर कनक थार तिय करत गान॥
सुनि भरे वेद ध्वनि शंखनाद। सुनि निरखि पुलक आनंद प्रसाद॥
देखत प्रभु की महिमा अपार। सब बिसरि गये मन बुधि विकार॥
जय रदशरथ कुलकमल भान[6]। जय कुमुद-जननि-शशि, प्रजाप्रान॥
जय दिव भूतल शोभा समान। जय जय जय सूर न शब्द आन[7]॥३॥

[श्रीराम वचन सुग्रीव प्रति, भरत को देखाना, लोगों का परस्पर मिलना]

राग मारू

देखो कपिराज भरत वे आये।
मम पांवरी शीश पर जाके कर अंगुरी रघुनाथ बताये॥

---

१ साध करके, सिद्ध करके। २ लाखों। ३ मेढक। ४ कदली (केला) के खंभ (यूप)। ५ हलदी। ६ भानु (सूर्य)। ७ अन्य।

क्षीन शरीर बीर[1] के बिछुरे राज भोग चित ते बिसराये।
लघु[2] दीर्घ तपसा अरु सेवा स्वामी धर्म सब जगहिं सिखाए॥
पुहुप विमान दूरि ही छाड़े चरण चपल प्रभु प्रग करि धाए।
आनंद मगन सदन कै कपि सुत कनक दंड ज्यों गिरत उठाए॥
भेंटत आंसु परत पीठि पर गद्गद गिरा नैन जल छाए।
ऐसे मिली सुमित्रा सुत को विरह अग्नि तनु जरत बुझाए॥
यथा योग भेंटे पुरवासी शूल मिटी सुख सिंधु बढाए।
सिया राम लक्ष्मण मुख निरखत सूरदास के नैन सिराए[3] ॥४

[कौशिल्या सुमित्रा आदि का आरती मंगलाचार करना]

राग मारु

अति सुख कौशल्या उठि धाई।
उदित बदन अरु मुदित सदन ते आरति साजि सुमित्रा ल्याई॥
ज्यों सुरभी वन बसति बच्छ बिनु परवश पशुपति[4] की बहुराई।
चली सांझ समुहाय श्रवत थन उमगि मिलन जननी दोउ आई॥
अमी वचन सुन होत कुलाहल देवन दिवि दुंदुभी बजाई।
दधि फल दूब कनक के कोपर[5] आरति युवति विचित्र बनाई॥
वरण वरण पट पड़त पांवड़े[6] नैननि सकल सुखद ही छाई।
पुलकित रोम हर्ष गदगद सुर युवतिन मंगल गाथा गाई॥
निज मंदिर में आनि तिलक दै द्विजन अशीश सुनाई।
"सिया सहित सुख लहो ह्यां तुम सूर दास बलि जाई" ॥५॥

[श्रीराम का राज्याभिषेक]

॥ राग मारू ॥

मणि मय आसन आनि धरे।
दधि मधु नीर कनक के कोपर आपुन भरत भरे॥

भाई। २ छोटे बड़े की सेवा। ३ ठंढ़े हुए। ४ चरवाहा—गोपाल।
थाल। ६ रास्ते में।

प्रथम भरत बैठाई बंधु को यह कहि पांई परे।
"हैं पावन प्रभु चरण पखारों रुचि करि आप करे॥"
निज कर चरण पखारि प्रेम रस आनंद आंसु ढरे।
ज्यों शीतल संताप सलिल दै शुद्धि समूह करे॥
परसत पाणि चरण पावन, दुःख अंग अंग सकल हरे।
सूर सहित आमोद चरण जल लैकर शीश धरे॥ ६॥

[वंदना]

॥ राग आसावरी ॥

विनती केहि विधि प्रभुहिं सुनाऊं।
महाराज रघुबीर धीर को समय न कबहूँ पाऊं॥
याम रहत यामिन के बीते तिहि औसर उठि धाऊं।
सकुच होत सुकुमार नींद से कैसे प्रभुहि जगाऊं॥
दिन कर किरण उदित ब्रह्मादिक रुद्रादिक इक ठाऊं।
अगणित भीर अमर[1] मुनि गन की तिहि ते ठौर न पाऊं॥
उठत सभा दिन मध्य सिया पति देखि भीर फिरि आऊं।
नहात खात सुख करत साहिबी कैसे कर अनखाऊं[2]॥
रजनी मुख आवत गुण गावत नारद तुम्बर नाऊं।
तुमही कहौ कृपण हैं रघुपति किहि विधि दुख समझाऊं॥
एक उपाय करौ कमला पति कहो तो कहि समझाऊं।
पतित उधारण सूर नाम प्रभु लिखि कागद पहुंचाऊं॥ ७॥

इति उतर काण्ड।

(सूर रामायण समाप्त)

---

१ देवता। २ रुष्ट हूं।

लहरी बुकडिपो

के

स्थायी ग्राहक बनने के नियम

१. एक रुपया प्रवेश फी देने से प्रत्येक सज्जन ग्राहक हो सकते हैं। यह प्रवेश फी लौटाई न जायगी।

२. स्थायी ग्राहकों को लहरी बुकडिपो द्वारा प्रकाशित पुराने और नये तथा आगे प्रकाशित होने वाले सब ग्रंथ पौने मूल्य में दिये जायंगे।

३. ग्राहक बनने के समय से पूर्व प्रकाशित ग्रंथों को लेना न लेना स्थायी ग्राहकों की इच्छा पर है, परन्तु आगे प्रकाशित होने वाले सब ग्रंथ उन्हें लेने होंगे।

४. यदि बिना कारण कोई वी० पी० वापस कर दिया जायगा तो उसका खर्चा स्थायी ग्राहकों को देना होगा। यदि वे ऐसा न करेंगे तो उनका नाम स्थायी ग्राहकों की श्रेणी से काट दिया जायगा।

५. किसी नई पुस्तक के प्रकाशित होने पर उसकी सूचना ग्राहकों को दी जायगी और उसके १५ दिन बाद पुस्तकें वी० पी० द्वारा उन्हें भेज दी जायंगी।

६. हमारे जो स्थायी ग्राहक अन्य प्रकाशकों द्वारा प्रकाशित पुस्तकें हम से मंगायेंगे। उन्हें हम उन पुस्तकों पर ≠) फी रुपया कमीशन काट देंगे।

७. हमारे प्रकाशित मासिक पत्र "उपन्यास लहरी" तथा साप्ताहिक पत्र "भारत-जीवन" के ग्राहक गण यदि अपना नाम स्थाई ग्राहकों में लिखाना चाहें तो केवल सूचना देने से ही नाम लिख लिया जायगा अर्थात् उन्हें प्रवेश फी का १) देना न पड़ेगा।

८. साथ वाला फार्म भर कर प्रवेश फी १) के साथ (भारत जीवन और उपन्यास लहरी के ग्राहकों के केवल ग्राहक नंबर लिख कर) भेजने से नाम स्थायी ग्राहकों में लिख लिया जायगा।

९. लहरी बुकडिपो द्वारा अन्य जितनी ग्रंथमाला या सीरीज निकलती हैं उन सभों की पुस्तकें भी इसी पौन मूल्य पर स्थाई ग्राहकों को मिलेंगी।

श्रीयुक्त मैनेजर लहरी बुकडिपो,

बुलानाला, काशी ।

प्रिय महाशय,

कृपा कर मेरा नाम अपने स्थायी ग्राहकों की सूची में लिख लीजिये । मैंने आपके नियम पढ़ लिये हैं और वे मुझे स्वीकार हैं ।

१. प्रवेश फी का एक रुपया मैं साथ भेज रहा हूँ ।

२. मैं भारत-जीवन / उपन्यास-लहरी × का ग्राहक हूं । मेरा ग्राहक नंबर— है ।

दस्तखत—

तारीख— नाम—

शहर— पूरा पता—

नोट—कृपा कर १ या २ नंबर की बातों में से एक को काट दीजिये ×चिन्हित दो नामों में एक काट दीजिये ।

लहरी बुक-डिपो
के
स्थायी ग्राहक बनने के नियम

१. एक रुपया प्रवेश फी देने से प्रत्येक सज्जन ग्राहक हो सकते हैं। यह प्रवेश फी लौटाई न जायगी।

२. स्थाई ग्राहकों को लहरी बुक-डिपो द्वारा प्रकाशित पुराने और नये तथा आगे प्रकाशित होने वाले सब ग्रन्थ पौने मूल्य में दिये जायंगे।

३. ग्राहक बनने के समय से पूर्व प्रकाशित ग्रन्थों को लेना न लेना स्थायी ग्राहकों की इच्छा पर है, परन्तु आगे प्रकाशित होने वाले सब ग्रन्थ उन्हें लेने होंगे।

४. यदि बिना कारण कोई वी० पी० वापस कर दिया जायगा तो उसका खर्चा स्थायी ग्राहकों को देना होगा। यदि वे ऐसा न करेंगे तो उनका नाम स्थायी ग्राहकों की श्रेणी से काट दिया जायगा।

४. किसी नई पुस्तक के प्रकाशित होने पर उसकी सूचना ग्राहकों को दी जायगी और उसके १५ दिन बाद पुस्तकें वी० पी० द्वारा उन्हें भेज दी जायंगी।

६. हमारे जो स्थायी ग्राहक अन्य प्रकाशकों द्वारा प्रकाशित पुस्तकें हमसे मंगायेंगे उन्हें हम उन पुस्तकों पर =) की रुपया कमीशन काट देंगे।

७. हमारे प्रकाशित मासिक-पत्र "उपन्यास-लहरी" तथा साप्ताहिक पत्र "भारत-जीवन" के ग्राहक गण यदि अपना नाम स्थायी ग्राहकों में लिखाना चाहें तो केवल सूचना देने से ही नाम लिख लिया जायगा अर्थात् उन्हें प्रवेश फी का १) देना न पड़ेगा।

८. साथ वाला फार्म भर कर प्रवेश फी १) के साथ [भारत-जीवन और उपन्यास-लहरी के ग्राहकों के केवल ग्राहक नंबर लिख कर] भेजने से नाम स्थाई ग्राहकों में लिख लिया जायगा।

९. लहरी बुक-डिपो द्वारा अन्य जितनी ग्रन्थमाला या सीरीज निकलती हैं उन सभों की पुस्तकें भी पौन मूल्य पर स्थाई ग्राहकों को मिलेंगी।

॥ श्री ॥

लहरी बुकडिपो

बुलानाला काशी

का

मासिक

सूचीपत्र

अक्टूबर-नवम्बर–१९२४

एक कार्ड पर अपना नाम व पता लिख भेजने से यह मासिक सूचीपत्र प्रतिमास मुफ्त भेजा जाता है।

लहरी प्रेस, काशी।

नियम।

१—डाक महसूल मनीआर्डर कमीशन और रजिष्ट्री आदि का खर्च बढ़ जाने के कारण प्रत्येक छोटे से छोटे पार्सल पर भी कम से कम ।≋) खर्च पड़ जाता है अस्तु ज्यादा पुस्तकें एक साथ मंगाने से खर्च की किफायत होती है।

२—दस रुपै से ऊपर मूल्य की पुस्तकें मंगाने से १) पेशगी भेजना उचित है।

३—अधिक पुस्तकें रेल द्वारा मंगाने में ही सुभीता होता है।

४—प्रायः ग्राहक गण लिफाफे में टिकट नोट आदि रख कर बिना रजिष्ट्री कराये भेज देते हैं जिनके खो जाने से तरद्दुद होता है। कृपया बिना रजिष्ट्री कराये इस प्रकार न भेजा करें।

५—इन पुस्तकों के इलावा और भी सब तरह की पुस्तकें हर वक्त मौजूद रहती हैं जिनका बड़ा सूचीपत्र पत्र पाते ही मुफ़ भेजा जाता है। आवश्यकता हो तो एक बार हमें भी याद करें :—

मैनेजर लहरी बुकडिपो—लहरी प्रेस,

बुलानाला, काशी।

हमारे यहां हिन्दी की सब प्रकार की पुस्तकों का बहुत अच्छा संग्रह है। कलकत्ता, बम्बई, प्रयाग आदि स्थानों के सब प्रकाशकों तथा लेखकों की पुस्तकें हर समय बिक्री के लिये मौजूद रहती हैं। इस सूचीपत्र में दी हुई पुस्तकों के अतिरिक्त यदि अन्य पुस्तकों की आवश्यकता हो तो भी हमसे पत्र व्यवहार कीजिये।

पढ़ने योग्य अपूर्व पुस्तकें

उपन्यास

अमीर हमजा	२)	अलिफ लैला	२)
अर्थ का अनर्थ	।<)	अदलबदल	।)
अद्भुत हत्याकारी	=)	अनाथ बालिका	।<)
अनूठी बेगम	=)	अनंतमती	॥<)
अनंत उपन्यास	≡)	अनंगरंग	१॥=)
अविवाहिता	।।)	आदर्श बालिका	≈)
आदर्श माता	॥)	आदर्श चाची	१।)
आदर्श रमणी	॥≈)	आदर्श लीला	१॥)
आदर्श मित्र	॥)	आदर्श नगरी	१)
आनन्द मठ ।।) बड़ा	१।)	आरण्य बाला	१ ≈)
आश्चर्य्य प्रदीप	~)	आश्चर्य्य वृत्तान्त	।≈)
आलोकलता	१।=)	आसमानी लाश	≈)
इन्द्रजालिक जासूस	≡)	इन्दिरा	॥≡)
इन्दुमती	=)	उद्भ्रान्त प्रेम	॥)
इन्दुमती	३॥)	उपन्यास भंडार	॥)
उदयभ न चरित्र	≡) ॥)	एकलव्य	।।)
एकादशी	१)	अंजना देवी	।।=)
एम ए बनाकर क्यों मेरी मिट्टी खराब की	२)	अङ्गरेज डाकू	॥≈)
कर्म पथ	२)	कथा कदम्बिनी	॥)
कनक रेखा	॥)	कनकलता	१)
कनक सुन्दर	।।)	कनक कुसुम	।<)
नवकुमार वा कपालकुंडला	।।≈)	कर्मफल	१।।)

मिलने का पता—लहरी बुकडिपो, लहरी प्रेस, बनारस सिटी।

कर्ममार्ग	२)	कर्मक्षेत्र	३)
कलंकिनी	॥≈)	कापालिक डाकू	१॥)
कामिनी	-)	कालग्रास	।)
कालेज होस्टेल	।)	कालचक्र	।)
काला कुत्ता	॥)	कालीनागिन	१)
किरणशशी	।-)	किशोरी वा बीरबाला	≡)
किस्मत का खेल	।-)	कृष्ण बसना सुन्दरी	१॥)
कृष्णकान्ता	४)	कुन्दनलाल	१॥)
कुसुम संग्रह	१।)	केतकी की शादी	।)
क़ैदी की करामात	१॥)	कोटारानी	≋)
कोहेनूर	१॥)	कौशलकिशोर	१)
कंकन चोर	२)	खरा सोना	१)
खूनी औरत	१।)	खूनी डाकू	-)
गल्पांजलि	१।)	गल्प लहरी	१।)
गल्पमाला	२॥)	गल्पांजलि	॥)
गाड़ी में लाश	१)	गुप्तरहस्य	॥-)
गुलबदन या रजिया बेगम	१॥)	गुलबहार या आदर्श भ्रातृस्नेह	।)
गोपाल के गहने	।)	गोविंदराम	१)
गंगोत्तरी	॥)	घटना चक्र	२।)
घटना घटाटोप	२)	चतुरंगचौकड़ी	।-)
चपला	२॥)	चरित्र चित्रण	१॥)
चरित्र हीन	३।)	रानी जयमती	॥)
चाणक्य और चन्द्रगुप्त	२॥)	चालाक चोर	१॥)
चारुदत्त	।)	चाँदबीबी	२)
चिन्ता	॥) बड़ा १॥)	चित्रांगदा	॥)
चित्रावली	।≈)	चुम्बक	।≈)
चोट	॥≈)	चोर की बहादुरी	≈)

मिलने का पता—लहरी बुकडिपो, लहरी प्रेस, बनारस सिटी।

चोर की तीर्थ यात्रा	≈)	चोर चौकड़ी पर	।-)
चौहानी तलवार	॥)	चन्द्रशाला	।=)
चन्द्रलोक की यात्रा	-)	चन्द्रगुप्त	२॥।)
चन्द्रावली	=)॥	चन्द्रिका	-)
चन्द्रधर	॥)	चम्पा	।)
चम्पक बरणी	-)	चीना सुन्दरी	१॥)
जर्मन जासूस	१।)	जवाहिरात की पेटी	-)
जर्मन षड़ यंत्र	१॥)	जय पराजय	॥)
जय श्री वा बीरबालिका	।-)	जया	॥।)
जया जयन्त	१।)	जयन्ती	॥)
जहर का प्याला	१)	जादू का महल	१॥)
जानकी	।)	जासूस पर जासूस	।)
जासूस की झोली	१।)	जासूसी कहानियां	॥।=)
जासूसी गुलदस्ता	१) २)	जासूसी पिटारा	॥।)
जासूसी कुत्ता	१॥)	जासूस के घर खून	१॥)
जासूसी चक्कर	२॥)	जासूस जगन्नाथ	१॥)
जिन्दे की लाश	=)	जीवन	॥।-)
जीवन ज्योति	१।)	जोड़ा जासूस	१।)
जंगली रानी	।=)	जंगल की मुलाकात	-)
टर्की का कैदी	१॥।)	टालस्टाय की कहानियाँ	१)
टापू की रानी	१॥।)	टिकेन्द्र जीत सिंह	॥।)
डबल जासूस	१॥)	डाक्टर साहब	१॥)
डाकू	-)॥	डाकू रघुनाथ	१=)
डाक्टर की कहानी	।)	ताया का खून	≡)
तारासिंह	≈)	तारामती	।)
त्रिदेव निरूपण	।-)	त्रिवेणी वा सौभाग्य श्रेणी	।)
तिलस्माती मुंदरी	।)	तिलस्मी बुर्ज	-)

मिलने का पता-लहरी बुकडिपो, लहरी प्रेस, बनारस सिटी ।

तीन परी	१।)	तूफान	‐)
दर्प दलन	।।।≈)	दानवी लीला	१।)
दारोगा का खून	।।)	दीनानाथ	।‐)
दुर्गेश नन्दिनी	१।)	देवी चौधरानी	।।।)
देवी या दानवी	।)	दो बहिन	।।)
धन कुबेर	१।।।)	नकली प्रोफेसर	=)
नकली रानी	१।)	नकाबदार कलंकी	।≈)
नवजीवन	≋)	नवाबी परिस्तान	१=)
नवाबी महल	।।।)	नवाब नंदिनी	१।)
नवनिधि	।।।≈)	नये बाबू	≋)
नरदेव	।)	नराधम	१=)
नल दमयन्ती	।)	नलिनी बाबू	≋)
नन्दन भवन	।।≈)	नाटक चक्र	।)
निर्मला	≈)।।	निराला नकाब पोश	।‐)
निर्धन की कन्या	।।)	निः सहाय हिन्दू	।)
निहिलिस्ट रहस्य	१)	माधव उपन्यास	≡)
नेमा	।≈)	नोकझोंक	१)
पतित पति	।।।≈)		
परीक्षा गुरू	१)	प्रण पालन	।)
प्रणवीर	।‐)	प्रफुल्ल	१=)
प्रवासिनी	१)	पाप का अन्त	।।=)
पीतल की मूर्ति	७।।)	पिशाच पिता	≈)
पुतलीमहल	३।।।)	पुष्पलता	१)
पुष्पहार	१।)	पूना में हल चल	।।≈)
प्रेम मोहनी चेत चातरी	=)।।	प्रेम कान्ता	४।≈)
प्रेम का फल	।।=)	पेमा का खून	।)
प्रेमोपहार	।)	पेरिस रहस्य	१।)

मिलने का पता—लहरी बुकडिपो, लहरी प्रेस, बनारस सिटी।

प्रेम पचीसी	२॥)	प्रेमाश्रम	३॥)
पंच मंजरिका	।)	पंजाब पतन	॥)
फूल कुमारी	॥)	फूलों का हार	॥।)
फूल में कांटा	॥≈)	फूलों की डाली	≡)
बज्राघात	२॥)	बड़े घर की बड़ी बात	१)
बनमालीदास की हत्या	≈)	बनबीर	२)
बनदेवी	॥।)	बनारसी दुपटा	।)
वरदान	१।।।)	बलवन्त भूमिहार	।॥)
बात की चोट	॥≈)	बारांगना रहस्य	४॥) ५)
वारुणी	॥≈)	बालमित्र	≢)
बालिका हरण	।॥)	वोल्शेविक रहस्य	१।॥)
ब्याही बहू	≡)	विचित्र मित्र	।≈)
विचित्र दगाबाजी	≈)	विदूषक	।॥)
विधवा	।~)	विवाह कुसुम	१॥)
बिमाता	३)	विमान विध्वंसक	१)
विराज बहू	॥≡)	विलायती डाकू	।≈)
विचित्र समाज सेवक	३)	बीर मालो जो भोंसले	॥≈)
वीर हम्मीर	≈)	वीर पूजा	१)
वीर दुर्गादास	२)	वीर रमणी	१।)
वीर वारांगना	॥)	वीर जयमल	।≈)
वीर कुमारी	≈)	वीरबाला	।॥)
वीर पत्नी	।~)	बीरेन्द्र	≈)
बीरेन्द्र बिमला	~)	बूढ़ा जासूस	≈)
बेगुनाह का खून	।)	बेलून बिहार	१।)
बेनिस का ब्यापारी	॥।)	बेनिस का बांका	१)
बे बादल का बज्र	।≈)	बंग विजेता	१।॥)
भड़ाम सिंह शर्मा	॥≈)	भ्रमर	१॥≈)

भयानक भूल	=)	भयानक बदला	१)
भयानक भेदिया	|=)	भयंकर तूफान	१)
भाग्य चक्र	१॥) =)	भानमती	॥)
भारत का अधः पतन	=)	भारती	२॥)
भीमसिंह	१॥) १)	भीषण डकैती	१॥)
भीषण भविष्य	|)	भीषण नारी हत्या	|=)
भीषण भूल	|=)	भूतों का डेरा	|)
भूल भुलैयां	=)	भोजपुर की ठगी	॥=)
मंडेल भगिनी	१|)	मदन मोहिनी	॥-)
मञ्जरी	१|)	युगल मालती	|=)
मधुलपतिका	|)	मधुमति	≡)॥
मत्तो और पत्तो	॥)	मन्न से राय मुन्नालल बिहादुर	॥=)
मयंक मोहनी	॥=)-१)	मरदानी औरत	१)
मरे हुये की मौत	|-)	मल्लिका देवी	१॥)
महेन्द्र मोहनी	१॥=)	महेन्द्र कुमार	५|)
मान कुमारी	३)	मानवी कमीशन	=)
माया	=)	मायारानी	=)
माया मरीचिका	॥-)	मायापुरी	२॥)
मालती	|)	माल गोदाम में चोरी	=)
मालती	-)	मृणालिनी	
मूर्ख बुद्धिमान	|=)	मेवाड़ का उद्धार	॥)
मेवाड़ का उद्धार कर्ता	=)	मेरी जासूसी	|)
मोती महल	४॥), ३॥|)	मोहनी	॥=) =)
मृत्यु विभीषिका	१॥)	मुन्नाजान	॥)
सेवा सदन	३|)	हेम चन्द्र	१॥=)
लंडन रहस्य प्रति भाग	॥=)	बारांगना रहस्य	५)

नाटक

अजात शत्रु	१≈)	अत्याचार का अंत	।।।)
वीर अभिमन्यु	।।।)	असीरेहिं	॥) ।≋)
अज्ञातवास	।।।=)	आतशी नाग	।।)
अंधेर नगरी	≈)	महात्मा कबीर	१)
आदर्श हिन्दू विवाह	।।)	आनन्द रघुनन्दन	॥)
ईसा नाटक	।।।=)	उस पार	१=)
कलिकाल रहस्य	।)	कलियुगागमन	≡)
कामिनी मदन	।)	काली नागिन	॥=)
काशी दर्शन	।।)	किरण मई	।-)
कृष्णावतार	१)	कुलदीपबाबू	≈)
खां जहाँ	।।।≈)	ख्वाबे हस्ती	।≋)
खूने नाहक	।≋)	खून का खून	।≈)
खूब सूरत बला	॥)	गड़बड़ घोटाला	≋)
गोपीचन्द्र भरथरी	।।)	गो रक्षा नाटक	≋)
गोरख धंधा	॥)	गौतम बुद्ध	।।।)
गौतम अहिल्या	।।)	गंगावतरन	।।≈)
चन्द्रावली	।)	जगमोहन भूषण	≈)
चांद बीबी	१।)	चौपट चपेट	≋)
जया	।)	जहरी सांप	।।)
जीवन मुक्त	१।।)	जीवन मुक्ति रहस्य	२)
जैसे को तैसा	=)	झक मारी	।≈)
डबल जोरू	≋)	डुप्लीकेट	।≈)
ताराबाई	१।)	तुलसीदास	॥≈)
ताराबाई	१)	पुरुविक्रम नाटक	।।।)
तेगे सितम	।।।)	दयानन्द	।।≈)

मिलने का पता—लहरी बुकडिपो, लहरी प्रेस, बनारस सिटी।

<table>
<tr><td>दलजीतसिंह</td><td>||-)</td><td>दानी कर्ण</td><td>||=)</td></tr>
<tr><td>दिलफरोश</td><td>||)</td><td>दुर्गादास</td><td>१||)</td></tr>
<tr><td>दुशमने ईमान</td><td>||=)</td><td>दुर्जन</td><td>|-)</td></tr>
<tr><td>देवी जालिया</td><td>||)</td><td>दोधारी तलवार</td><td>||)</td></tr>
<tr><td>धर्म योगी</td><td>|||)</td><td>धर्मंजय</td><td>१)</td></tr>
<tr><td>धूप छांह</td><td>||)</td><td>नई रोशनी</td><td>||=)</td></tr>
<tr><td>नलदमयन्ती</td><td>|||) १)</td><td>नन्दविदा</td><td>|)</td></tr>
<tr><td>निर्भय भीम व्यायोग</td><td>≡)</td><td>नूरजहां</td><td>||)</td></tr>
<tr><td>परोपकार</td><td>१)</td><td>प्रबोध चन्द्रोदय</td><td>||)</td></tr>
<tr><td>प्रह्लाद नाटक</td><td>=)</td><td>पांडव प्रताप</td><td>||)</td></tr>
<tr><td>पृथ्वीराज</td><td>|||)</td><td>पूर्ण भारत</td><td>|||=)</td></tr>
<tr><td>बङ्गमा भगत</td><td>||)</td><td>बनबीर</td><td>||=)</td></tr>
<tr><td>बलिदान</td><td>१|)</td><td>बाजीराव</td><td>१=)</td></tr>
<tr><td>बाल कृष्ण</td><td>||=)</td><td>महात्मा विदुर</td><td>१)</td></tr>
<tr><td>भक्ति विजय</td><td>||=)</td><td>भारत दुर्दशा</td><td>-)||</td></tr>
<tr><td>भारत उद्धार</td><td>|||)</td><td>भारत गौरव</td><td>१||)</td></tr>
<tr><td>भारत विजय</td><td>|||)</td><td>भारत जननी</td><td>=)</td></tr>
<tr><td>भारत रमणी</td><td>|||=)</td><td>भीष्म</td><td>||)</td></tr>
<tr><td>भूल भुलैयाँ</td><td>|≡)</td><td>महाभारत</td><td>||=)</td></tr>
<tr><td>माधव सुलोचना</td><td>|)</td><td>पद्मावती</td><td>||)</td></tr>
<tr><td>माधवी</td><td>≡)</td><td>मानी बसंत</td><td>||=)</td></tr>
<tr><td>मृच्छकटी</td><td>|||)</td><td>मीठा जहर</td><td>||)</td></tr>
<tr><td>मीरा बाई</td><td>||=)</td><td>मूर्ख मण्डली</td><td>|-)</td></tr>
<tr><td>मूर्ख मंडली</td><td>|||)</td><td>युधिष्ठिर दिग विजय</td><td>|)</td></tr>
<tr><td>यहूदी की लड़की</td><td>||)</td><td>रण धीर प्रेम मोहनी</td><td>||)</td></tr>
<tr><td>रघुनाथ राव</td><td>||=)</td><td>राणा संग्राम सिंह</td><td>|||)</td></tr>
<tr><td>राम लीला</td><td>|||=)</td><td>रामायण</td><td>|||)</td></tr>
</table>

रूपवती	≡)
रोमियो जुलियट	।)
स्वामी विवेकानन्द	१)
विश्वबोध	।)
विश्वामित्र	१) ।॥)
वैधव्य कठोर दंड है या शान्ति	।≡)
सत्यनारायण	१।)
साकार रहस्य	।-)
सिलवर किंग नाटक	॥)
सुकन्या	१।)
सुनहरी खंजर	॥)
सूम के घर धूम	।)
सैदे हवस	॥)
संयोगिता हरण	॥)
शरीफ बदमाश	॥=)
श्रवण कुमार	॥)
छत्र पति शिवाजी	१।)
श्रीमती मञ्जरी	।॥)
हरिश्चन्द्र	।) ॥=)
हिन्दू स्त्री	।॥)
रेशमी रुमाल	॥)
शकुन्तला	॥) ।॥)
बिल्म मङ्गल	॥)
विशाख	१)
बीर कुमार छत्रसाल	१॥)
भक्त चन्द्र हास	१।)
सती चिन्ता	१)
सावित्री सत्यवान	।॥)
सिंहल विजय	१=)
सुकुमारी	१।)
सफेद खून	॥=)
भक्त सुदामा	१)
भक्त सूरदास	॥=)
संग्राम	१।)
संसार चक्र	।॥)
शहीदेनाज़	।=)
श्यामा स्वप्न	१।)
हिन्दू	१)

जीवन चरित्र।

अब्राहमलिंकन	॥) ॥=)
सम्राट अशोक	१॥) २।॥)
आत्मोद्धार	१)
आनन्दीबाई	।=)
एनीबेसेंट	।=) ।॥)
भारत भक्त ऐन्ड्रूज	२।)
अरविन्द घोष	॥)
अहल्याबाई	≡)
आदर्श चरितावली	।=)
उथेलो	॥)
एब्राहम लिंकन	॥=)
श्रीकृष्ण	४)

मिलने का पता—लहरी बुकडिपो, लहरी प्रेस, बनारस सिटी।

श्रीकृष्ण	४॥।)	बालक श्रीकृष्ण	१।)
श्रीकृष्ण चरित्र	।≈) ≈)	केशव चंद्र सेन	१≋)
कोलम्बस	।॥)	गाजीमियां	-)॥
महात्मा गांधी	१)	गांधी गौरव	।॥) ३)
गांधीजी	॥)	गांधीजी कौन हैं	॥-)
महात्मा गांधी की दिव्य बाणी	≈)	गांधी सिद्धांत	॥)
महात्मा गांधी की जीवनी	≈)	गांधी दर्शन	१)
गांधी गीता	२)	महाकवि गालिब और उनका उर्दू काव्य	॥)
गोपीचंद भरथरी	=)	सम्राट चन्द्रगुप्त	।)
चित रंजन दास	।≈) ॥)	देश भक्त दामोदर	।॥=)
डाक्टर सर जगदीश चंद्रवसु	।≈)	जेनरल गारफील्ड	।)
जमसेदजी नसरवानजी ताता	।)	जार्ज पंचम	।=)
जेनरल जार्ज वाशिंगटन	१)	जे एन टाटा	।≈)
म० जेरीवाल्डी	-।)	जोजेफ जेरीवाल्डी	१।≈)
टेरेन्स मैक्सविनी	≈)	द्विजेन्द्र लाल राय	।)
दादा भाई नौरोजी	-)॥-१॥)	देवी जोन	॥)
दिल का कांटा	१)	द्रौपदी कीचक	।)
दो खून	≈)	नादिरशाह	१॥।)
धन कुबेर कारनेगी	१)	महाराणा प्रताप	१।)
नेपोलियन	२।)	परीक्षित	१।)
परशुराम	३)	पृथ्वीराज	१।)
राजर्षि प्रह्लाद	२।)	पंजाब केशरी रणजीतसिंह	॥) १॥।)
प्रेसिडेन्ट बिलसन	॥-)	महाराज बरौदा चरित्र	।≈)
पंजाब हरण और दलीपसिंह	२)	वंकिमचन्द्र चटर्जी	१≋)
बोलशेविक जादूगर	।।)	बिचित्र जीवन	१)
मोगल साम्राज्य बाबर	।)	बीर चरितावली	।।=)
महात्मा विदुर	१॥।)		

मिलने का पता—लहरी बुकडिपो, लहरी प्रेस, बनारस सिटी।

बीर कर्ण	१।)	बुद्ध जी का जीवन चरित्र	॥)
भारत के दश रत्न	।-)	भारत के महापुरुष	३)
भीम चरित्र	।।।≈)	भीष्म पितामह	।-)
राजर्षि भीष्म पितामह	।-)	महादेव गोविन्द रानाडे≈)-≈)॥-।॥)	
मेघनाद बध	।॥)	मेजिनी का जीवन चरित्र	।॥)
मेगास्थि नीज	॥≈)	महात्मा ग्वीपसेप मेजिनी	।)
मेरे जेल के अनुभव	।≈)	मेरी कैलाश यात्रा	॥)
बुद्ध चरित	२।)	महादेव गोविन्द रानाडे	१)
मौलाना रूम और उनका उर्दू काव्य	१॥)	राष्ट्रीय निर्माता	॥≈)
		रूस का राहू	।≈)
लवकुश	१॥)	लार्ड किचनर	१)
लाला लाजपत राय	॥)	लोकमान्य तिलक	।।) १)
शिवाजी	।-)	महात्मा शेखसादी	।≈)
श्रीराम चरित्र	५॥)	राणा प्रताप	१।॥)
बीर केशरी शिवाजी	४।)	सिकन्दर शाह	१॥≈)
सप्तर्षि	।॥≈)	महानुभाव शुक्रात	≈)
सिराजुद्दौला	२)	सुहराब रुस्तम	१॥)
सुएनच्वांग	१।)	हर्ष चरित्र भाषा	॥)
हरीसिंह नलवह	≡)	नेपोलियन बोनापार्ट	१)
सम्राट हर्ष वर्धन	॥)		

राजनीतिक तथा ऐतिहासिक

अमीर अब्दुल रहमान खाँ	।॥)	गदर का इतिहास	८)
अकाली दर्शन	।॥)	अहमदाबाद की कांग्रेस	।=) ।)
असहयोग का इतिहास	=)	असहयोग दर्शन	१।)
आधुनिक भारत	॥≈)	आयरलैंड की राज्य क्रान्ति	।-)
आयरलैंड में मातृ भाषा	।≈)	आयरलैंड में होमरूल	॥)

इंगलैंड का इतिहास	१) २)
इन्दौर का इतिहास	॥-)
गदर का इतिहास	१॥)
एशिया निवासियों के प्रति यूरोपियनों का बर्ताव	।=)
गुलामी	॥।=)
चीन की राज्य क्रान्ति	१॥)
जापान का उदय	।)
ट्रान्सवाल में भारतवासी	।≡)
दाराशिकोह	=)॥
नवीन भारत	१॥)
पंजाब का भीषण हत्याकांड	१॥।)
महाराणा प्रताप का बनवास	-)
पूना का इतिहास	-)
फिजी में मेरे २१ वर्ष	।=)
बनारस का इतिहास	-)
बिहार का बिहार	॥)
बोलशेविज्म	१।=)
भारत वर्ष में चरित्रकीदरिद्रता	-)
भारत की प्राचीन झलक	२)
भारत के देशी राष्ट्र	॥।)
भारत बर्षीय राजदर्पण	२)
भारतीय जागृति	१)
भारतीयराष्ट्र निर्माण	।=)
भारतीय शासन सुधार	॥)
मोगल वंश	।)
युरोप की लड़ाई	।-)
इटाली की स्वाधीनता	॥)
सचित्र ऐतिहासिक लेख	।=)
ग्रीस का इतिहास	१=)
कांग्रेस के पिता मि० ह्यूम	॥।)
कार्नेगी और उसके विचार	॥=)
चित्तौड़ की चढ़ाइयाँ	॥=)
जापान की राजनैतिकप्रगति	३।=)
जापान	॥।)
तरुण भारत	१।)
दिल्ली अथवा इन्द्र प्रस्थ	॥)
नागपुर की कांग्रेस	॥।)
पंजाबकाभीषणनरहत्याकांड	॥।≡)
पांडव बनवास	२)
बनारस	१॥)
श्री वृन्दावन	=)
बेलजियम का झंडा	।)
भारत वर्ष	॥)
भारत का मैट्रिकुलेशनइतिहास	१)
भारतकोस्वाधीनताकासंदेश	१।-)
भारत वर्ष के लिये स्वराज	।=)
भारत और इंगलैन्ड	२)
भारतीय वीरता	१॥)
भारतीयशासन संबंधी सुधारों का आवेदन पत्र	१॥।)
भारतीय शासन	॥।=)
युरोपीयमहायुद्धकाइतिहास	१॥।=)
युरोपीय महा भारत	१॥।=)

मलने का पता—लहरी बुकडिपो, लहरी प्रेस, बनारस सिटी।

रूस में युगान्तर	२)	राजपूतों की बहादुरी	१)
राज सम्बधी सिद्धान्त	१।।)	रोम का इतिहास	१)
शिवाजी की योग्यता	।।≈)	रूस की राज्यक्रान्ति	२)
सिक्खोंका उत्थान और पतन	१)	सत्याग्रह की मीमांसा	।)
सत्याग्रह और असहयोग	१।।।)	सर्बिया का इतिहास	।≈)
स्वतंत्रता की झंकार	।।)	स्वराज्य की योग्यता	१।)
स्वराज्य की मांग	१।।)	स्वराज्य गुटका	≈)
स्वराज्य और हमारी योग्यता	।:	स्वराज्य सप्ताह	।।)
स्वराज्य पर सर रवीन्द्र	।)	स्वराज्य पर मालवीय	।)
स्वराज्य की गूंज	।≈)	सिक्खों का साहस	≈)
सिक्खों का परिवर्तन	१।।)	सिन फिनर	।)
संसार व्यापी असहयोग	।।≈)	संसार की क्रान्तियां	१।।≈)
हम असहयोग क्यों करें	।।)	हुमायूं नामा	।।)

बालोपयोगी

आकाश की बातें	≡)	कैलास का बिश्वास	≡)
तैरना सीखना	=)	ध्रुव चरित्र	।)
नवीन पत्र प्रकाश	।।=)	नवयुवको स्वाधीन बनो	।।)
नवीन बाल पत्र बोधनी	≡)	नीति शिक्षावली	-)।।
नीति धर्म अथवा धर्म नीति	।)		
पौराणिक कथा	।-)	फुटबाल का खेल	-)।।
ब्रह्मचर्य	।-)	व्यवहारिक पत्रबोध	।।≈)
बालकों की बातें	।।)	बालहित	-)
बालबीर चरितावली	।।)	बाल कथा कहानी	।।-)
बाल विनोद	।≈)	बाल बोधनी	-)
बालोपदेश	।), ।।)	विद्यार्थी जीवन का उद्देश्य	-)
भारतीयनवयुवकों को राष्ट्रीय सन्देश	।।।)	भारतीय नीति कथा	।।।)

भारतीय विद्यार्थी विनोद	।≈)	भारती सुनीतिकथा	॥≈)
मिडिल क्लास भूगोल	।-)	युवक शिक्षा	।≈)
युवाओं को उपदेश	॥-)	शिशु सदुपदेश	≡)
विद्यार्थी जीवन	॥)	विनोद	≈)
शिक्षा सुधार	॥)	शिक्षा का आदर्श	।-)
संजीवनी बूटी	॥।)	किशोरावस्था	॥≡)
समुद्रकी सैर	॥।≈)		

स्त्रियोपयोगी

पतिव्रता अरुन्धती	॥=)	आदर्श दम्पति	१)
आर्य महिला रत्न	२।)	कुल कमला	॥।≈)
गृहलक्ष्मी	१।)	गृह शिल्प	॥)
गृह शिक्षा	१।)	जेवनार	॥)
तरंगिणी	१।)	देवी द्रौपदी	॥≈)
सती दमयन्ती	॥=)	द्रौपदी और सत्यभामा	=)
नल दमयन्ती	१॥)	पतिव्रता दमयन्ती	=)
पत्नी प्रभाव	॥।)	पतिव्रता मनसा	॥)
पतिव्रता गान्धारी	॥।)	पत्रांजलि	॥)
बच्चों की रक्षा	।)	बच्चों का चरित्र गठन	॥)
बनिता बिनोद	॥≈)	बनिता बिलास	।-) ॥≈)
वनिता विलास	।—)	वनिता बोधनी	।≈)
व्यंजन विधान	१)	बिधवा कर्तव्य	॥)
महासती वृन्दा	१)	भगिनी भूषण	≈)
भारत की क्षत्राणी	॥)	भारत की सच्ची देवियां	॥)
भोजन विधि	।≈)	सती मदालसा	॥)
माता	॥।)	माता और पुत्र	-)
माता के उपदेश	।)	मुस्लिम महिला रत्न	२।)

रमणी पंचरत्न	२॥)	पति व्रता रुक्मिणी	॥≠)
ललना सहचरी	१॥)	शकुन्तला	२) ॥≠)
शर्मिष्ठा	॥≠)	शर्मिष्ठा देवयानी	२।)
सच्ची स्त्रियां	॥)	सती विपुला	२।)
सती सामर्थ्य	।॥)	सती महिमा	१।)
सती पंचरत्न	१।)	सती बेहुला	२।)
सती सतीत्व	१।)	सती सुकन्या	।॥) १)
सती अनुसूया	॥≠)	सावित्री सत्यवान	१॥) ।)
सावित्री	।≠)	सती सावित्री	॥)
सावित्री	≡)	सती वृतान्त	१॥)
स्त्रियों का स्वर्ग	२)	सीता बनवास	॥) ॥≠)
सीता	२)	सती सीमन्तिनी	।॥)
सीता की जीवनी	~) ॥)	स्त्री शिक्षा शिरोमणी	।॥)
स्त्री धर्म बोधिनी	।≠)	सुघड़ चमेली	≠)
सती सुलक्षणा	॥)	सती सुलोचना	।॥)
सूत्र शिल्प शिक्षक	१)	सोने का चाँद	।)
हरिश्चन्द्र शैव्या	२॥)	पार्वती	२)

काव्य तथा गायन

अकबर और उनका उर्दू काव्य	।≡)	अनाथ	।)
अन्योक्ति कुसुमांजलि	~)	अनोखा रंडीबाज	)॥
आनन्द मोहन	~)॥	आत्मार्पण	।~)
इन्द्रावती	।॥)	काव्य कुसुमांजलि	≠)
कबीर के शब्द	≠)	श्रीकृष्ण चरित्र	~)॥
कुसुमांजलि	≠)	कंसबध	।≡)
गजलियात दिलबहार	≠)	गोखले प्रशस्ति	≠)
गोपाल विनय	~)	गोपालगारी	~)

चमनिस्ताने हमेशा बहार	१)	छन्द रत्नावली	≋)
जयद्रथ बध	॥)	जागृत भारत	॥)
चन्दूलाल भजन माला	॥)	प्रेम पुष्पांजलि	१।)
जातीय कविता	१॥)	जानकी बाग विनोद	।)
जिगरी मिलाप	-)	त्रिशूल तरंग	॥=)
थियेट्रिकल गायन	।)	देव और बिहारी	१॥=)
देव यानी	।)	देव दूत	।=)
विवेक दर्पण लावनी	।-)	विमल प्रसूनांजलि	≋)
देहरा दून	।=)	नजर बन्द	=)
नीतिदीपिका	।)	पथिक	॥)
पद्य प्रमोद	॥।)	पद्य प्रदीप	॥)
पद्य प्रभाकर	।-)	पद्यपारिजात	।)
भारत विनय	१=)	मशहूर गवैया	२=)
वीर पंचरत्न	२॥)	वीर विनोद	२)
बारहमासा नवरत्न	-)	विधवा प्रार्थना	।-)
बिहारी की सतसई २ भाग	४॥)	वीणाझंकार	।=)
बसंत विकाश	≋)	बहारे थियेटर	।=)
भक्ति प्रदीप स्तोत्र माला	-)	श्रीमद्भगवत गीता	॥=)
भजन प्रभाश्य	-)॥	वैतालिक	।)
भारत भक्ति	≋)॥	भारत गीत	॥=)
भारतोदय भजनावली	॥।)	भोज प्रबन्ध	॥।)
मन की लहर	=)	मनरंजन संग्रह	।≋)
मारुति विजय	॥)	मिलन	।)
मीराबाई के भजन	-)	मौर्य्य विजय	)
रसाल बन	।-)	रसीला गवैया	-)
रसखान दोहावली	-)॥	राग रुस्तमे हिन्द	=)
रागिनी थियेटर	।-)	रागसाज संग्रह	॥।)

राघव गीत	१।)	राधकोपनिषद्	।।।)
राम चरित चिन्तामणि	२)	राम चरित चंद्रिका	॥)
राम कलेवा	≠)	राशिमाला	-)॥
राष्ट्रीय झंकार	१)	राष्ट्र भारती	॥)
राष्ट्रीय तरंग	।-)	राष्ट्रीय गान	।)
राष्ट्रीय बीणा	॥≠)	रंगीला गवैया	-)॥
वाक्य विनोद	।≠)	बामन विनोद	-)॥
शकुन्तला	।)	संस्कृत कवियों की अनोखी सूझ	।≠)
श्याम छटा	-)	श्यामा सरोजनी	≠)
शिव पार्वती संवाद	≡)	शिव ताडंवस्तोत्र	≠)
शुकदेव	≠)	सत्यभास्कर	≠)
सत्याग्रहीप्रह्लाद	।)	सुदामा चरित्र	≡)
सुमनाञ्जलि	≠)	सुरस तरंगिनी	-)
संगीत थियेटर	।)	सन्त समागम	≠)
हास बिलास	।)	ऋतु संहार संस्कृत	॥)
हास्य मंजरी	॥)	हिंड़ोला	≡)
होरी गुलाल	।≠)	होली	≡)

किस्सा कहानि

अकबर बीरबल बिनोद	।≠)	अचंभो का बच्चा	≠)
अफीमची का किस्सा	≠)	अलादीन	≢)
अलीबाबा	-)॥	एकरात में बीस खून	≠)
कलिजुगवा	-)॥	कलियुग का बुखार	=)
गुलबकावली	।=)	गुल सनोवर	।)
गुलाब उपन्यास	-)	चहारदरवेश	।।।)
चार दोस्तों की गपशप	।।।)	चार दोस्तों की हँसी दिल्लगी	-)
चित्त बिनाद	=)	चम्पा चमेली	-)

छबीली भठियारी	।)	जान न पहिचान बड़ी बीबी सलाम	-)
त्रिया चरित्र	=)	नवीन चांदतारा	॥।)
तोता मैना	॥।)	पुरानी ढढ्ढो	≈)
दिल्लगी दर्पण	।।≶)	बकावली सुमन	।-)
फिसाना अजायब	।≈)	लतीफे बीरबल	-)
रात का सपना	-)	रात की मुलाकात	)॥
वैताल पचीसी	।=)	सवायार	॥≈)
शेख चिल्ली	-)	सारंगा सदावृच्छ	॥)
साढेतीन यार	॥।≈)	सिंधवाद जहाजी	।≈
सिंहासन बत्तीसी	॥)	हंसी दिल्लगी	-)
हातिमताई	॥।)		

भिन्न भिन्न

अगरवालों की उत्पत्ति	=)	अनंत ज्वाला	॥)
अपना सुधार	॥=)	अपने हितैषी बनो	।≈)
अपूर्वरत्न	।)	अवतार मीमांसा	॥।)
अविभक्त कुल	।)	अमर कोष	॥)
अमरीका दिग दर्शन	॥।)	अमरीका पथ प्रदर्शक	।≶)
अमरीका भ्रमण	॥)	अमरीका के विद्यार्थी	।)
अमरीका का व्यवसाय	।≈)	खजाना रोजगार	१)
अंग्रेजी शिक्षक	॥।)	हिन्दी इंगलिश वोकाबुलरी	॥)
आकृति निदान	१।)	आत्म रहस्य	≶)
आत्म विद्या	२)	श्रीआचार्य चरितम्	१)
आतशक का इलाज	।)	आत्म विजय	॥।)
आदर्श सम्राट	।≈)	आरती विश्वनाथ जी की	-)
आराध्य शोकांजली	।)	आरम्भ गणित	-)
आरोग्य साधन	॥)	आरोग्य प्रदीप	॥।≶)

आदर्श हिन्दू	१)	इटलीकेविधायकमहात्मागण	२।)
आलू	।)	इंगलिशटीचर	१)
इंगलिश दर्पण	॥)	कपास की खेती	॥)
उद्यान	।॥≈) ॥) ≈)	उद्योगी पुरुष	।≈)
उन्नति	॥=)	अंग्रेजी हिन्दी शिक्षक	१॥)
कपास और भारतवर्ष	≈)	कानून दर्पण	१।)
कापिल सूत्रम	~)	कालिदास और शेक्सपियर	२)
किसानों के अधिकार	।)॥	किसानों पर अत्याचार	।~)
कृषिबक	।≈)	कृषिसार	१)
कृषिसिद्धांत	।~)	कृषक क्रंदन	≡)
कृत्रिम काष्ठ	≈)	कैलाश पति तंत्र	॥)
कोकशास्त्र	१)	खद्दर की आत्मकथा	॥)
खाद का उपयोग	१)	गद्यकाव्य मीमांसा	।≈)
खाद	१)	जीवन के आनन्द	१)
खेती गन्ना	॥)	खाद और उनका व्यवहार	।)
गीता की भूमिका	॥)	गुप्तमोहनी तंत्र	॥)
गुटका	१॥)	शासन पद्धति	१)
गुरुदेव के साथ यात्रा	।≈)	गोबर गणेश संहिता	॥~)
गोपालनशिक्षा	॥), ।≈)	गोलमाल	१।≈)
चरित्र साधन	≈)	चरित्र गठन या मनोबल	≡)
चरित चिन्तन	१।)	चैतन्य कला	।)
चेतसिंह अथवा काशी का विद्रोह	।≈)	चौदह विद्या निधान	१।)
		क्षयरोग	~)
चम्पारन की जाँच	।~)	क्षेत्र कौशल	≈)
चम्पा	॥)	जर्मन जासूस की राम कहानी	।)
जातीयता	।≈)	जीवन और श्रम	१॥)
जीवन मुक्ति	॥≈)	जीवन के महत्त्व पूर्ण प्रश्नों पर	

जीवनसुधार पर सरल विचार ≡)
ज्योतिष शास्त्र ॥)
ज्योतिर्विज्ञान २)
म० टालस्टाय के लेख ।-)
ताप ।=)
डा० केशव देव शास्त्री ।॥)
तपस्वी अरविन्द के पत्र ।)
तन मन और परिस्थितियों
का नेता मनुष्य ।)
तिलक दर्शन २॥)
दृगंक चन्द्रिका ॥)
दिव्य जीवन ॥।)
दृष्टान्त सागर २)
दुनिया =)
देश उन्नति का द्वार ।)
देसायन संग्रह ॥)
धर्म और विज्ञान २)
नवरत्न १॥) १)
नीबू नारंगी =)
पदार्थ संख्या कोष ।=)
पंच भूत १॥)
प्रबंध पूर्णिमा १)
प्रैक्टिकल फोटोग्राफ १॥)
प्रबन्ध पारिजात ॥-)
प्राचीन पंडित और कवि ॥=)
प्लानचेट गीतावली ॥)
पुनरुत्थान ॥=)

प्रकाश ॥-)
दुर्गा सप्तशती ॥=)
जुजुत्सू व जापानी कुश्ती =)
टेलीग्राफ टीचर ॥)
टालस्टाय के सिद्धान्त १।)
अरविन्द मन्दिर में ॥।)
आत्मविद्या २॥)
तन्दुरुस्ती और ताकत =)
तरंगिणी १)
तुलसी साहित्य ॥)
त्रैभाषिक व्याकरण शब्दावली ।=)
दियासलाई और फास फोरस =)
दुग्ध चिकित्सा =)
देश की दशा -)॥
धर्म और जातीयता ।॥)
राज नीति विज्ञान १।=)
धान की खेती ≡)
नियोग मीमांसा १॥)
नैतिक जीवन १)
पत्र सम्पादन कला १)
फिजी में प्रतिज्ञाबद्ध कुली प्रथा १)
प्रेम पूर्णिमा २)
पंचरत्न १।)
प्रबन्ध पुष्पाञ्जलि ॥)
प्रातःकाल और सायंकाल
के विचार ।=)
प्रेम ॥) ।≡)

मिलने का पता—लहरी बुकडिपो, लहरी प्रेस, बनारस सिटी।

फोटो ग्राफी शिक्षा	।-)	कृत्वकला	१।)
बनारस के व्यवसायी	॥≈)	बम्ब के गोले	॥)
विक्रम कला	॥)		
बालमीकि रामायण	१।)	स्वामी राम तीर्थ के सदुपदेश	।)
व्यापार शिक्षा	॥।)	व्यापारिक कोष	२।)
विवेक बचनावली	≡)	विवाह पद्धति ॥।)	≈)
भगवान महावीर	४॥)	जगत व्यापारिक पदार्थ कोष	५)
भाग्य निर्माण	१॥।)	भाव चित्रावली	४)
भव्य भारत	।-)	भरत चरितामृत	।≈)
भाई बन्धुओं के झगड़े	।≈)	भाग्य निर्माण	१।≈)
भारत में कृषि सुधार	१॥।)	भारत में दुर्भिक्ष	१॥।)
भारतीय जेल	॥)	भिखारी से भगवान	१) १॥)
भ्रातृस्नेह	-)	भारत की ऋतुचर्या	≈)
भूकंप	१≈)	मनुष्य के अधिकार	।≡)
मानव जीवन	१॥)	महा भारत	३)
मानसिक शक्ति	।)	मानस कोष	॥≈)
मितव्ययता	॥।≡)	मूंग फली की खेती	-)
मूर्ति पूजा	॥)	मेजिनी के लेख	२)
मैं निरोग हूँ या रोगी	।)	यमद्वितीया कथा	-)॥
यंग इंडिया	४॥)	रघुवंश सार	॥≈)
युगल कुसुम	≈)	युद्ध की कहानियाँ	।)
युरोपकेप्रसिद्ध शिक्षासुधारक	१॥≈)	राम बादशाह के छः हुक्मनामे	१।)
योरोप में बुद्धि स्वतंत्र्य	१)	योग दर्शन	१)
रंगीला चर्खा	।-)	लेखन कला	॥-)
रामायण भाषा टीका	५)	रामायण मूल	२॥)
रागिणी	४।)	शशाँक	३)
राष्ट्रीय संदेश	।≈)	राष्ट्र भाषा हिन्दी	।)

मिलने का पता—लहरी बुकडिपो, लहरी प्रेस, बनारस सिटी

राजनीति	।)	राजनीति प्रवेशिका	।≈)
राज योग	।≈)	राज सचा	।≈)
राज पथ का पथिक	।-)	राज भक्ति	≈)
रजा शिक्षा	१।)	तम की उपासना	।)
रामायण रहस्य	।।।)	रामोपदेश माला	≡)
रालट ऐक्ट	२)	रावण राज्य	२।।।)
रूस का पुनर्जन्म	।।।≈)	रोगी की सेवा	।)
लंदन के पत्र	≡)।।	लंदन यात्रा	।।।)
वस्त्र भूषण	१)	बहिष्कृत भारत	।)
व्यय	।।)	बर्नियर की भारत यात्रा	।२)
व्यावहारिक विज्ञान	१।≈)	वाल्य विवाह दूषक	≈)
विचार दर्शन	१।)	बिधवा बिवाह मीमांसा	२)
वेदान्त का विजय मंत्र	-)।।	वेश्या स्तोत	≡)
वैदिक जीवन	।।)	भागवत गीता	।-)
वैज्ञानिक अद्वैत वाद	१।।।≈)	भक्तियोग	१।।।)
योगी अरविन्द की दिव्य वाणी	।।।)	असहमत संगम	१)
हिन्दी ऋग्वेद भाष्य	।।)	भाषा ऋजु पाठ	।-)
ऋतु चर्या	१)	रूस का पंचायती राज्य	।।।)
शास्त्री जी के दो व्याख्यान	।।≈)		
शिल्प मार्तंड	।।)	शिक्षित और किसान	।।≈)
शिक्षितों का स्वास्थ्य व्यतिक्रम	।)	सचा जादू	१)
सत दर्शन	१)	सदाचार सोपान	।)
सदाचार नीति	१)	स्थानिक स्वराज्य	-)।।
सफल जीवन	।।)	सफलता की कुञ्जी	।≈) ।)
सफल गृहस्थ	।।।)	समय दर्शन	१-)
समाज दर्शन	१।)	सरस्वती विधान	≈)
सन्तति शास्त्र	१।।)	हमारे शरीर की रचना	६।।।)

मिलने का पता—लहरी बुकडिपो, लहरी प्रेस, बनारस सिटी ।

स्वर्ग की सड़क	१॥।)	स्वदेशाभिमान	।=)
स्वोदेशी पर महात्मा गांधी	॥)	स्वदेशी और स्वराज्य	।≈)
स्वेदश	१)	सुख तथा सफलता	।-)
स्वदेशी धर्म	।)	स्वदेशी आन्दोलन	-)॥
स्वराज्य विचार	≡)	स्वराज्य की धूम	॥)
स्वदेशी की जय	-)॥	स्वास्थ्य साधन	≈)
स्वाधीन भारत	॥)	हिन्दुस्तानी स्वस्थ्य रक्षा	।)
साबुन सराजी	१)	साम्यवाद	।≈)
साहित्या लोचन	२) ३)	साहित्य सुषमा	॥)
साहित्य बिहार	।॥)	साहित्य नवनीत	।॥)
सितार शिक्षक	।≈)	सिद्ध करामात	१।)
सुख तथा सफलता	≡)	सुखकी प्राप्ति का मार्ग	।≈)
सुखी गृहस्थ	।॥)	सुखी रहने का उपाय	≡)
सुगम चिकित्सा	≈)	सुजाक का इलाज	-)॥
सक्ति मुक्तावली	॥)	सेवाधर्म	१।।)
संतोष	॥-)	संसार सुख साधन	।-)
संसार विजयी	≡)	हनुमान ज्योतिष	।)
हमारी कारावास कहानी	॥)	हमारा भीषण ह्रास	।)
हमारी प्राचीन ज्योतिष	।)	हारमोनियम मास्टर	१)
हारमोनियम शिक्षा	।॥)	हारमोनियम टीचर	॥)
हृदय लहरी	॥)	हृदय तरंग	।)
हिन्द स्वराज्य	।-)	हिन्दी भाषा के सामयिक पत्र	।)
हिन्दी व्याकरण	।) ॥≈)	हिन्दी का संदेश	-)
हिन्दू जाति का स्वातंत्र्यप्रेम	।॥≡)	हिन्दुस्तान का राष्ट्रीय झंडा	१)
हिन्दी साहित्य विमर्ष	१।)	हिन्दी पद्य रचना	।)
हिन्दुओं की पर जहरीली छुरी	-)	हिन्दू विवाह	॥≈)